पोस्टल रजि.नं.यूए-नैनीताल-356-2021-2023

BLM Academy

Affiliated to C.B.S.E. New Delhi, C.B.S.E. Affiliation No.: 3530343
ISO 9001:2015 (QMS) Certified School

Wish You all a Very Happy New Year

"The Best Way To Predict Your Future Is To Create It With BLM Academy."

Vision -
To prepare the children empowered with Indian ethical and spiritual values to face the global challenges.

Mission-
To produce enriched and enlightened human resource for the country.

Pillars -
SATYA, PURUSHARTH & PARAMARTH

Goal-
ब्रह्म तद् लक्ष्यम्

Admission Open
For The Academic Session 2025-26
(Classes Nursery to IX & XI)

LIMITED SEATS
APPLY NOW

Streams: Science, Commerce & Humanities

Celebrate The Gift of Life

+91 7055515681
+91 7055515683
www.blmacademy.com

Padampur Devaliya, Gora Parao, Haldwani (Nainital), Uttarakhand

blma.principal@gmail.com

प्रणवो धनुः शरो हि आत्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ।। (मुण्डक उपनिषद)

अगस्त 2025

उत्तरांचल दीप पत्रिका

यशस्वी पत्रकार वेदप्रकाश गुप्ता को समर्पित

मोदी ने कांग्रेस को धोया ₹:40

भगवा की जीत

मालेगांव ब्लास्ट के आरोपी साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर, कर्नल प्रसाद पुरोहित, मेजर रमेश उपाध्याय, समीर कुलकर्णी, अजय राहिरकर, सुधाकर चतुर्वेदी और सुधाकर द्विवेदी को कोर्ट ने बरी कर दिया, हिंदूवादी संगठन इसे सत्य की जीत बता रहे हैं तो हिंदू विरोधी इसे फैसला बता रहे हैं, उनका दावा है कि ये न्याय नहीं है।

ई-मेल: uttranchaldeepatrika@gmail.com

Web: uttaranchaldeep.com

मासिक **उत्तरांचल दीप** पत्रिका

वर्ष:8, अंक 4, अगस्त 2025

संस्थापक संपादक
स्व.वेदप्रकाश गुप्ता
प्रधान संपादक
साकेत अग्रवाल
संपादक
श्रीमती आदेश अग्रवाल
मुख्य कार्यकारी संपादक
केके चौहान
मुख्य उप संपादक
उदयभान सिंह
मार्केटिंग हेड
तारु तिवारी
प्रबंधक
दीपक तिवारी
वरिष्ठ संवाददाता
रवि दुर्गापाल

उत्तरांचल दीप ब्यूरो
दिल्ली : शालिनी चौहान
लखनऊ : पारस अमरोही
रुद्रप्रयाग : हिमांशु पुरोहित
नैनीताल : अफजल फौजी
अल्मोड़ा : कमल कपूर
पिथौरागढ़ : ललित जोशी
बागेश्वर : नरेंद्र बिष्ट
चंपावत : मनोज राय
बरेली : अनुज सक्सेना
मुरादाबाद : आशेंद्र कुमार अग्रवाल
डोईवाला : चंद्रमोहन कोठियाल
किच्छा : राजकुमार राज
रामनगर : एचसी भट्ट
थत्यूड़ : मुकेश रावत
रुद्रपुर : मुकेश गुप्ता
बाजपुर : इंद्रजीत सिंह
ग्राफिक्स डिजाइन: देवेंद्र सिंह बिष्ट
सभी पद अवैतनिक एवं परिवर्तनीय

मुख्यालय
हल्द्वानी: चंद्रकांता हाउस, जजी के सामने
नैनीताल रोड, हल्द्वानी (उत्तराखंड)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्रीमती आदेश अग्रवाल द्वारा उत्तरांचल दीप, चंद्रकांता हाउस, जजी के सामने नैनीताल रोड हल्द्वानी से मुद्रित व प्रकाशित।
आएनआई नंबर: UTTHIN/2018/77440
पोस्टल रजि.नं.यूए-नैनीतील-356-2021-2023

उत्तरांचल दीप पत्रिका में प्रकाशित लेख, पत्र व अन्य कालम में लेखकों के विचार होते हैं, उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
समस्त विवाद हल्द्वानी न्यायालय के अधीन होंगे।

www.uttaranchaldeep.com
uttranchaldeepatrika@gmail.com
+91 8881788066 @uttranchaldeep

अंदर

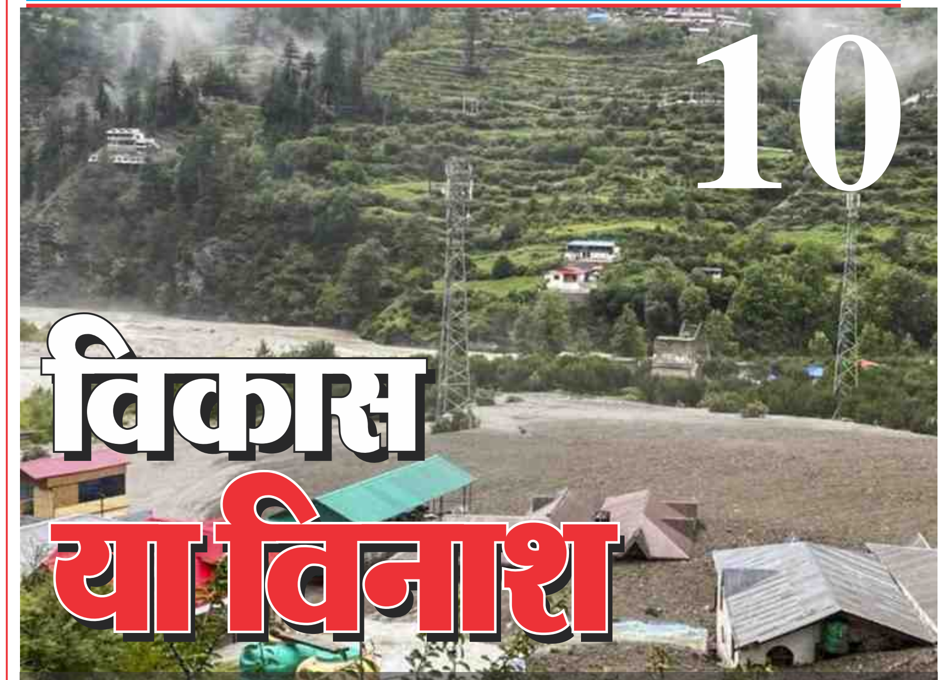

10

विकास या विनाश

वैज्ञानिको का मानना है कि विकास की अंधाधुंध होड़, अनियोजित विकास सिर्फ पहाड़ी क्षेत्र नहीं बल्कि पूरे देश में विनाश की पटकथा लिख रहा है, वैज्ञानिक मानते है कि उत्तराखंड का आपदा से चोली दामन का साथ रहा है, क्योंकि हर साल आपदा कहर बनकर जान माल को भारी क्षति पहुंचाती है।

12
प्रतिशोध
दहशतगर्दों का धर्म बताकर मारे
पहलगाम हमले के पीड़ितों के परिवार चाहते थे कि तीनों आतंकियों के सिर में गोली मारी जाए, ऑपरेशन महादेव में ...

16
बिहार
मुर्दे भी डलते थे बिहार में वोट?
चुनाव आयोग बिहार की मतदाता सूची से 65 लाख से अधिक मतदाताओं का नाम काट देगा...

14
साहस
मोदी के रुतबे से ट्रंप बोखलाए
मॉर्निंग कंसल्ट के सर्वे में शामिल 22 देशों के वैश्विक नेताओं में पीएम नरेंद्र मोदी सबसे आगे हैं, यानी जब दुनिया के बड़े नेता जनता का ...

18
उत्तराखंड
देश भर में चले ऑपरेशन कालनेमि
पुष्कर सिंह धामी साफ कहा कि 'ऑपरेशन कालनेमि' केवल सुरक्षा अभियान नहीं, बल्कि आस्था, सनातन संस्कृति और ...

साकेत अग्रवाल

अब दबाव में नहीं आता भारत

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पता नहीं कौन सी दुनिया में जी रहे हैं, उन्हें लगता है कि भारत पर टैरिफ लगाकर वो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर दबाव बना लेंगे। लेकिन यह नया भारत है जो न तो किसी के प्रेशर में आता है और न ही दबाव में आता है। ऐसा इसलिए क्योंकि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने किसी भी अंतरराष्ट्रीय दवाब में आना बंद कर दिया है। लेकिन अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जब से अमेरिकी बिजनेस इंटेलिजेंस कंपनी मॉर्निंग कंसल्ट की रिपोर्ट में लोकतांत्रिक 20 वैश्विक नेताओं की सूची में भारत के पीएम नरेंद्र मोदी को टॉप पर और खुद 8वें स्थान पर देखा है तब से भारत के साथ अजीब व्यवहार कर रहे हैं। भारत-पाकिस्तान संघर्ष के दौरान सीजफायर का श्रेय लेने की कोशिश की, लेकिन भारत ने साफ कर दिया कि सीजफायर में अमेरिकी राष्ट्रपति क्या दुनिया के किसी भी नेता की कोई भूमिका नहीं है। सीजफायर पाकिस्तान के डीजीएमओ की तरफ से मांगा गया और भारत के डीजीएमओ ने मंजूर किया, यानी दोनों देशों की सैन्य अधिकारियों की बातचीत के बाद सीजफायर हुआ। फिर भी ट्रंप ने सीजफायर का श्रेय लेने की पूरी कोशिश की। लेकिन भारत ने श्रेय नहीं लेने दिया। जून में कनाडा में जी-7 समिट था। अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप और भारत के पीएम नरेंद्र मोदी की कनाडा में मुलाकात होनी थी, लेकिन मोदी के कनाडा पहुंचने से पहले ही ट्रंप जी-7 समिट छोड़ कर वॉशिंगटन लौट गए। अमेरिका लौट कर ट्रंप ने पीएम मोदी को फोन किया और कहा कि अब कनाडा आए ही हैं तो वॉशिंगटन होकर जाइए। पीएम मोदी ने निमंत्रण स्वीकारा और अपनी व्यस्तता बताते हुए कनाडा से वॉशिंगटन नहीं बल्कि सीधे भारत जाने का अपना प्लान बता दिया था। पीएम नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता और सुपर पावर का निमंत्रण ठुकराने से भी ट्रंप असहज हो सकते हैं। क्योंकि पाकिस्तान जैसे देश तो व्हाइट हाउस के निमंत्रण के लिए बेताब ही नहीं रहते बल्कि इंतजार करते हैं। जून में पीएम मोदी ने ट्रंप का न्यौता ठुकराया तो ट्रंप ने पाकिस्तान के फील्ड मार्शल आसीम मुनीर को लंच पर व्हाइट हाउस बुला लिया। आम तौर पर किसी भी राष्ट्र का राष्ट्राध्यक्ष अपने समकक्ष को ही निमंत्रण देता है, लेकिन पाकिस्तान के नौकरशाह आसीम मुनीर को बुलाने के पीछे भी ट्रंप की दबाव वाली ही राजनीति रही होगी। अमेरिका जिस तरह पाकिस्तान को अपनी अंगुली पर नचाता है वैसे ही भारत को भी नचाना चाहता है। इसलिए अमेरिका चाहता है कि भारत रूस से तेल न खरीदे। जबकि अमेरिका खुद रूस से यूरेनियम और तेल खरीद रहा है। रूस चूंकि तेल का सबसे बड़ा उत्पादक देश है और यूरोप को आपूर्ति करता रहा है, लेकिन यूक्रेन युद्ध के बाद रूस पर तमाम प्रतिबंध लगाए जाने के बाद यूरोप, रूस का तेल भारत के माध्यम से खरीद रहा है। यानी अमेरिका खुद रूस पर प्रतिबंध लगाने के बाद व्यापार कर रहा है और भारत से कह रहा है कि व्यापार बंद करे। अमेरिका का मानना है कि भारत तेल खरीद कर रूस की आर्थिक मदद कर रहा है। इससे आसानी से समझा जा सकता है कि भारत और अमेरिका के बीच संबंध फिलहाल अच्छे नहीं हैं। शायद इसलिए भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अगस्त के आखिर में चीन की यात्रा पर जा सकते हैं। पीएम नरेंद्र मोदी चीन में होने वाले शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) सम्मेलन में भाग ले सकते हैं। गलवान में झड़प के बाद से भारत और चीन के बीच लंबे समय से जारी तनाव के बाद अब हालात धीरे-धीरे सामान्य हो रहे हैं। मानसरोवर यात्रा को भी चीन ने स्वीकृति दे दी है। ऐसे में पीएम मोदी का ये चीन दौरा दोनों देशों के रिश्ते सुधारने की प्रक्रिया में एक और बड़ा कदम साबित हो सकता है। पीएम मोदी की इस यात्रा से भारत-चीन के रिश्तों में तो सुधार होगा ही साथ ही अमेरिका को भी संदेश जाएगा कि भारत अब किसी तरह के अंतरराष्ट्रीय दबाव में आने वाला नहीं है।

एससीओ सम्मेलन में भारत, चीन और रूस यदि एक साथ आते हैं तो अमेरिका के लिए वैश्विक स्तर पर बड़ी समस्या खड़ी कर सकते हैं। सीएनबीसी सी रिपोर्ट के अनुसार दुनिया के तीन सबसे बड़ी ताकतें यदि एक साथ हों यानी तकनीक, आर्मी और पैसा सब साझा करें तो क्या अमेरिका और यूरोप की पकड़ दुनिया पर ढ़ीली नहीं पड़ जाएगी? क्या डालर का राज खत्म नहीं हो जाएगा? क्या पूरी दुनिया की सत्ता का संतुलन ही नहीं बदल जाएगा? ये ऐसे सवाल है जिनका जवाब पूरी दुनिया खोजेगी। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रस्तावित चीन दौरे के बाद कई तरह की बातें दुनिया में होने लगी हैं। अगर भारत, रूस व चीन एक साथ आ जाएं तो दुनिया की इकोनामी पर क्या असर होगा? हालांकि अभी ये बहुत दूर की कौड़ी है। फिर भी ऐसा होता है तो दुनिया का पावर बैलेंस बदल सकता है। अभी तक अमेरिका, यूरोप व पश्चिमी देशों का दुनिया पर दबदबा रहा है। अगर भारत, रूस व चीन एक साथ आते हैं तो यह अमेरिका व यूरोप के वर्चस्व को टक्कर देंगे और इसे एशियन पावर हाउस के रूप में देखा जाएगा। इससे डॉलरह मोनोपॉली को भी चुनौती मिलेगी। क्योंकि अभी तक ये तीनों देश लंबे समय से अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करने की कोशिश ही कर रहे हैं। चीन युआन और भारत रुपये में ट्रेड को बढ़ावा दे रहा है। ऐसे में तीनों साथ आकर नई करेंसी या पेमेंट सिस्टम बना सकते हैं, जो डॉलर को चुनौती देगा। ये तीनों देश एक साथ आते हैं तो नई ट्रेड ब्लॉक या इकनॉमिक फ्रेमवर्क बना सकते हैं। इससे रॉ मटेरियल, मैन्युफैक्चरिंग और टैक्नोलॉजी का साझा इस्तेमाल हो सकता है। लिहाजा पूरी दुनिया की इकोनॉमी को बदल सकते हैं। डिफेंस और टेक्नोलॉजी में साझा ताकत रूस की सैन्य तकनीक चीन की मैन्युफैक्चरिंग ताकत और भारत के टैलेंट पूल आईटी पावर मिलकर एक नया सैन्य और तकनीकी ब्लॉक खड़ा कर सकते हैं। जो अमेरिका और नॉटो के लिए एक काउंटर पोल बन जाएगा। यही अमेरिका के राष्ट्रपति की बोखलाहट की असली वजह है।

रूस में बनी कैंसर की वैक्सीन

रूस के स्वास्थ्य मंत्रालय के रेडियोलॉजी मेडिकल रिसर्च सेंटर ने जानकारी साझा की है, कि यह वैक्सीन अगले साल से रूस के नागरिकों को मुफ्त में उपलब्ध कराई जाएगी, वैक्सीन एमआरएनए टेक्नोलॉजी पर आधारित है, जो कैंसर के खिलाफ अपनी तरह की पहली वैक्सीन है।

उत्तरांचल दीप डेस्क

कैंसर दुनिया की सबसे खतरनाक बीमारियों में से एक है। इसलिए कैंसर जैसी घातक और जानलेवा बीमारी का नाम सुनते ही लोगों में डर बैठ जाता है। कैंसर का नाम सुनकर पीड़ित ही नहीं, बल्कि पूरा परिवार टूट जाता है। इसकी सबसे बड़ी वजह महंगा इलाज और कोई प्रमाणित दवा का न होना है। मगर अब कैंसर के खिलाफ एक बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। कैंसर मरीजों की जान बचाने के लिए वैक्सीन बन गई है। यह कमाल तीन साल से यूक्रेन युद्ध में उलझे रूस ने किया है। खास बात ये है कि रूस अपने देश के कैंसर रोगियों को मुफ्त में वैक्सीन देगा। इस वैक्सीन का उपयोग कैंसर के मरीजों के इलाज के लिए किया जाएगा। इसे सदी की सबसे बड़ी खोज के रूप में देखा जा रहा है। रूस के स्वास्थ्य मंत्रालय के रेडियोलॉजी मेडिकल रिसर्च सेंटर ने इस उपलब्धि की जानकारी साझा की है। यह वैक्सीन एमआरएनए टेक्नोलॉजी पर आधारित है, जो कैंसर के खिलाफ अपनी तरह की पहली वैक्सीन है। एमआरएनए वही तकनीक है, जिसने कोरोना वैक्सीन को मुमकिन बनाया था। रूसी अधिकारियों का कहना है कि इस वैक्सीन को कई रिसर्च सेंटर्स की मदद से विकसित किया गया है और 2026 की शुरुआत तक इस वैक्सीन को लॉन्च करने की हमारी योजना है। फिलहाल ये वैक्सीन कैंसर के मरीजों के इलाज के लिए ही इस्तेमाल की जाएगी। वैक्सीन के क्लिनिकल ट्रायल से पता चला है कि यह ट्यूमर के विकास को रोकने में मदद करेगी। इससे पहले इसी साल की शुरुआत में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा था कि रूस कैंसर की वैक्सीन बनाने के बेहद करीब है।

क्या एमआरएनए टेक्नोलॉजी

एमआरएनए वैक्सीन या मैसेंजर-एमआरएनए, इंसानों के जेनेटिक कोड का एक छोटा सा हिस्सा है, जो हमारी सेल्स (कोशिकाओं) में प्रोटीन बनाती है। इसे आसान भाषा में ऐसे भी समझ सकते हैं कि जब हमारे शरीर पर कोई वायरस या बैक्टीरिया हमला करता है तो एमआरएनए टेक्नोलॉजी हमारी सेल्स को उस वायरस या बैक्टीरिया से लड़ने के लिए प्रोटीन बनाने का मैसेज भेजती है। इससे हमारे इम्यून सिस्टम को जो जरूरी प्रोटीन चाहिए, वो मिल जाता है और हमारे शरीर में एंटीबॉडी बनने लगती हैं। इसका सबसे बड़ा फायदा ये है कि इस टेक्नोलॉजी से कन्वेंशनल वैक्सीन के मुकाबले ज्यादा जल्दी वैक्सीन बन जाती है। इसके साथ ही इससे शरीर की इम्यूनिटी भी मजबूत होती है। एमआरएनए टेक्नोलॉजी पर आधारित यह कैंसर की पहली वैक्सीन है। कैंसर होने से पहले नहीं बल्कि कैंसर होने के बाद यह वैक्सीन दी जाएगी। हालांकि अभी तक ये तय नहीं हुआ है कि इस वैक्सीन का नाम क्या होगा? इसके साथ ही ये भी क्लियर नहीं है कि वैक्सीन किस कैंसर के इलाज के लिए बनाई गई है? साथ ही ये कितनी प्रभावी है या रूस इसे किस तरह लागू करने की प्लानिंग कर रहा है? इसके बारे में अभी कोई पुख्ता जानकारी नहीं है। यूके में भी फाइजर और बायोएनटेक की कोरोना वैक्सीन मैसेंजर-आरएनए यानी एमआरएनए बेस्ड टेक्नोलॉजी पर डेवलप की गई थी। ये पहली बार था जब एमआरएनए टेक्नोलॉजी बेस्ड वैक्सीन दुनिया में बननी शुरू हुई। एमआरएनए का फुल फॉर्म मैसेंजर-आरएन है। जो इंसानों के जेनेटिक कोड का एक छोटा सा हिस्सा है।

रूसी न्यूज एजेंसी टास के मुताबिक पहले माना जा रहा था कि यह वैक्सीन 2025 में लॉन्च हो जाएगी। 3 अगस्त को सरकारी समाचार एजेंसी आरटी की रिपोर्ट में कहा गया कि रूस अगले कुछ महीनों में कैंसर के खिलाफ नए टीके का मानव परीक्षण शुरू करने वाला है। रूसी स्वास्थ्य मंत्रालय की मंजूरी के बाद अब ये परीक्षण मॉस्को स्थित हर्टसन रिसर्च इंस्टीट्यूट और ब्लोखिन कैंसर सेंटर में किए जाएंगे, जबकि गामालेया सेंटर वैक्सीन का उत्पादन करेगा। गामालेया रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ एपिडेमियोलॉजी एंड माइक्रोबायोलॉजी के निदेशक अलेक्जेंडर गिंट्सबर्ग ने कहा कि प्रत्येक टीके की खुराक व्यक्तिगत होगी और मेलेनोमा के रोगियों के एक समूह को दी जाएगी। नियोएंटीजन पर आधारित एमआरएनए दवा विशेष रूप से प्रत्येक रोगी के लिए उनके विशिष्ट ट्यूमर डेटा का उपयोग करके बनाई गई है। रूस के स्वास्थ्य मंत्रालय के रेडियोलॉजी मेडिकल रिसर्च सेंटर के डायरेक्टर एंड्री काप्रिन ने कहा है कि रूस ने कैंसर के खिलाफ अपनी खुद की एमआरएनए वैक्सीन विकसित की है। वहीं गामांटा नेशनल रिसर्च सेंटर फॉर एपिडेमियोलॉजी एंड माइक्रोबायोलॉजी के डायरेक्टर एलेग्जेंडर गिंट्सबर्ग की मानें तो कैंसर वैक्सीन के प्री-क्लिनिकल ट्रायल में यह बात सामने आई है कि यह कैंसर के विकास और उसके फैलाव को रोक सकती है।

रूस वैक्सीन बनाने के लिए इसलिए भी प्रयास कर रहा था क्योंकि रूस को कैंसर से कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। दुनिया के बाकी हिस्सों की तरह ही रूस में भी कैंसर की दर तेजी से बढ़ रही है। यहां कैंसर मृत्यु का दूसरा प्रमुख कारण है, जिससे हर साल लगभग 3 लाख लोग मारे जाते हैं। 2022 में रूस में हर एक लाख लोगों पर लगभग 192 मौतों के लिए कैंसर जिम्मेदार था। यहां 2022 में 6.35 लाख से ज्यादा कैंसर के मामले दर्ज किए गए थे। रूस में कैंसर के एक तिहाई से ज्यादा मामलों का डायगनॉसिस आखिरी फेज में हो पाता है। ताजा रिपोर्टों के अनुसार रूस में अभी लगभग 4 मिलियन कैंसर रोगी हैं और हर साल 625,000 नए रोगी सामने आते हैं।

सुर्खियां

ट्रंप झूठ क्यों बोलते हैं

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप दुनिया के वो नेता हैं जो सबसे ज्यादा के झूठ बोलते हैं इसलिए वैश्विक स्तर पर उनकी प्रतिष्ठा को बड़ा डेंट लगा है। ऐसे में सवाल ये भी क्या झूठ बोलना ट्रंप की पॉलिटिकल स्ट्रैटजी बन गया है? क्योंकि भारत-पाकिस्तान संघर्ष का ही उदाहरण ले लीजिए. डोनाल्ड ट्रंप ने भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव को लेकर पहले दावा किया था कि उन्होंने दोनों देशों के बीच सीजफायर करा दिया है। मगर कुछ ही दिनों बाद वो इससे पलट गए थे। लिहाजा हर किसी के जहन में सवाल आता है कि आखिर ट्रंप दिनदहाड़े ऐसा झूठ क्यों बोलते हैं? अपने बयान से मुकरने के बाद फिर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कह दिया कि सीजफायर मैंने ही कराया है। क्या ऐसे नेता को विश्वसनीय कहा जा सकता है। हालांकि राजनीति में झूठ बोलना कोई नई बात नहीं है, लेकिन ट्रंप ने इसे एक पैटर्न बना दिया है। वॉशिंगटन पोस्ट की 2024 की रिपोर्ट कहती है कि ट्रंप ने अपने पहले राष्ट्रपति कार्यकाल में 30,573 बार झूठे या भ्रामक दावे किए थे। यानी वो हर दिन औसतन 21 बार झूठ बोलते थे। पहले साल में रोजाना औसत 6 बार झूठ बोलते थे, जो चौथे साल में बढ़कर प्रतिनिद 39 तक पहुंच गया। ट्रंप के कुछ झूठ मामूली और खुद की तारीफ में होते हैं लेकिन कुछ झूठ खतरनाक और लोकतंत्र के लिए जानलेवा साबित हुए। जैसे उनका दावा था कि 2020 का चुनाव चोरी हुआ, जिससे अमेरिका दो हिस्सों में बंट गया था। वैसे यह सच है कि झूठ अक्सर दिलचस्प होता है, हकीकत नहीं। राजनीतिज्ञ जानते हैं कि जनता वो सुनना चाहती है जो उसे अच्छा लगे, सच क्या है उससे फर्क नहीं पड़ता। ट्रंप भी यही करते हैं। वो ऐसे बयान देते हैं जो लोगों की भावनाओं को छू लें, चाहे वो सच हों या नहीं। रिसर्च बताती है कि करीब 50 प्रतिशत रिपब्लिकन वोटर आज भी मानते हैं कि 2020 के राष्ट्रपति चुनाव में धांधली हुई थी, जबकि इसके कोई सबूत नहीं हैं। ऐसे झूठ लोगों को हार की शर्म से बचाते हैं और नेता की छवि विक्टिम वाली बनाते हैं। कुछ लोग झूठ बोलकर खुद अंदर ही अंदर खुश होते हैं, उन्हें अपराधबोध नहीं होता। मनोविज्ञान में इसे ड्यूपिंग डिलाइट कहते हैं। ये ट्रेट अक्सर नार्सिसिस्ट या साइकोपैथ लोगों में पाया जाता है, जिन्हें दूसरों की भावनाओं की कोई परवाह नहीं होती। ट्रंप के हावभाव और उनके चेहरे की मुस्कान कई बार इस थ्योरी को सपोर्ट करती दिखती है। बिग लाई यानी ऐसा बड़ा झूठ, जो सच्चाई को इस तरह तोड़े-मरोड़े कर पेश किया जाए जिससे पब्लिक उस पर यकीन कर लें। ये शब्द सबसे पहले हिटलर ने अपनी किताब 'मीन काम्फ' में इस्तेमाल किया था। इतिहासकार टिमोथी स्नाइडर ने कहा है कि ट्रंप ने भी इसी तकनीक का इस्तेमाल किया। जैसे उनका यह बयान कि 'ओहायो में प्रवासी कुत्ते-बिल्ली खा रहे हैं', ये सिर्फ एक इमेज बनाना था, हकीकत नहीं। जानकार मानते हैं कि ट्रंप के झूठ सिर्फ बयान नहीं बल्कि सोची समझी पॉलिटिकल स्ट्रैटजी हैं। ●

टनकपुर-बागेश्वर रेल लाइन पर सहमति

केंद्र सरकार ने टनकपुर-बागेश्वर रेललाइन परियोजना पर काम शुरु करने के लिए उत्तराखंड सरकार से औपचारिक रूप से सहमति देने को कहा है। राज्य सरकार जल्द इस दिशा में अधिकारिक पत्र केंद्र सरकार को भेजने वाली है। टनकपुर-बागेश्वर रेल लाइन को कुमाऊं क्षेत्र में रेल नेटवर्क विस्तार की दिशा में गेम चेंजर प्रोजेक्ट के रूप में देखा रहा है। करीब 170 किलोमीटर लंबी इस परियोजना के लिए सर्वे का काम पहले ही पूरा हो चुका है। दूसरे चरण में परियोजना पर राज्य सरकार की सहमति की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मुख्य सचिव को इस दिशा में शीघ्र औपचारिकताएं पूरी करते हुए कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। यानी जल्दी ही टनकपुर-बागेश्वर रेल लाइन का धरातल पर उतरने का रास्ता साफ हो जाएगा। केंद्र की मोदी सरकार उत्तराखंड के पहाड़ी जिलों में रेल नेटवर्क विकसित करने पर तेजी से काम कर रही है। ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल लाइन पर युद्ध स्तर पर काम चल रहा है। सामरिक महत्व की इस परियोजना का काम 2026 तक पूरा होने की उम्मीद है। इसी तरह टनकपुर-बागेश्वर रेल लाइन बन जाने के बाद, कर्णप्रयाग-बागेश्वर जैसे दो पर्वतीय शहरों को रेल नेटवर्क से जोड़कर, गढ़वाल-कुमाऊं के बीच रेल संपर्क स्थापित किया जा सकता है। साथ ही प्रदेश सरकार के अनुरोध पर केंद्र सरकार ऋषिकेश-उत्तरकाशी और देहरादून-सहारनपुर रेलवे लाइनों की डीपीआर भी तैयार कर रही है। 81 किलोमीटर लंबी देहरादून-सहारनपुर रेल लाइन शाकुंभरी देवी मंदिर के रास्ते से होकर गुजरेगी। यह रेल लाइन सहारनपुर से देहरादून के हर्रावाला रेलवे स्टेशन तक बिछेगी। इसमें 11 किलोमीटर लंबी सुरंग भी शामिल है। ●

सेलिब्रिटी हारे पंचायत चुनाव

सोशल मीडिया पर भले ही लाखों फॉलोअर्स हों, लेकिन राजनीति में कदम रखने और चुनाव मैदान में उतरने के बाद लाखों फॉलोअर्स के भ्रम में जीने वालों का सच से सामना हो ही जाता है। उत्तराखंड में हाल ही में हुए त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में कई यूट्यूबर ग्राम प्रधान बनने का सपना देख रहे थे, लेकिन इन कथित सेलिब्रिटी को अपनी असलियत हैसियत का पता चल गया। रुद्रप्रयाग के घमतोली गांव की यूट्यूबर दीपा नेगी भी ग्राम प्रधान बनना चाहती थी, वो अपने ब्लॉग और रील के जरिए क्षेत्र की छोटी-छोटी समस्याओं को सरकार तक पहुंचाती थी। रील और वीडियो बनाकर जनसेवा करने वाली यूट्यूबर दीपा नेगी पंचायत चुनाव में 480 वोटों से हार गई। हालांकि चुनाव प्रचार के दौरान युवा, महिला, पुरुष सब साथ थे, लेकिन जब वोटों की गिनती हुई तो सिर्फ 269 वोट मिले। जबकि उनके यूट्यूब पर 'दीपा नेगी पहाड़ी' चैनल पर 1.28 लाख सब्सक्राइबर हैं। सोशल मीडिया पूरी तरह भ्रम की दुनिया है। क्यों की यूट्यूब दीपा नेगी को वोट गांव वालों ने दिया। अब सवाल उठता है कि गांव में उनके कितने फॉलोअर्स घर परिवार, रिश्तेदारों को मिलाकर कुल 269। जबकि उनकी प्रतिद्वंदी कविता के भले ही 1.28 लाख सब्सक्राइबर नहीं है, लाखों फॉलोअर्स नहीं हैं, लेकिन गांव में उनके फॉलोअर्स की संख्या दीपा नेगी से ज्यादा है। इसलिए कविता चुनाव जीती और वह भी बड़े अंतर से। इसलिए कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया की अनजनी दुनिया के मुकाबले गांव, बस्ती, शहर की दुनिया में जीने की कोशिश करें। कविता देवी इसका उदहारण है। यदि दीपा नेगी ने अपने गांव में मेहनत की होती, ग्रामीणों से संबंध होते तो निश्चित ही ग्राम प्रधान चुनी जाती। अब दीपा नेगी कह रही है कि चुनाव में साथ घूमने वालों ने ही धोखा दे दिया। चुनाव में हार के बाद दीपा नेगी ने एक भावुक वीडियो साझा किया जिसमें वो कह रही हैं, मैं हार गई लेकिन आत्मसम्मान नहीं हारा। मेरे साथ बहुत गलत किया गया। दीपा नेगी ने स्वीकारा कि सोशल मीडिया एक भ्रम है, जो केवल चमक दिखाता है, समर्थन नहीं। सोशल मीडिया पर 'दीपा नेगी जिंदाबाद' बोलने वाले लोग असल में खंजर लिए घूम रहे थे। जब वोटिंग हुई, तो वहीं लोग मुझसे कट गए। दीपा का दर्द उस क्षण और बढ़ गया जब उन्होंने अपने परिवार को भी इस राजनीति में घसीटे जाने की बात की।

एक और सेलिब्रेटी यूट्यूब दीप्ति बिष्ट कनालीछीना ब्लॉक की डूंगरी ग्राम पंचायत से ग्राम प्रधान पद की उम्मीदवार थीं। यूट्यूब पर उनके 1.5 लाख सब्सक्राइबर हैं और फेसबुक पर एक लाख से ज्यादा फॉलोअर्स हैं, लेकिन जब बैलेट बॉक्स खुले तो सारी डिजिटल दमक ताश के पत्तों की तरह बिखर गई। उन्हें सिर्फ 55 वोट मिले। जबकि बिना लाखों फॉलोअर्स वाली राधिका देवी ने 79 वोट पाकर जीत गई। छोटे से गांव की यूट्यूबर दीप्ति बिष्ट भी दीपा नेगी की तरह भ्रम की दुनिया में जी रही थी, लेकिन चुनाव में उनका सामना हकीकत से हो गया है। दीप्ति बिष्ट को भी समझ आ जाना चाहिए कि फॉलोअर्स के भरोसे चुनाव नहीं जीते जाते। हल्द्वानी की बच्चीनगर ग्राम पंचायत से भीम सिंह भी चुनाव मैदान में थे। उनके यूट्यूब पर 21,000 सब्सक्राइबर्स और फेसबुक पेज पर 24,000 फॉलोअर्स हैं। लेकिन वोट 955 मिले यानी एक हजार का आकंड़ा भी नहीं छू पाए। जबकि ग्राम प्रधान का चुनाव जीतने वाले हरेंद्र सिंह को 1,534 वोट मिले। सोशल मीडिया में भले ही लाखों और हजारों फॉलोअर्स हैं, लेकिन खुद के गांव और बस्ती में वोट गिनती के ही हैं। यानी वोटर भी जानते हैं कि उनका जनप्रतिनिधि जमीन से जुड़ा होना चाहिए। जिन्हें लाखों फॉलोअर्स और सब्सक्राइबर्स होने से लेकर सेलिब्रिटी होने का घमंड है वो उनके किसी काम नहीं आ सकते हैं।

रेप आरोपी नाबालिग करार

देश की न्यायिक व्यवस्था पर अब यूं ही अंगुली नहीं उठती। शीर्ष अदालतें पीआईएल यानी जनहित याचिकाओं पर तुरंत संज्ञान लेती है, लेकिन रेप जैसे केस में जिस बालिका के साथ 11 वर्ष की आयु में दरिंदगी हुई वो अब 48 साल की हो गई। आरोपी जो रेप करते समय 16 साल का था वो अब 53 साल का हो चुका है। अब सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में अहम फैसला सुनाते हुए कहा कि जब आरोपी ने बालिका से रेप किया था तब वो नाबालिग था। इसलिए शीर्ष अदालत ने माना कि वारदात के समय दोषी नाबालिग था इसलिए सजा के लिए आरोपी को जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड (किशोर न्यायालय बोर्ड) जाना चाहिए। यानी 53 साल के अधेड़ रेप के आरोपी को अब किशोर न्यायालय बोर्ड के सामने पेश होना होगा। किशोर न्यायालय बोर्ड यदि अधेड़ को रेप का दोषी मानता भी है तो वो सिर्फ तीन साल के लिए बाल सुधार गृह भेजा जा सकता है। राजस्थान के अजमेर से संबंधित इस मामले की सुनवाई के बाद सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की बेंच ने यह फैसला दिया है। दरअसल 1993 में अजमेर के किशनगढ़ के अपर सत्र न्यायाधीश ने आरोपी को धारा 376 के तहत बलात्कार का दोषी ठहराया और 5 साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई थी। हालांकि दोषी पहले ही डेढ़ साल जेल में रह चुका था। यानी उसे साढ़े तीन साल की कैद काटनी थी। लेकिन दोषी ने जिला एवं सत्र न्यायालय के आदेश को राजस्थान हाईकोर्ट में चुनौती दी। हाईकोर्ट ने जुलाई 2024 में सजा को बरकरार रखा। इस मामले में दोषी ने जिला न्यायालय और हाईकोर्ट में घटना के समय खुद के नाबालिग होने का दावा नहीं किया था, लेकिन सुप्रीम कोर्ट में पहली बार खुद को घटना के समय नाबालिग होने का दाव किया और दोष सिद्धि एवं सजा के खिलाफ अपील दायर की। लिहाजा सुप्रीम कोर्ट ने माना कि वारदात के वक्त दोषी नाबालिग था। शीर्ष अदालत ने आरोपी को नाबालिग घोषित कर बड़ी राहत तो दी, पर दोष सिद्धि बरकरार रखी। सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के दौरान अजमेर के किशनगढ़ अधिकार क्षेत्र वाले जिला और सत्र न्यायाधीश को उसके नाबालिग होने के दावे की जांच करने का निर्देश दिया था। जज ने जांच और दस्तावेजी साक्ष्यों पर गौर किया और कहा कि अपराध के समय वह वास्तव में नाबालिग था। अपराध के समय यानी 17 नवंबर, 1988 को उसकी उम्र 16 वर्ष 2 महीने और 3 दिन थी। उसकी जन्मतिथि 14 सितंबर, 1972 बताई गई। चीफ जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने कहा कि नाबालिग होने का दावा किसी भी स्तर पर उठाया जा सकता है। पीठ ने राज्य सरकार की इस दलील को खारिज कर दिया कि दोषी को सुप्रीम कोर्ट में नाबालिग होने का दावा करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए थी। रेप के दोषी अपीलकर्ता को 15 सितंबर को किशोर न्यायालय बोर्ड के समक्ष उपस्थित होने का निर्देश दिया गया है। ●

भगवा की जीत

मालेगांव ब्लास्ट के आरोपी साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर, कर्नल प्रसाद पुरोहित, मेजर रमेश उपाध्याय, समीर कुलकर्णी, अजय राहिरकर, सुधाकर चतुर्वेदी और सुधाकर द्विवेदी को कोर्ट ने बरी कर दिया, हिंदूवादी संगठन इसे सत्य की जीत बता रहे हैं तो हिंदू विरोधी इसे फैसला बता रहे हैं, उनका दावा है कि ये न्याय नहीं है।

उदयभान सिंह
लेखक

एनआईए अदालत ने मालेगांव ब्लास्ट केस में साध्वी प्रज्ञा सहित 7 आरोपियों को बरी कर दिया। अदालत ने कहा कि केवल संदेह के आधार पर आरोपियों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। इसलिए सभी आरोपियों साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर, कर्नल प्रसाद पुरोहित, मेजर रमेश उपाध्याय, समीर कुलकर्णी, अजय राहिरकर, सुधाकर चतुर्वेदी और सुधाकर द्विवेदी को बरी किया जा रहा है। भाजपा और हिंदूवादी संगठन इसे सत्य की जीत बता रहे हैं तो हिंदू विरोधी इसे फैसला बता रहे हैं। उनका दावा है कि ये न्याय नहीं है। क्योंकि जिन 6 लोगों की जान मालेगांव ब्लास्ट में गई, 100 से ज्यादा लोग घायल हुए थे, उन्हें न्याय नहीं मिला है। हिंदू विरोधियों से इसी तरह के बयानों की उम्मीद की जा सकती है, लेकिन एनआईए कोर्ट के फैसले के बाद भाजपा ने कांग्रेस के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। दोनों पार्टियों के नेताओं के बीच 'भगवा आतंकवाद' शब्द को लेकर तीखी बयानबाजी शुरू हो गई है। हालांकि 'भगवा आतंकवाद' के खिलाफ जहर उगलने वाले मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कांग्रेस लीडर अशोक गहलौत बेहद संतुलित बयान दिया। जब मीडिया ने उनसे मालेगांव ब्लास्ट में कोर्ट के फैसले के संबंध में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि न हिंदू आतंकवाद होता है और न ही मुस्लिम आतंकवाद। फिर मालेगांव ब्लास्ट के बाद भगवा आतंकवाद शब्द कहां से आया? अब इस पर बहस शुरू हो गई है। लेकिन साध्वी प्रज्ञा ठाकुर ने बिना हिंदू-मुस्लिम नाम लिए साफ कहा कि आतंकवाद का रंग भगवा नहीं बल्कि हरा रंग होता है। इससे कांग्रेस का हिंदू विरोधी चेहरा भी बेनकाब हुआ है। पूर्व भाजपा सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर ने जेल में बिताए अपने दिनों को याद करते हुए कहा कि मुझ पर इतना अत्याचार किया गया जिसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। मीडिया से बातचीत के दौरान साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर ने कहा कि एटीएस अधिकारियों ने मुझे 13 दिनों तक अवैध रूप से कस्टडी रखा। कस्टडी में मुझे अमानवीय यातनाएं दी गई, ऐसे अत्याचार किए गए जिसके लिए शब्द कम पड़ जाएंगे। वैसे शब्दों की भी अपनी मर्यादा होती है। एटीएस चाहती थी कि मैं नरेंद्र मोदी, योगी आदित्यनाथ, मोहन भागवत, सुदर्शन, इंद्रेश, रामजी माधव जैसे लोगों के नाम मालेगांव ब्लास्ट में लूं। वो कहते थे कि इन लोगों के नाम लो तो हम तुम्हें नहीं मारेंगे। उनका मुख्य उद्देश्य मुझे प्रताड़ित करना तो था ही साथ ही भाजपा के बड़े नेताओं को मालेगांव ब्लास्ट में गिरफ्तार करना था। मुझसे असत्य बोलने के लिए कहा जाता था, लेकिन मैंने किसी का नाम नहीं लिया। साध्वी प्रज्ञा का कहना है कि एटीएस अधिकारियों ने कानून के नाम पर गैर कानूनी काम किए हैं। जेल में मुझे मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाता था। साध्वी प्रज्ञा ठाकुर के इस बयान से साफ होता है कि कांग्रेस भारत में हिंदुओं और भाजपा के खिलाफ कितनी खतरनाक साजिश रच रही थी। तुष्टीकरण के लिए कांग्रेस का चरित्र कितना गिर गया था कि वो हिंदुत्व का नेतृत्व करने वाले नेताओं को आतंकवादी घोषित करना चाहती थी। वैसे इसमें नया कुछ नहीं है। आज भी कांग्रेस सांसद व लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी कहते हैं कि वो हिंदुत्व से लड़ रहे हैं। ऐसे में कांग्रेस का समर्थन करने वाले हिंदुओं का खून नहीं खौलता। इसलिए कहा जाता है कि आज भी हिंदुओं में जयचंद यानी गद्दार हैं।

तुष्टीकरण के लिए भगवा आतंकवाद का नैरेटिव

29 सितंबर 2008 में महाराष्ट्र के मालेगांव में हुए धमाके ने न केवल एक हिंसक घटना के रूप में भारतीय समाज को आहत किया, बल्कि एक ऐसा वैचारिक विवाद खड़ा कर दिया था, जिसका उद्देश्य आतंकवाद को हिंदुत्व की पहचान से जोड़ना था। 'भगवा आतंकवाद' और 'हिंदू आतंकवाद' जैसे शब्दों को कांग्रेस ने इसी घटना की आड़ में जन्म दिया। परंतु 17 वर्षों बाद, जब एनआईए की विशेष अदालत ने सभी 7 आरोपियों को पर्याप्त सबूतों के अभाव में बरी किया, तब साफ हुआ कि यह मामला केवल आतंकवाद की जांच तक सीमित नहीं था, बल्कि घृणित राजनीति और वैश्विक स्तर पर एक गढ़े गए कथानक का व्यापक षड्यंत्र था। इसे राजनीतिक स्वार्थ के कारण आतंकवाद का राजनीतिकरण भी कहा जा सकता है। मालेगांव ब्लास्ट केस को शुरुआत से ही राजनीतिक चश्मे से देखा गया। उस दौर में भारत सरकार और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता, तत्कालीन यूपीए सरकार के मंत्री पी.चिदंबरम, सुशील कुमार शिंदे और कांग्रेस के सीनियर लीडर दिग्विजय सिंह ने 'भगवा आतंकवाद' और 'संघी आतंकवाद' जैसे शब्दों का इस्तेमाल करके एक दूषित राजनीतिक का षडयंत्र रचा। ऐसे में हर किसी के जहन में सवाल उठेगा कि क्या यह राजनीतिक 'बैलेंसिंग एक्ट' था? बेशक 2004 से 2014 के बीच भारत ने लगभग हर माह आतंकवादी घटनाएं देखी हैं। दिल्ली, मुंबई, हैदराबाद, समझौता एक्सप्रेस, अयोध्या, वाराणसी, लखनऊ में सीरियल ब्लास्ट होते थे। बसों और ट्रेनों में चेतावनी लिखी होती थी कि लावारिस सामान बम हो सकता है। जिससे वैश्विक स्तर पर भारत पर अल्पसंख्यक विरोधी होने के आरोपों की वर्षा होती रहती थी। ऐसे में 'भगवा आतंकवाद' और 'हिंदू आतंकवाद' का 'नैरेटिव' तुष्टीकरण की सुविधाजनक पॉलिटिक्स के रूप में उपयोग किया गया।

पूर्व एनआईए अधिकारी आरवीएस. मणि ने कहा कि उन पर 'भगवा आतंकवाद' या 'हिंदू आतंकवाद' की पुष्टि करने का दबाव था, सुरक्षा विशेषज्ञ ब्रह्म चेलानी का कहना है कि भारत में 'हिंदू आतंकवाद' का नैरेटिव इस्लामी आतंकवाद की वैश्विक आलोचना के खिलाफ एक रणनीतिक टूल था।

आरोपियों के खिलाफ सबूत नहीं

इसी दौर में सुरक्षा एजेंसियों, विशेषकर महाराष्ट्र एटीएस और एनआईए, पर राजनीतिक दबाव के आरोप लगे। पूर्व एनआईए अधिकारी आरवीएस. मणि ने खुलकर कहा कि उन पर 'भगवा आतंकवाद' या 'हिंदू आतंकवाद' की पुष्टि करने का दबाव था। सुरक्षा विशेषज्ञ ब्रह्म चेलानी के मुताबिक, भारत में 'हिंदू आतंकवाद' का नैरेटिव इस्लामी आतंकवाद की वैश्विक आलोचना के खिलाफ एक रणनीतिक टूल था। यानी जांच के नाम पर राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसियों का राजनीतिकरण किया गया था। जो दुनिया के बड़े लोकतांत्रिक भारत के लिए चिंताजनक था। किंतु भारतीय न्यायपालिका ने तथ्यों व सबूतों के आधार पर इस राजनीतिक षड्यंत्र को बेनकाब करने का काम किया। साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर पर आरोप था कि उनकी बाइक में विस्फोटक था जिसमें ब्लास्ट हुआ था, लेकिन अभियोजन पक्ष अदालत यही साबित नहीं कर पाया कि बाइक साध्वी की ही थी। यानी प्रज्ञा ठाकुर पर लगाए गए आरोप साबित नहीं हो पाए। लेफ्टिनेंट कर्नल प्रसाद श्रीकांत पुरोहित के मामले में सेना के दस्तावेजों से यह प्रमाणित हुआ कि वे पाकिस्तान-समर्थित आतंकवादी नेटवर्क में सेना के गुप्तचर के रूप में काम कर रहे थे। बावजूद इसके, उन्हें करीब एक दशक तक जेल में रखा गया। सर्वोच्च न्यायालय ने भी 2017 में माना था कि इस मामले में 'राजनीतिक प्रभाव की आशंका' स्पष्ट दिखाई पड़ती है। यह भारत के संवैधानिक सिद्धांतों, विशेषकर अनुच्छेद-21 (जीवन एवं स्वतंत्रता का अधिकार) के उल्लंघन का स्पष्ट उदाहरण था। अदालत का यह निर्णय केवल आरोपी व्यक्तियों के लिए न्याय और सत्य की विजय नहीं है, बल्कि यह विद्वेषी सत्ता द्वारा विरोधी विचारधारा के दमन पर नकेल भी है। इस निर्णय के आने के बाद अंतरराष्ट्रीय हिंदुत्व-विरोधी षड्यंत्र और उसकी विफलता के दोनों पन्ने एक साथ सबके सामने खुल गए हैं।

साध्वी प्रज्ञा ठाकुर के बयानों से साफ होता है कि कांग्रेस भारत में हिंदुओं, संघ और भाजपा के खिलाफ कितनी खतरनाक साजिश रच रही थी, तुष्टीकरण के लिए कांग्रेस का चरित्र इतना गिर गया कि वो हिंदुत्व का नेतृत्व करने वाले नेताओं को आतंकवादी घोषित करना चाहती थी।

भगवा आतंकवाद का कुप्रचार हुआ

मालेगांव ब्लास्ट के साथ ही वैश्विक स्तर पर 'भगवा आतंकवाद' और 'हिंदू आतंकवाद' जैसे शब्द गढ़ने का आरोप मुख्य रूप से चार नेताओं पर लगता है। इनमें कांग्रेस के दिग्गज नेता पी चिदंबरम, सुशील कुमार शिंदे और दिग्विजय सिंह हैं जबकि चौथे नेता का नाम आरके सिंह है। ये वहीं आरके सिंह हैं जो कभी यूपीए सरकार के कार्यकाल में केंद्रीय गृह सचिव के पद पर कार्यरत रहे हैं। सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने भाजपा की सदस्यता ले ली और मोदी कैबिनेट में मंत्री भी रहे। इन नेताओं द्वारा गढ़े गए 'भगवा आतंकवाद' और 'हिंदू आतंकवाद' शब्द का प्रसार पाकिस्तानी मीडिया के साथ पश्चिमी मीडिया संस्थानों, बीबीसी, न्यूयॉर्क टाइम्स और अमेरिकी थिंक-टैंकों, जैसे रैंड कॉर्पोरेशन तथा फ्रीडम हाउस ने खूब किया था। पश्चिमी मीडिया का उद्देश्य इस नैरेटिव को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदुत्व को चरमपंथी श्रेणी में स्थापित करना था। लिहाजा हिंदू संगठनों को बार-बार दक्षिणपंथी आतंकवादी नेटवर्क के रूप में पेश किया गया। ऐसे में सवाल ये भी है कि क्या ये पश्चिमी मीडिया संस्थान अब अदालत द्वारा मालेगांव ब्लास्ट के आरोपियों को बरी करने के बाद क्या वो अपने पूर्व में फैलाए गए भ्रम पर माफी मांगेगा। यदि पश्चिमी मीडिया संस्थानों का उद्देश्य असत्य था तो क्या उन्हें आत्म मंथन नहीं करना चाहिए? यदि उनका उद्देश्य राजनीतिक नैरेटिव को आगे बढ़ाना था, तो निश्चित ही उनकी साख को बट्टा लगना तय है। क्योंकि अदालत द्वारा सुनाए गए निर्णय ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर यह साबित कर दिया कि 'भगवा आतंकवाद' या 'हिंदू आतंकवाद' की पूरी अवधारणा फर्जी साक्ष्यों, बलपूर्वक स्वीकारोक्ति और पूर्वाग्रहों पर आधारित थी। यह एक वैचारिक युद्ध था, जो सच्चाई और न्याय के सामने टिक नहीं पाया। यह प्रकरण वैचारिक संघर्ष में सत्य की विजय का प्रतीक है। अब जब मालेगांव ब्लास्ट केस में साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर, कर्नल पुरोहित सहित सभी आरोपी सम्मानपूर्वक बरी किए जा चुके हैं, तब स्पष्ट है कि यह मामला सिर्फ एक आतंकवादी हमला नहीं था, बल्कि यह आतंकवाद के राजनीतिकरण, न्याय प्रणाली व सिस्टम के दुरुपयोग और वैश्विक स्तर पर हिंदुत्व को बदनाम करने का व्यापक नैरेटिव था जिसकी न्यायालय में पराजय हुई। क्योंकि राजनीतिक स्वार्थ, वैचारिक आग्रह और अंतरराष्ट्रीय पूर्वाग्रह कभी भी सच और संवैधानिक न्याय के सामने टिक नहीं सकते। मालेगांव विस्फोट के आरोपियों का बरी होना केवल न्यायिक विवेकशीलता का प्रमाण नहीं, बल्कि वैश्विक हिंदुत्व-विरोधी शक्तियों को भारत की न्याय व्यवस्था का उत्तर भी है। मालेगांव प्रकरण के साथ भगवा आतंकवाद या हिंदू आतंकवाद भारत के लिए एक चेतावनी है कि कैसे देश के भीतर राजनीतिक लाभ के लिए आतंकवाद का राजनीतिकरण किया जा सकता है और कैसे इससे वैश्विक स्तर पर देश की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाया गया है। साथ ही यह न्याय की जीत का भी प्रतीक है, जिसने सिद्ध किया कि सच्चाई के विरुद्ध गढ़े गए 'फर्जी नैरेटिव' न्याय के हथौड़े की चोट पड़ते ही बिखर जाते हैं।

विकास या विनाश

वैज्ञानिको का मानना है कि विकास की अंधाधुंध होड़, अनियोजित विकास सिर्फ पहाड़ी क्षेत्र नहीं बल्कि पूरे देश में विनाश की पटकथा लिख रहा है, वैज्ञानिक मानते हैं कि उत्तराखंड का आपदा से चोली दामन का साथ रहा है, क्योंकि हर साल आपदा कहर बनकर जान माल को भारी क्षति पहुंचाती है।

कृष्ण कुमार चौहान

उत्तराखंड में उत्तरकाशी की तहसील भटवाड़ी के धराली गांव के पास हर्षिल में बादल फटने से धराली बाजार का अस्तित्व पूरी तरह समाप्त हो गया। धराली बाजार के भवन, होटल, होमस्टे एवं घर व दुकानें बरसाती नाले में आए मलवे में दफन हो गए। बादल फटने की घटना चूंकि दिन में हुई थी लिहाजा कुछ खुशनसीब लोग अपना जान बचाने में कामयाब हो गए। साथ ही तेजी से राहत कार्य शुरू हो गया। एसडीआरएफ, एनडीआरएफ, आर्मी आईटीबीपी, अग्निशमन के साथ स्थानीय पुलिस के साथ प्रशासन राहत कार्य में जुट गया। मलवे से घायलों को निकालकर करीब आईटीबीपी के कैंप पहुंचाया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने तुरंत उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से घटना की जानकारी ली और हर संभव मदद का वादा किया। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने अपने सारे कार्यक्रम रद्द किए और राहत कार्यों की निगरानी करने में लग गए। सीएम धामी ने कहा कि हमारे लिए पहली प्राथमिकता लोगों का जीवन बचाना है। सरकार पीड़ितों की हर संभव मदद कर रही है।

अगस्त में सबसे ज्यादा आपदा

हिमालय क्षेत्र में उत्तराखंड के पहाड़ सबसे ज्यादा कमजोर हैं, फिर भी यहां जिस तरह अनियोजित विकास किया जा रहा है वो विनाश का कारण बन रहा है। आपदाओं के कारण जन जीवन पूरी तरह अस्त व्यस्त ही नहीं होता बल्कि खतरे में पड़ जाता है। लगातार भूस्खलन, हिमानी झीलों के टूटने व बादल फटने जैसी घटनाएं यहां आम हो गई हैं। वैज्ञानिक प्रकृति में तेजी से आ रहे बदलाव को घातक मान रहे हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि मौसम परिवर्तन व अनियोजित विकास इसके पीछे बड़ा कारण है। पहाड़ी राज्य उत्तराखंड में तेजी से हो रहा विकास, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर रहा है जिससे पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। वैज्ञानिकों का मानना है कि विकास की अंधाधुंध होड़, अनियोजित विकास सिर्फ पहाड़ी क्षेत्र नहीं बल्कि पूरे देश व विश्व में विनाश की पटकथा लिख रहा है। वैज्ञानिक मानते हैं कि उत्तराखंड का आपदा से चोली दामन का साथ रहा है। हर साल आपदा कहर बनकर टूटती है। जिसमें जान माल की हानि होती है। संसाधन को भारी क्षति पहुंचती है। हाल के कुछ वर्षों में उत्तराखंड ने भूस्खलन और बादल फटने की कई घटनाएं झेली हैं, जो खौफनाक थी। इनमें मालपा (1998), ऊखीमठ (1998), फाटा (2001), गोना (2001), खेत गांव (2002), बूढ़ाकेदार (2002), भटवाड़ी (2002), उत्तरकाशी (2003), आम पड़ाव (2004), लामबगड़ (2004), गोविंदघाट (2005), अगस्त्यमुनि (2005), रमोलसारी (2005), अस्सी गंगा (2012), केदारनाथ (2013) बड़ी घटनाएं शामिल हैं। इस पहाड़ी राज्य के लिए अगस्त महीना आपदा के लिहाज से संवेदनशील है। 1970 से लेकर 2022 तक के आंकड़ों का विश्लेषण करने से पता चलता है कि 31 प्रतिशत भारी बारिश या बादल फटने जैसी घटनाएं अगस्त में हुई है। जबकि 28 प्रतिशत घटनाएं जुलाई और 11 फीसदी घटनाएं सितंबर में दर्ज की गई हैं। इसके बाद 7 प्रतिशत, 9 फीसदी और 14 फीसदी घटनाएं क्रमशः मई, जून और अक्टूबर में दर्ज की गई है।

पर्यटन और तीर्थाटन उत्तराखंड सरकार के लिए कमाई का बड़ा जरिया है लेकिन यही पर्यटन और तीर्थाटन विनाश का भी एक बड़ा कारण है, दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि इस तथ्य को न तो प्रदेश सरकार समझने को तैयार है और न ही पर्यटन से आर्थिक लाभ लेने वाले सामान्य व्यक्ति।

जियोलॉजिस्ट की नजर में आपदा?

पांच अगस्त को उत्तरकाशी के धराली में बादल फटने से हुई भीषण तबाही के कारणों की एक्सक्लूसिव तस्वीर भी सामने आई हैं। भारतीय मूल के भूटान में वरिष्ठ जियोलॉजिस्ट इमरान खान ने धराली में हर्षिल के पास ग्लेशियर डिपोजिट स्लाइड की तस्वीरें साझा की हैं। जियोलॉजिस्ट इमरान खान का कहना है कि धराली गांव से लगभग 7 किलोमीटर ऊपर की ओर, समुद्र तल से लगभग 6,700 मीटर की ऊंचाई पर स्थित, ग्लेशियर डिपाजिट डेबरी का एक बड़ा हिस्सा टूटने से मलबा तेजी से नीचे घाटी की ओर आया। सैटेलाइट इमेज के अनुसार ग्लेशियर मलबे की मोटाई 300 मीटर और क्षेत्रीय विस्तार करीब 1.12 वर्ग किलोमीटर का बताया गया है। जिससे निचले धराली में भारी तबाही मची। धराली में आई भीषण आपदा के पीछे के असल कारणों का खुलासा वरिष्ठ जियोलॉजिस्ट इमरान खान द्वारा साझा की गई तस्वीरों से हो जाता है। वरिष्ठ भारतीय जियोलॉजिस्ट इमरान खान भूटान में चल रहे पीएचपीए-1 में सेवारत हैं। सोशल मीडिया पर उनके द्वारा साझा की गई जानकारी में उत्तराकाशी के धराली में हुई घटना की विस्तृत जानकारी दी गई है। जिसमें कई तकनीकी पहलू भी शामिल हैं। वरिष्ठ जियोलॉजिस्ट इमरान खान की जानकारी के अनुसार धराली में मलबे के प्रवाह का अनुमानित आयतन 360 मिलियन घन मीटर है। 5 अगस्त को हुई उच्च-तीव्रता वाली वर्षा (बादल फटने) से मध्यवर्ती नाले ने मलबे के वेग को बढ़ा दिया और एक मिनट से भी कम समय में मलबा धराली गांव तक पहुंच गया।

उत्तराखंड के पहाड़ संवेदनशील

उत्तराखंड में बादल फटने की घटनाओं पर नजर डालें तो जुलाई 1970 में बादल फटने से अलकनंदा नदी का जलस्तर 15 मीटर बढ़ गया था। जिससे बदरीनाथ के पास हनुमान चट्टी से लेकर हरिद्वार तक पूरा नदी बेसिन प्रभावित हुआ। इस आपदा में एक पूरा गांव बह गया था। 17 अगस्त 1998 को कुमाऊं मंडल की काली घाटी में मालपा गांव में बादल फटने के बाद भूस्खलन हुआ, जिसमें 60 कैलाश मानसरोवर तीर्थयात्रियों समेत 250 लोग मारे गए थे। मृतकों में ओडिशा की नृत्यांगना प्रोतिमा बेदी भी शामिल थीं। 6 जुलाई 2004 को चमोली जिले में बदरीनाथ मंदिर क्षेत्र के पास बादल फटने से हुए भूस्खलन की चपेट में आने से 3 वाहन अलकनंदा नदी में बह गए थे। करीब 5,000 तीर्थयात्री फंस गए थे। इस आपदा में कम से कम 17 लोगों मारे जाने और 28 लोगों के घायल की खबर आई थी। 7 अगस्त 2009 को पिथौरागढ़ जिले में मुनस्यारी के पास नाचनी इलाके में बादल फटने से भूस्खलन हुआ और 38 लोग मारे गए थे। 3 अगस्त 2012 को उत्तरकाशी जिले में भागीरथी नदी की सहायक नदी अस्सी गंगा में बादल फटने से आई बाढ़ में 35 लोगों की मौत हो गई थी। 13 सितंबर 2012 को रुद्रप्रयाग जिले के ऊखीमठ कस्बे में बादल फटने से 69 लोगों की मौत हो गई थी। 16 जून 2013 को केदारनाथ में चौराबाड़ी झील फटने से अचानक बाढ़ आ गई थी। भारी मात्रा में मलबा और चट्टानें साथ लेकर आई बाढ़ से 5000 हजार से ज्यादा लोगों मौत हो गई थी। सैलाब ने रास्ते में आने वाले घरों के साथ हर चीज को तबाह कर दिया था। उत्तराखंड सरकार की ओर से उपलब्ध कराए गए आंकड़ों में 5,700 से ज्यादा लोगों की मौत की आशंका जताई गई थी। इनमें 934 स्थानीय निवासी शामिल थे। बाद में मृतकों की संख्या 6,054 बताई गई थी। मृतकों में ज्यादातर तीर्थयात्री थे। 1 जुलाई 2016 को पिथौरागढ़ जिले के डीडीहाट तहसील के बस्तरी और नौलरा में बादल फटने से 22 लोगों की मौत हुई थी। 14 अगस्त 2017 को पिथौरागढ़ जिले की धारचूला तहसील के मांगती और मालपा में काली नदी के तटीय इलाके खासकर सिमखोला गाड़ व मालपा गाड़ में अचानक बाढ़ से 27 लोगों की मौत हो गई थी। 12 अगस्त 2019 को चमोली के घाट क्षेत्र में बादल फटने से 6 लोगों की मौत हुई थी। 18 अगस्त 2019 को उत्तरकाशी जिले की मोरी तहसील के आराकोट क्षेत्र में पब्बर नदी की सहायक नदी खनेड़ा गाड़ में बादल फटने से 21 लोगों की मौत हुई थी। 19 जुलाई 2020 में पिथौरागढ़ के मदकोट और टांगा में बादल फटने से 3 लोगों की मौत हुई थी। 20 जुलाई 2020 को पिथौरागढ़ जिले में बादल फटने से टांगा गांव में 11 लोगों की मौत हुई थी। 18 अगस्त 2020 को उत्तरकाशी जिले के मोरी गांव में 12 लोगों की मौत हुई थी। 7 फरवरी 2021 को चमोली जिले में ग्लेशियर टूटने से ऋषि गंगा नदी में भीषण बाढ़ आने से आधिकारिक रूप से 204 लोगों की मौत हुई थी। इनमें से केवल 80 शव ही बरामद किए जा सके थे। 124 लोगों के शव आज तक नहीं मिले। जिन्हें बाद में लंबी खोज अभियान के बाद मृत घोषित कर दिया गया था। इस बाढ़ में ऋषि गंगा जलविद्युत परियोजना और निर्माणाधीन तपोवन विष्णुगाड जलविद्युत परियोजना को भारी क्षति पहुंची थी। 3 मई 2021 को उत्तरकाशी के कुमराड़ा, बल्डोगी और कमद में 3 लोगों की मौत हुई थी। 20 मई 2021 को उत्तराखंड के देहरादून के चकराता के बिजनाड़ में 3 लोगों और 24 जानवरों की मौत हुई थी। 18 जुलाई 2021 को उत्तरकाशी में भागीरथी नदी की सहायक नदी मांडो गदेरा उफान पर आने से मांडो गांव में 4 लोगों की मौत हुई थी। 30 अगस्त 2021 को धारचूला के जुम्मा गांव में 7 लोगों की मौत हुई थी। 29 जून 2025 को उत्तराखंड के उत्तरकाशी में सिलाई बैंड के पास हुए भूस्खलन में 2 मजदूरों के शव मिले. जबकि, 7 लापता हैं।

- **जियोलॉजिस्ट इमरान खान का कहना है कि धराली गांव से लगभग 7 किलोमीटर ऊपर की ओर, समुद्र तल से लगभग 6,700 मीटर की ऊंचाई पर स्थित, ग्लेशियर डिपाजिट डेबरी का एक बड़ा हिस्सा टूटने से मलबा तेजी से नीचे घाटी की ओर आया।**
- **प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने तुरंत उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से घटना की जानकारी ली और हर संभव मदद का वादा किया। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने अपने सारे कार्यक्रम रद्द किए और राहत कार्यों की निगरानी करने में लग गए।**

विनाश की कीमत पर विनाश नामंजूर

पर्यटन और तीर्थाटन उत्तराखंड सरकार के लिए कमाई का बड़ा जरिया है लेकिन यही पर्यटन और तीर्थाटन विनाश का भी एक बड़ा कारण है। किंतु दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि इस तथ्य को न तो प्रदेश सरकार समझने को तैयार है और न ही पर्यटन से आर्थिक लाभ लेने वाला बेहद सामान्य व्यक्ति। जो लोग उत्तराखंड के पर्यटन से दूर-दूर तक नहीं जुड़े हैं, उनकी आबादी 80 प्रतिशत से ज्यादा होगी, जो पर्यटन के रौद्र रूप से आतंकित हैं। लेकिन बेबस ये आबादी सिर्फ अपनी झुंझलाहट में ही व्यक्त कर सकती है। असंगठित होने के कारण ये बड़ी आबादी अपनी आवाज भी ढंग से नहीं उठा पाती। पर्यावरण विज्ञानी, भू-विज्ञानी व जियोलॉजिस्ट यदि खतरों के संकेत देते भी हैं तो उन्हें विकास विरोधी घोषित कर चुप करने की कोशिश की जाती है। बदरीनाथ-केदारनाथ में भीड़ बढ़ने पर अपनी पीठ थपथपाने वाली सरकार ने 2013 की भयानक आपदा से कुछ नहीं सीखा है। चार धाम में बेहिसाब भीड़ और हेलीकॉप्टरों की उड़ानें नाजुक हिमालय का क्या हस्र करेंगी, इस दिशा में सोचने की किसी को फुर्सत ही नहीं है। स्थापित तीर्थों के अलावा सरकार की नजर अब कुछ नए इलाकों की तरफ है।। आदि कैलाश जिसका नाम कुछ दशक पूर्व लोग नहीं जानते थे, कुछ मुट्ठीभर घुमक्कड़ ही आदि कैलाश तक पहुंचते थे वो भी अब एक नया तीर्थ स्थल बनाया जा रहा है। यह प्रयास सुनियोजित और वैज्ञानिकों की सलाह पर जनहित की रक्षा करते हुए किया जाना चाहिए। किंतु आदि कैलास का विकास भी बड़ी कंपनियों के माध्यम से कराया जा रहा है। ऐसे में हर किसी के जहन में एक ही सवाल आएगा कि क्या विनाश की कीमत पर विकास उत्तराखंड की 80 प्रतिशत आबादी स्वीकार करेगी? क्योंकि ये वो आबादी है जिसे पर्यटन के नाम पर सिर्फ छोटा-मोटा रोजगार ही मिलता है।

दहशतगर्दों को धर्म बताकर मारा

पहलगाम हमले के पीड़ितों के परिवार चाहते थे कि तीनों आतंकियों के सिर में गोली मारी जाए, ऑपरेशन महादेव में उनका यही हश्र हुआ, तीनों के सिर में गोली मारी गई, गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि मारे गए तीनों आतंकी पाकिस्तानी थे, इस बात की भी पुष्टि हो गई है, आतंकियों के पास से मिले पहचान पत्रों से साफ हो गया है कि ये लश्कर-ए-ताइबा के आतंकवादी थे।

- सेना को जुलाई की शुरुआत में चीनी अल्ट्रा-रेडियो संचार के एक्टिव होने के संकेत मिले, लश्कर के आतंकी एंक्रिप्टेड संदेशों के लिए चीनी अल्ट्रा रेडियो का इस्तेमाल करते हैं, इसी चीनी अल्ट्रा रेडियो संचार के एक्टिव होने से भारतीय सुरक्षा बलों को पहलगाम के दोषियों तक पहुंचने में मदद मिली।
- जैसे कोई भी बड़ा काम करने से पहले हम सब एक रणनीति बनाते हैं उसी तरह भारतीय सेना भी किसी सैन्य कार्रवाई से पहले रणनीति बनाती है, ऑपरेशन कहां होगा, कौन-कौन निशाना बनेगा, कैसे होगा? उसी आधार पर ऑपरेशन करने वाली यूनिट के कमांडर मिशन को नाम देते हैं।

शालिनी चौहान
नई दिल्ली

पहलगाम में पाकिस्तानी आतंकवादियों ने हिंदुओं से धर्म पूछकर गोली मारी थी, जिन तीन आतंकवादियों ने पहलगाम क्रूर नरसंहार किया था उनको भारतीय सेना, सीआरपीएफ और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने धर्म बताकर 72 हूरो के पास पहुंचा दिया। यानी पहगाम के पापियों को जहन्नुम पहुंचाने के लिए सुरक्षा बलों ने ऑपरेशन महादेव लॉन्च किया। इसके अगले दिन ऑपरेशन शिवशक्ति लॉन्च किया और भारत की सीमा में घुसने की कोशिश करने वाले दो और आतंकवादियों की मुलाकात 72 हूरों से करा दी। सिर्फ 48 घंटों में पाकिस्तान के पांच दहशतगर्दो मार डाला गया। पहलगाम में नरसंहार करने वाले आतंकवादियों का पीछा कर रहे सुरक्षा बलों ने 28 जुलाई को तीनों दहशतगर्दों के सिर में गोली मारकर 'भेजा' उड़ा दिया। क्योंकि इन आतंकवादियों ने पहगाम में कलमा नहीं पढ़ने पर ज्यादातर बेकसूर हिंदुओं के सिर में ही गोली मारी थी। सुरक्षा बलों से मुठभेड़ में मारे गए आतंकियों की पहचान पहलगाम आतंकी हमले के मास्टरमाइंड सुलेमान उर्फ आसिफ उर्फ हाशिम मूसा, जिबरान और याशिर उर्फ अबू हमजा अफगानी के रूप में कराई है, जो लश्कर-ए-ताइबा के टॉप आतंकी थे। जिबरान पिछले वर्ष सोनमर्ग सुरंग हमले में शामिल था। मुठभेड़ स्थल से सुरक्षा बलों ने अमेरिका निर्मित एक एम-4 कार्बाइन असॉल्ट राइफल, एके सीरीज की दो राइफल सहित भारी मात्रा में गोली-बारूद, पहचान पत्र पाकिस्तानी चॉकलेट बरामद की है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने राज्यसभा में ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा का जवाब देते हुए कहा कि पहलगाम हमले के पीड़ितों के परिवार चाहते थे कि तीनों आतंकियों के सिर में गोली मारी जाए। ऑपरेशन महादेव में उनका यही हश्र हुआ, तीनों के सिर में गोली मारी गई। अमित शाह ने कहा कि मारे गए तीनों आतंकी पाकिस्तानी थे, इस बात की भी पुष्टि हो गई है। आतंकियों के पास से मिले पहचान पत्रों से साफ हो गया है कि ये लश्कर-ए-ताइबा के आतंकवादी थे। ऑपरेशन महादेव से जुड़े सैन्य अफसर का कहना है कि स्पेशल फोर्सेज 4 पैरा व 24 राष्ट्रीय राइफल्स को पहलगाम हमले में आतंकियों द्वारा इस्तेमाल सैटेलाइट फोन के उपयोग का संकेत मिला था। इसके तुरंत बाद ऑपरेशन महादेव शुरू कर आतंकियों की घेराबंदी की गई। अतिरिक्त सुरक्षा बल 'लिदवास' बुलाकर घेरा सख्त किया गया, ताकि आतंकी भाग न सकें। खुद को घिरा देख आतंकियों ने सुरक्षा बलों पर फायरिंग शुरू कर दी। मुठभेड़ में दोनों तरफ से गोलीबारी हुई, जिसमें तीन आतंकी मारे गए। इसके बाद सेना की चिनार कोर ने सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट किया कि जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर की महादेव चोटी जबरवान रेंज के 'लिदवास' में तीन आतंकी मारे गए है।

चीनी उपकरणों ने आतंकियों को धोखा दिया

पहलगाम में निर्दोष हिंदुओं की हत्या करने वाले आतंकियों के खिलाफ कार्रवाई को 'ऑपरेशन महादेव' नाम इसलिए दिया गया क्योंकि जहां आतंकी छिपे थे वो इलाका जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर स्थित महादेव चोटी का है। पाकिस्तानी लश्कर-ए-तायबा के आतंकवादी महादेव चोटी की तलहटी में घने जंगलों में छिपे हुए थे। यह चोटी काफी ऊंचाई पर है, यहीं आतंकवादियों को जंगल युद्ध का प्रशिक्षण दिया जाता है। पहगाम हमले के बाद से ही सुरक्षा बल इलेक्ट्रोनिक उपकरणों से लगातार आतंकियों की लोकेशन की निगरानी कर रहे थे। सेना को जुलाई की शुरुआत में चीनी अल्ट्रा-रेडियो संचार के एक्टिव होने के संकेत मिले। लश्कर के आतंकी एंक्रिप्टेड संदेशों के लिए चीनी अल्ट्रा रेडियो का इस्तेमाल करते हैं। इसी चीनी अल्ट्रा रेडियो संचार के एक्टिव होने से भारतीय सुरक्षा बलों को पहलगाम के दोषियों तक पहुंचने में मदद मिली। इसके बाद सेना ने सीआरपीएफ और लोकल पुलिस के साथ ऑपरेशन महादेव लॉन्च किया। सुरक्षाबलों ने ऑपरेशन महादेव को अंजाम देने से पहले 14 दिनों तक लश्कर-ए-तायबा और जैश-ए-मोहम्मद के आतंकवादियों पर नजर रखी और 28 जुलाई को ऑपरेशन महादेव पूरा करते हुए तीन पाकिस्तानी आतंकियों को ढेर कर दिया। सुरक्षा एजेंसियों के मुताबिक सुलेमान उर्फ आसिफ उर्फ हाशिम मूसा ने पहलगाम हमले को पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई और लश्कर-ए-तायबा के अपने हैंडलर सज्जाद और काजी सैफ के निर्देश पर अंजाम दिया था। हासिम मूसा लगातार पाकिस्तान में बैठे हैंडलरों के संपर्क में था। सुरक्षा एजेंसियों का मानना है कि हमले के पीछे आईएसआई व लश्कर-ए-तायबा का उद्देश्य पूरे भारत में सांप्रदायिक हिंसा भड़काना था। ताकि बलोच विद्रोहियों द्वारा जफर एक्सप्रेस पर किए गए हमले से पाकिस्तान में पैदा हुए हालात से पाकिस्तानी आवाम का ध्यान हटाना जा सके।

विपक्ष के सवाल हैं कि लोकसभा में ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा के समय ही पहलगाम में नरसंहार करने वाले आतंकियों को क्यों मारा गया? पहले या बाद में भी मारा जा सकता था? क्या सरकार इसका राजनीतिक लाभ लेना चाहती है? आतंकियों के खिलाफ चलाए गए ऑपरेशन का नाम ऑपरेशन महादेव क्यों रखा गया?

ऑपरेशन के नाम पर विपक्ष को आपत्ति

पहलगाम नरसंहार के बाद ऑपरेशन सिंदूर हो या सीजफायर अथवा ऑपरेशन महादेव इन सब पर देश में राजनीति भी खुल्म खुल्ला हुई है। सबसे गंदी राजनीति कांग्रेस, उसके सीनियर लीडर और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी व राज्यसभा सांसद पी चिदंबरम तथा सपा सांसद अखिलेश यादव ने की। हालांकि संसद का मानसून सत्र चल रहा है इसलिए सभी विपक्षी दलों के नेताओं ने ऑपरेशन सिंदूर से लेकर सीजफायर और ऑपरेशन महादेव पर सवाल उठाए। विपक्षी दलों के सांसदों ने सवाल किया कि मानसून सत्र में जब लोकसभा में ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा हो रही है तभी पहलगाम में नरसंहार करने वाले आतंकियों को क्यों मारा गया? पहले या बाद में भी मारा जा सकता था? क्या सरकार इसका राजनीतिक लाभ लेना चाहती है? आतंकियों के खिलाफ चलाए गए ऑपरेशन का नाम ऑपरेशन महादेव ही क्यों रखा गया? इससे पहले संसद में विपक्षी कह रहे थे कि पहलगाम में नरसंहार करने वाले आतंकियों को अभी तक पकड़ा क्यों नहीं गया? ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर सरकार जश्न मना रही है, लेकिन जब तक पहलगाम हमले के दोषी आतंकवादी नहीं पकड़े जाते तब तक कैसा जश्न? ऑपरेशन सिंदूर नाम पर भी विपक्षी दलों को आपत्ति थी। कांग्रेस ने तो इन ऑपरेशन के नामों को ही सांप्रदायिक कह दिया। राज्यसभा सांसद और कांग्रेस के सीनियर लीडर पूर्व गृह मंत्री पी चिदंबरम ने तो बेशर्मी की हदें ही पार कर दी, उन्होंने सरकार से सवाल किया उसके पास इस बात के क्या सबूत हैं कि पहलगाम हमला करने वाले आतंकवादी पाकिस्तानी ही थे? खैर सवाल सरकार से किए गए थे लिहाजा सरकार को जवाब देना ही था। इसलिए राज्यसभा में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने ऑपरेशन सिंदूर पर जवाब देने के साथ लगे हाथों ऑपरेशन महादेव का भी जवाब दे दिया।

अमित शाह का करारा जवाब

विपक्ष द्वारा ऑपरेशन महादेव के नाम और समय को लेकर उठाए गए सवालों पर अमित शाह ने जो जवाब दिया उससे विपक्षी दलों के सांसदों के चेहरों की हवाइयां उड़ गई। अमित शाह ने कहा ऑपरेशन महादेव पर सवाल उठाने वालों को बता देना चाहता हूं कि 'क्या आतंकियों को मारने के लिए कोई मुहूर्त देखा जाएगा? क्या नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को जिस दिन संसद में भाषण देना था, उस दिन आतंकियों को नहीं मारा जाना चाहिए था? ये राष्ट्रीय सुरक्षा का विषय है, राजनीति का नहीं।' गृह मंत्री ने स्पष्ट किया कि 'हर हर महादेव' सिर्फ धार्मिक उद्घोष नहीं, बल्कि भारत की शक्ति और पराक्रम का प्रतीक है, जिसे छत्रपति शिवाजी महाराज की सेना भी गर्जना के रूप में इस्तेमाल करती थी। 'कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार आतंकी हमले के बाद सिर्फ डोजियर भेजती थी, हमने ब्रह्मोस चलाया' गृह मंत्री ने यूपीए सरकार की तुलना मोदी सरकार से करते हुए कहा कि कांग्रेस सिर्फ पाकिस्तान को डोजियर भेजती रही, लेकिन हमने ब्रह्मोस से जवाब दिया। आज यदि कांग्रेस सत्ता में होती तो वह पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान को सिर्फ डोजियर भेजती या फिर कड़े शब्दों में निंदा करती। इसलिए 'कांग्रेस को आतंकवाद पर सवाल उठाने का कोई अधिकार नहीं है।' अमित शाह ने ऑपरेशन की टाइमिंग पर उठाए गए सवाल? का भी जवाब दिया। उन्होंने कहा कि 'हमें जैसे ही लोकेशन मिली, हमला किया' शाह ने बताया कि आतंकियों की सटीक लोकेशन 22 जुलाई को मिल गई थी। इसके बाद 4 पैरा, सीआरपीएफ और जम्मू-कश्मीर पुलिस के साथ बैठक कर ऑपरेशन की योजना बनाई गई और 28 जुलाई को आतंकियों का सफाया कर दिया। पहलगाम हमले के बाद 155 लोगों से पूछताछ की गई थी, फोटो बनाए गए थे जांच की गई और आतंकियों को शरण देने वालों पर कार्रवाई की गई। ये महादेव की इच्छा ही थी कि जिस दिन सवाल पूछे गए, उसी दिन आतंकवादी मारे गए। उन्होंने ऑपरेशन महादेव को राष्ट्र की सुरक्षा और शौर्य का प्रतीक बताया। कांग्रेस की प्राथमिकता राष्ट्रीय सुरक्षा और आतंकवाद का खात्मा नहीं, बल्कि वोट बैंक और तुष्टिकरण है। लिहाजा सवाल तो उठेगा ही कि आखिरकार कांग्रेस आतंकियों को क्यों बचाना चाहती हैं?

विपक्षी नेताओं का सामान्य ज्ञान

नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी हों या राज्यसभा सांसद पी चिदंबरम, मल्लिकार्जुन खड़गे अथवा सपा सांसद अखिलेश यादव इन्हें समान्य ज्ञान तक नहीं है। सुरक्षा बलों द्वारा चलाए जाने वाले किसी भी ऑपरेशन का नाम न तो सरकार रखती है और न ही कोई नेता या प्रधानमंत्री रखते हैं। बल्कि ऑपरेशन का नाम उस सुरक्षा बल के कमांडर रखते हैं जिन्हें ऑपरेशन को अंजाम तक पहुंचाना होता है। हां अपवाद के तौर पर कभी-कभी ऑपरेशन के नाम का सुझाव बड़े सैन्य अधिकारी और सरकार भी देती है। इसलिए ऑपरेशन के नाम पर सवाल उठाने वालों के सामान्य ज्ञान पर हर किसी तो तरस आना चाहिए। ऑपरेशन विजय, ऑपरेशन मेघदूत, ऑपरेशन बंदर, ऑपरेशन सिंदूर से लेकर ऑपरेशन महादेव, ऑपरेशन शिवशक्ति ये वो सैन्य अभियान हैं जिनका नाम सुनते ही हर भारतीय का सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है। क्योंकि जब-जब कोई बड़ी सैन्य कार्रवाई हुई तब-तब कुछ ऐसे ही यूनीक नाम उन सैन्य अभियानों को दिया गया। यानी जैसे कोई भी बड़ा काम करने से पहले हम सब एक रणनीति बनाते हैं उसी तरह भारतीय सेना भी किसी सैन्य कार्रवाई से पहले रणनीति तैयार करती है। ऑपरेशन कहां होगा, कौन-कौन निशाना बनेगा, कैसे होगा? उसी आधार पर कमांडर उस मिशन को नाम देते हैं। ऑपरेशन का नाम अभियान के उद्देश्य को दर्शाना होता है। ऑपरेशन के नाम से दुश्मन के दिमाग से भी खेला जाता है। किसी क्षेत्र के हिसाब से भी नाम तय होता है। जैसा कि ऑपरेशन महादेव नाम उस क्षेत्र की महादेव चोटी के हिसाब से रखा गया। सैन्य कार्रवाई की रणनीति पूरी तरह गोपनीय होती है। ऑपरेशन सिंदूर में क्योंकि आतंकियों ने महिलाओं का सिंदूर उजाड़ दिया था इसलिए इसका नाम ऑपरेशन सिंदूर पड़ा जिससे देश और दुश्मनों को इस ऑपरेशन का मतलब पता चल सके।

मोदी के रुतबे से ट्रंप बोखलाए

मॉर्निंग कंसल्ट के सर्वे में शामिल 22 देशों के वैश्विक नेताओं में पीएम नरेंद्र मोदी सबसे आगे हैं, यानी जब दुनिया के बड़े नेता जनता का भरोसा खो रहे हैं, पीएम मोदी की साख लगातार बुलंदी पर है, इससे ही दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश के राष्ट्रपति ट्रंप बोखलाए हुए हैं, क्योंकि नरेंद्र मोदी दुनिया के दिलों पर राज कर रहे हैं और ट्रंप अपनी विश्वसनीयता खो रहे हैं।

डा.भारत भूषण
आईएफटीएम

11 वर्षों से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दुनिया के सबसे लोकप्रिय और विश्वसनीय नेता बने हुए हैं। जबकि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ट ट्रंप 8वें नंबर पर आते हैं। इससे साबित होता है कि ट्रंप अपनी वैश्विक छवि को डेंट लगा चुके हैं। उनकी कूटनीति और विश्वसनीयता भी 8वें दर्जे की हो चुकी है। ये वही डोनाल्ड ट्रंप है जिन्होंने अमेरिका में चुनाव के दौरान बड़े-बड़े दावे किए थे, कि वो सत्ता में आते ही रूस-यूक्रेन युद्ध बंद करा देंगे। इजराइल-फिलीस्तीन युद्ध बंद करा देंगे। क्या ट्रंप युद्ध बंद करा पाए, नहीं। ईरान को परमाणु बम नहीं बनाने देंगे, जून में अमेरिका ने ईरान के तीन परमाणु संयंत्रों पर हमला भी किया, उनमें से केवल फोर्डो परमाणु संयंत्र ही बर्बाद हुआ। अमेरिकी विमानों ने उस पर बंकर बस्टर बम गिराए थे। इसके अलावा नातांज और इस्फहान के परमाणु संयंत्रों पर भी अमेरिका ने हमला किया, लेकिन उन्हें ज्यादा नुकसान नहीं हुआ है। ईरान चाहेगा तो फिर से यूरेनियम शोधन की प्रक्रिया शुरू कर देगा। यह जानकारी अमेरिकी न्यूज चैनल एनबीसी ने वर्तमान और पूर्व अमेरिकी अधिकारियों के हवाले से दी गई थी। अमेरिकी रक्षा मंत्रालय ने भी अपनी गोपनीय रिपोर्ट में ऐसी ही बात कही थी जिसे राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने खारिज कर दिया था। ये वो नजीरें हैं जो बड़बोले डोनाल्ड ट्रंप को वैश्विक स्तर पर फेल नेता साबित करने के लिए काफी हैं। लिहाजा ट्रंप जब हर मोर्चे पर फेल हुए तो उन्होंने टैरिफ (आयात शुल्क) का नया खेल शुरू किया। तमाम देशों पर टैरिफ बढ़ाकर अपने ही मुल्क अमेरिका को महंगाई की आग में झोंक दिया। राष्ट्रपति ट्रंप की गलत नीतियों की वजह से उनके सबसे विश्वासपात्र और करीबी अमेरिकी अरबपति इलॉन मस्क ने ट्रंप प्रशासन का साथ छोड़ दिया। ट्रम्प प्रशासन में मस्क को स्पेशल गवर्नमेंट एम्प्लॉई की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। एक तरफ ट्रंप के करीबी साथ छोड़ गए। तो दूसरी तरफ ऑपरेशन सिंदूर के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दावा किया था कि भारत-पाकिस्तान के बीच उन्होंने सीजफायर कराया है। इस दावे की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 29 जुलाई को संसद में हवा निकालते हुए कांग्रेस व विपक्ष को एक लाइन का जवाब दिया कि ऑरपेशन सिंदूर रोकने के लिए ट्रंप क्या किसी भी देश ने नहीं कहा। डोनाल्ड ट्रंप भले ही दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश के राष्ट्रपति हो, लेकिन वो भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तरह विश्वसनीय नहीं हैं। इसलिए वो वैश्विक नेताओं की सूची में 8वें स्थान पर हैं।

जबकि 11 वर्षों से लगातार सत्ता में रहने के बावजूद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वैश्विक साख, प्रतिष्ठा, विश्वसनीयता और लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आई है, बल्कि यह बढ़ती ही जा रही है। भारत के नेतृत्व पर वैश्विक भरोसा अमेरिका और चीन से ज्यादा है, जो अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक बड़ा बदलाव है। अब दुनिया सिर्फ भारत के उदय को नहीं देख रही वह भारत के नेतृत्व में अपना विश्वास भी जता रही है।

डोनाल्ड ट्रंप टॉप फाइव से बाहर

पीएम नरेंद्र मोदी का यह रुतबा देखकर पूरी दुनिया हैरान है। अमेरिका की ही अंतरराष्ट्रीय एजेंसी मॉर्निंग कंसल्ट की ताजा ग्लोबल अप्रूवल रेटिंग में नरेंद्र मोदी को एक बार फिर विश्व के शीर्ष नेता के रूप में स्थान दिया है। यानी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू जैसे वैश्विक नेता भी मोदी के सामने कहीं नहीं टिक पा रहे हैं। मॉर्निंग कंसल्ट की ताजा ग्लोबल अप्रूवल रेटिंग में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 75 प्रतिशत रेटिंग के साथ लोगों की पहली पसंद हैं, यानी 75 फीसदी लोगों ने पीएम मोदी को एक लोकतांत्रिक विश्व नेता के रूप में पसंद किया। दूसरे स्थान पर 59 प्रतिशत रेटिंग के साथ दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति लीजे म्युंग हैं, 57 प्रतिशत रेंटिग के साथ अर्जेंटीना के राष्ट्रपति जेवियर मिलेई तीसरे स्थान पर हैं। 56 फीसदी रेटिंग के साथ कनाडा के नए प्रधानमंत्री मार्क कार्नी चौथे स्थान पर हैं। 54 प्रतिशत रेटिंग के साथ ऑस्ट्रेलिया के एंथोनी अल्बानीस पांचवें स्थान पर हैं। जबकि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप सिर्फ 44 प्रतिशत अप्रूवल रेटिंग के साथ भारत के पीएम नरेंद्र मोदी से बहुत पीछे आठवें नंबर पर हैं। यानी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को टॉप फाइव में भी जगह नहीं मिली है। प्रधानमंत्री मोदी की यह उच्च रेटिंग बताती है कि वे दुनिया के विश्वास को लगातार बरकरार रखे हुए हैं। यह अप्रूवल न केवल मोदी की घरेलू शक्ति को दर्शाता है, बल्कि उनकी वैश्विक छवि और कूटनीतिक पहचान को भी मजबूत करता है। मॉर्निंग कंसल्ट के सर्वे में यह भी सामने आया है कि दुनिया भर के लोगों का भारत के नेतृत्व पर अमेरिका और चीन से ज्यादा भरोसा है। यह एक ऐतिहासिक कूटनीतिक और रणनीतिक बदलाव है, जो भारत की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठता को दर्शाता है। मॉर्निंग कंसल्ट के सर्वे में शामिल 22 देशों के वैश्विक नेताओं में पीएम नरेंद्र मोदी सबसे आगे हैं। साफ है जब दुनिया के बड़े नेता जनता का भरोसा खो रहे हैं, तब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की साख लगातार बुलंदी पर है। इससे ही दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप बोखलाए हुए हैं। क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दुनिया के दिलों पर राज कर रहे हैं और ट्रंप अपनी विश्वसनीयता खो रहे हैं।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप सिर्फ 44 प्रतिशत अप्रूवल रेटिंग के साथ भारत के पीएम नरेंद्र मोदी से बहुत पीछे 8वें नंबर पर हैं, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को टॉप फाइव में भी जगह नहीं मिली है, पीएम मोदी की यह उच्च रेटिंग बताती है कि वे दुनिया के विश्वास को लगातार बरकरार रखे हुए हैं।

इकॉनमी भारत की डेड है या अमेरिका की

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की साख दुनियाभर में मजबूत हुई है। भारत एक विश्व शक्ति बनकर उभरा है। दुनिया भर में भारत की आवाज प्रभावी तरीके से सुनी जा रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कूटनीति से विश्व पटल पर भारत की धाक बढ़ी है। यही कारण है कि अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप ने भी रूस-यूक्रेन युद्ध रुकवाने के लिए भारत से अहम भूमिका निभाने का आग्रह किया था। ट्रंप प्रशासन का कहना था कि भारत दोनों देशों के बीच संघर्ष खत्म कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। लिहाजा अमेरिका ने भारत से अपील की थी कि वह रूस के साथ अपने ऐतिहासिक संबंधों का इस्तेमाल कर राष्ट्रपति पुतिन को कहे कि वह यूक्रेन के खिलाफ युद्ध रोक दें। अमेरिका के विदेश विभाग के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने ये अपील की थी। युद्ध रुकवाने में नाकाम अमेरिकी राष्ट्रपति अब चाहते हैं कि भारत रूस से तेल न खरीदे। अमेरिका ये भी चाहता है कि भारत उसके एफ-35 लड़ाकू विमान खरीदे। फरवरी 2025 में जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अमेरिका की यात्रा पर गए थे, तब राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एफ-35 लड़ाकू विमान का प्रस्ताव रखा था। लेकिन एफ-35 फाइटर जेट्स में सॉफ्टवेयर बग्स, रडार व वैपन सिस्टम में ग्लिच, इंजन फेल होने, सेंसर के ठीक से काम नहीं करने, पायलट के हेलमेट में नाइट-विजन या डेटा लेट दिखने और दिशा भटकने जैसी कई खामिया सामने आई तो भारत सरकार ने एफ-35 फाइटर जेट खरीदने का फैसला नहीं लिया। वैसे भी एफ-35 लड़ाकू विमान का रखरखाव बहुत महंगा है। एफ-35 रखरखाव के खर्च की आलोचना खुद ट्रंप के करीबी रहे इलॉन मस्क भी कर चुके हैं। भारत में इसक उदाहरण तब देखा गया जब ब्रिटेन की सेना का एफ-35 बी विमान तिरुवनंतपुरम एयरपोर्ट पर चार हफ्ते से ज्यादा खड़ा रहा था। मेंटेनेंस और दोबारा उड़ने लायक बनाने में देरी के कारण हर जगह एफ-35 की आलोचना हुई थी। वैसे भी एफ-35 लड़ाकू विमानों में तकनीकी फेलियर की 2006 से लेकर अब तक 16 से ज्यादा घटनाएं हुई। 16 एफ-35 फाइटर जेट्स क्रैश हो चुके हैं। इनमें सबसे ज्यादा चर्चित घटना 2023 की रही है, जब पायलट इजेक्ट कर गया, लेकिन विमान ऑटो मोड में उड़ता रहा और फिर क्रैश हो गया। इससे भी ट्रंप बोखलाए हुए हैं और भारत की इकॉनमी को डेड तक बता रहे हैं, जबकि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने भारत की आर्थिक विकास दर 2025 और 2026 में 6.4 प्रतिशत की दर से बढ़ने का अनुमान लगाया है। भारत अगले दो साल तक दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती हुई बड़ी इकॉनमी बना रहेगा। चीन की इकॉनमी 2025 में भारत से कम 4.8 प्रतिशत और 2026 में 4.2 प्रतिशत की दर से बढ़ने का अनुमान है। जबकि अमेरिका की इकॉनमी 2025 में भारत से बहुत पीछे सिर्फ 1.9 प्रतिशत और 2026 में 2.0 प्रतिशत की दर से बढ़ेगी। अब जिस अमेरिका की इकॉनमी भारत की इकॉनमी से फिसड्डी है उस अमेरिका के राष्ट्रपति भारत की इकॉनमी को डेड बताकर अपना ही उपहास उड़ा रहे हैं।

11 वर्षों से लगातार सत्ता में रहने के बावजूद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वैश्विक साख, प्रतिष्ठा, विश्वसनीयता और लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आई है, बल्कि यह बढ़ती जा रही है, भारत के नेतृत्व पर वैश्विक भरोसा अमेरिका और चीन से ज्यादा है, जो अंतराष्ट्रीय राजनीति में एक बड़ा बदलाव है।

टैरिफ बढ़ाने से अमेरिका में महंगाई बढ़ेगी

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बढ़ती लोकप्रियता और भारत की बढ़ती इकॉनमी से बोखलाए ट्रंप ने भारत पर 25 प्रतिशत टैरिफ (आयात शुल्क) और जुर्माना लगाकर अपने ही देश में महंगाई को न्यौता दे दिया है। आयात शुल्क बढ़ने से निश्चित ही भारतीय उत्पाद अमेरिका में महंगे हो जाएंगे। यानी भारत के जिस उत्पाद की अमेरिका में अभी कीमत 100 रुपये है वो बढ़कर 125 रुपये हो जाएगी। भारत अमेरिका को दवाइयां और फार्मा उत्पाद यानी सस्ती जेनेरिक दवाओं की बड़ी आपूर्ति करता है। रत्न और आभूषण, डायमंड कटिंग व पॉलिशिंग में भारत की दक्षता अमेरिका को आकर्षित करती है। इलेक्ट्रॉनिक और इलेक्ट्रिकल सामान, स्मार्टफोन, कंप्यूटर से लेकर सर्किट बोर्ड तक भारत ही अमेरिका को निर्यात करता है। भारतीय वस्त्र और परिधान, खासकर कॉटन बेस्ड रेडीमेड गारमेंट्स की अमेरिका में भारी मांग है। भारत एक प्रमुख रिफाइनिंग हब है इसलिए भारत ही अमेरिका को जेट फ्यूल व डीजल की सप्लाई करता है। इसके अलावा इंजीनियरिंग सामान, मशीनरी, ऑटो पार्ट्स, इंडस्ट्रियल इक्विपमेंट, बासमती चावल, हस्तशिल्प, होम डेकोर, चमड़ा और फुटवियर आदि सब कुछ अमेरिका के घरों में 'मेड इन इंडिया' ही मिलते हैं। आयात शुल्क यानी टैरिफ बढ़ने से जब अमेरिकी बाजार में ये भारतीय उत्पाद महंगे होंगे तो निश्चित ही हा-हाकार मचेगा। शायद इसलिए भारत पर अमेरिकी की तरफ से 25 प्रतिशत टैरिफ (आयात शुल्क) लगाने की घोषणा के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का नया बयान आया है। जब उनसे पूछा गया कि क्या वे भारत के साथ टैरिफ पर बातचीत के लिए तैयार हैं? अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा, हम अभी भारत से बात कर रहे हैं। देखते हैं क्या होता है। ट्रंप ने कहा कि भारत दुनिया में सबसे ज्यादा टैरिफ लगाने वाला देश है। डोनाल्ड ट्रंप को भारत-रूस व्यापार भी चुभ रहा है। भारत पर 25 प्रतिशत टैरिफ और जुर्माना लगाने की घोषणा के बाद भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोई प्रेशर नहीं लिया लिहाजा डोनाल्ड ट्रंप को कहना पड़ा कि प्रधानमंत्री मोदी मेरे मित्र हैं, लेकिन व्यापार के लिहाज से वे हमारे साथ बहुत ज्यादा व्यापार नहीं करते। क्योंकि दुनिया में उनका टैरिफ सबसे ज्यादा है।

मुर्दे भी डलते थे बिहार में वोट?

चुनाव आयोग बिहार की मतदाता सूची से 65 लाख से अधिक मतदाताओं का नाम काट देगा, इनमें से 36 लाख लोग पलायन कर चुके हैं, 22 लाख मतदाताओं की मृत्यु हो चुकी है, 7 लाख मतदाताओं के नाम दो जगहों पर वोटर लिस्ट में दर्ज हैं। यानी लोगों ने दो बार वोटर आईडी कार्ड बनवाया है।

डा.वीरेंद्र पुष्पक
वरिष्ठ पत्रकार

विपक्षी दलों की आदत बन गई है कि उन्हें हर सही काम का विरोध करना ही है। बिहार की मतदाता सूची में संसोधन का विरोध सबसे ज्यादा कांग्रेस नेता राहुल गांधी व राजद नेता तेजस्वी यादव कर रहे हैं। उन्होंने चुनाव आयोग पर दबाव बनाने की कोशिश की तो चुनाव आयोग फूट पड़ा। चुनाव आयोग ने न सिर्फ मतदाता सूची संशोधन को लेकर अफवाह फैलाने वालों की क्लास लगाई बल्कि जनमानस का हर कंफ्यूजन भी क्लियर किया। नाराजगी जताते हुए आयोग ने कहा कि कुछ लोग बिहार की मतदाता सूची संशोधन के लिए चलाए जा रहे विशेष अभियान (एसआईआर) के बारे में भ्रामक जानकारी फैलाकर जनता को भ्रमित कर रहे हैं। चुनाव आयोग ने साफ कहा कि अभी जो लिस्ट आई है, वह सिर्फ एक ड्राफ्ट लिस्ट है। लेकिन कुछ लोग इसे फाइनल लिस्ट बता रहे हैं। चुनाव आयोग ने एक नया अपडेट ये भी दिया है अब पूरे देश में मतदाता सूची संशोधन कराया जाएगा। चुनाव आयोग ने स्पष्ट किया कि निर्वाचन पंजीकरण अधिकारी (ईआरओ) के आदेश सहित उचित प्रक्रिया का पालन किए बिना बिहार की मतदाता सूची से किसी का नाम नहीं हटाया जा सकता। ईआरओ के किसी भी निर्णय से असंतुष्ट कोई भी मतदाता जिला मजिस्ट्रेट और मुख्य निर्वाचन अधिकारी के समक्ष अपील कर सकता है। चुनाव आयोग ने कहा कि हम यह समझने में असमर्थ है कि जब 1 अगस्त से 1 सितंबर 2025 तक, पूरा एक महीना लोगों को किसी भी तरह की आपत्ति दर्ज कराने के लिए दिया है तो वे इतना बड़ा हंगामा क्यों कर रहे हैं? चुनाव आयोग ने बिना किसी का नाम लिए कहा कि वे अपने 1.6 लाख बीएलए से 1 अगस्त से 1 सितंबर तक दावे और आपत्तियां मंगवा सकते हैं। आयोग ने लोगों को हर तरह का मौका दिया है। चुनाव आयोग को पहले चरण में 7.24 करोड़ मतदाताओं से फॉर्म मिले हैं। चुनाव आयोग का दावा है कि इनमें से 36 लाख लोग या तो कहीं और चले गए हैं या वे अपने पते पर नहीं मिले। 22 लाख मतदाताओं की मृत्यु हो चुकी है। बिहार के 7 लाख मतदाता ऐसे पाए गए हैं जिनके नाम एक से ज्यादा जगहों पर मतदाता सूची में दर्ज हैं। इसका मतलब है कि कुछ लोगों ने एक से ज्यादा बार वोटर आईडी कार्ड बनवाया है। कुल मिलाकर चुनाव आयोग बिहार की मतदाता सूची से 65 लाख से अधिक मतदाताओं का नाम काट देगा। इससे ही विपक्षी दलों के दिलों की धड़कने बढ़ी हुई हैं, क्योंकि इन्हीं फर्जी वोटों के बल पर इनके उम्मीदवार चुनाव जीतते रहे हैं। यानी 2024 के लोकसभा चुनाव तक बिहार में मुर्दे भी वोट डालते रहे हैं। चुनाव आयोग मानता है कि मतदाता सूची को संशोधित करने से चुनाव में गड़बड़ी होने से बचेगी। चुनाव आयोग का मकसद है कि हर सही मतदाता का नाम लिस्ट में हो और किसी भी गलत आदमी का नाम लिस्ट में न रहे। ताकि चुनाव में पारदर्शिता रहे।

बांग्लादेशी, नेपाली और रोहिंग्या भी वोटर

बिहार विधानसभा चुनाव से पहले चुनाव आयोग द्वारा कराए गए मतदाता सूची गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के दौरान यह बात सामने आ चुकी है कि औसतन हर विधानसभा क्षेत्र में करीब 25 हजार मतदाताओं का नाम कटना तय है। इससे विधानसभा चुनाव की घोषणा से पहले ही राज्य के कई विधायकों की चिंता बढ़ गई है। एसआईआर के तहत गणना प्रपत्र जमा करने की अंतिम तिथि के बाद चुनाव आयोग ने स्पष्ट कहा है कि बिहार की मतदाता सूची से 65 लाख से ज्यादा फर्जी मतदाताओं के नाम हटा दिए जाएंगे। सर्वेक्षण में यह भी पता चला है कि बिहार के सीमांचल जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में जिन लोगों के नाम सूची से हटाए जा रहे हैं, उनमें बांग्लादेशी, नेपाली और म्यांमार के नागरिकों के नाम भी मतदाता सूची में पाए गए हैं, जिन्हें जांच के बाद हटा दिए जाने की पूरी गारंटी है। जबकि एक लाख लोग तमाम खोजबीन के कहीं नहीं मिले हैं। 1.2 लाख लोगों ने फॉर्म जमा ही नहीं किए। इसके अलावा, 22 लाख मतदाताओं की मृत्यु हो चुकी है। 35 लाख मतदाता स्थाई रूप से पलायन कर चुके हैं। यानी बिहार की 243 विधानसभा सीटों में से प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र से औसतन 25,144 नाम हटाने से चुनाव परिणाम पर निश्चित ही बड़ा प्रभाव पड़ेगा, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। विधानसभा चुनाव इसी साल के अंत में होने हैं। 2020 के विधानसभा चुनावों में कई सीटों पर जीत का अंतर बहुत कम था। 2020 के चुनावों में, 11 सीटों पर 1,000 से कम मतों के अंतर से, 35 सीटों पर 3,000 से कम मतों के अंतर से और 52 सीटों पर 5,000 से कम मतों के अंतर से हार-जीत हुई थी। इसलिए ही विपक्षी महागठबंधन जिसमें लालू प्रसाद यादव का राष्ट्रीय जनता दल (राजद) और कांग्रेस सहित कई छोटे दल शामिल हैं, वो इस प्रक्रिया का विरोध कर रहे हैं।

जो लोग घुसपैठ कर बिहार में बसे हैं, उनका वोट भाजपा को हराने के लिए विपक्ष को जाता है, यही कारण है कि इंडिया गठबंधन के घटक दल हो या असदुद्दीन ओवैसी, सबको इस बात का डर है कि मतदाता सूची से यदि इनका नाम कट गया तो उनको राजनीतिक रूप से भारी नुकसान होगा।

महागठबंधन को नुकसान का डर

2020 के विधानसभा चुनाव में महागठबंधन 27 विधानसभा सीट 5,000 से कम मतों से, 18 विधानसभा सीटें 3,000 से कम मतों से और छह सीटें 1,000 से कम मतों से हार गया था। बिहार के मुख्य चुनाव अधिकारी विनोद सिंह गुंजियाल का कहना है कि चुनाव आयोग 99.5 फीसदी मतदाताओं तक पहुंच चुका हैं। यानी 7.9 करोड़ मतदाताओं में से 7.2 करोड़ मतदाताओं के प्रपत्र जमा और डिजिटल किए जा चुके है। केवल 7 लाख मतदाताओं ने अपने प्रपत्र वापस नहीं किए हैं। उनका कहना है 65 लाख मतदाताओं के नाम सूची से हटाए जा सकते हैं, इनमें से 22 लाख मतदाताओं की मृत्यु हो चुकी है, 35 लाख मतदाता स्थाई रूप से बिहार से छोड़ चुके हैं। जबकि 7 लाख मतदाता एक से ज्यादा स्थानों पर मतदाता के रूप में पंजीकृत हैं। 1 लाख मतदाताओं का कोई पता नहीं चल पाया है। बिहार की राजनीति को करीब से जानने वालों का कहना है कि चुनाव आयोग देश में अवैध रूप से बांग्लादेश, नेपाल और म्यांमार से आकर जो लोग बिहार में रह रहे हैं और उन्होंने मतदाता सूची में अपने नाम दर्ज करा लिए हैं, ऐसे लोगों को मतदाता सूची से हटाने की प्रक्रिया शुरू की जा चकी है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि जो भी अवैध रूप से बिहार आकर बसा है, उनका वोट भाजपा को हराने के लिए विपक्ष को जाता है। यही कारण है कि इंडिया गठबंधन के घटक दल हो या असदुद्दीन ओवैसी, इनको इस बात का डर सता रहा है कि मतदाता सूची से यदि इनका नाम कट गया तो उनको राजनीतिक रूप से भारी नुकसान होगा।

2020 के विधानसभा चुनावों में कई सीटों पर जीत का अंतर बहुत कम था, 2020 के चुनावों में, 11 सीटों पर 1,000 से कम मतों के अंतर से, 35 सीटों पर 3,000 से कम मतों के अंतर से और 52 सीटों पर 5,000 से कम मतों के अंतर से हार-जीत हुई थी।

डेमोग्राफी चेंज हो चुकी है बिहार की

राज्य के सीमांचल के इलाके में बांग्लादेशी घुसपैठियों का मामला वर्षों से सामने आ रहा है। पिछले 30 वर्षों में पूरे सीमांचल की डेमाग्राफी चेंज हो चुकी है। किशनगंज, अररिया, कटिहार और पूर्णिया में अल्पसंख्यकों की आबादी 40 फीसदी से 70 फीसदी तक हो चुकी है। यही कारण है कि वर्षों से इस इलाके में बांग्लादेशी घुसपैठियों की रोक की मांग उठती रही है। कई इलाकों से हिंदुओं के पलायन की भी खबर आती हैं। केंद्र सरकार ने जब पूरे देश में एनआरसी लागू करने की बात कही थी तब भी बिहार के इसी इलाके से विरोध के सुर उठे थे। इसी क्षेत्र में 2020 के बिहार विधानसभा चुनावों में राजद का वोट शेयर बढ़ा था। राजद को 23.11 फीसदी वोट मिले थे। जबकि भाजपा को 19.46 प्रतिशत ही वोट मिले थे। जदयू के खाते में 15.42 प्रतिशत वोट आए थे। 2024 के लोकसभा चुनाव में बिहार में भाजपा और जदयू ने 12-12 सीटें जीती थी। राजद को शून्य से 4 सीटें मिली थीं, जबकि कांग्रेस ने 3 सीटों पर कब्जा किया था। चिराग पासवान की लोजपा (रा) ने 5 सीटें जीती थीं। भाकपा (माले) ने भी 2 सीटों पर जीत हासिल की थी। जबकि एक-एक सीट पर हम और निर्दलीय प्रत्याशी जीते थे। बिहार में कराए गए जाति आधारित सर्वेक्षण के आंकड़ों के अनुसार बिहार में करीब 17.70 फीसदी मुस्लिम मतदाता हैं। बिहार की 243 विधानसभा सीटों में से 47 सीटें ऐसी हैं, जहां मुस्लिम मतदाता हार-जीत का फैसला करते हैं। इन विधानसभा क्षेत्रों में मुस्लिम आबादी 20 से 40 प्रतिशत या इससे अधिक है। बिहार की 11 सीटें ऐसी हैं जहां 10 से 30 फीसदी के बीच मुस्लिम मतदाता हैं। चुनाव विशेषज्ञों का मानना है कि अगर 65 लाख मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से कट जाएंगे तो विपक्ष का मुकाबला कमजोर होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। यही डर विपक्षी दलों को सता रहा है और सड़क से लेकर संसद तक हंगामा किया जा रहा है।

एनडीए को हो सकता है फायदा

विपक्षी महागठबंधन मतदाता सूची संशोधन को गरीब, दलित और प्रवासी मजदूरों के वोटिंग अधिकारों पर हमला बता रहा है। राजद नेता तेजस्वी यादव ने चेतावनी दी कि 1 प्रतिशत वोट की कटौती भी प्रति सीट 3,200 मतदाताओं को प्रभावित कर सकती है। जो 2020 में 35 सीटों के अंतर से अधिक है। राजद का वोट बैंक मुख्य रूप से यादव, मुस्लिम और दलित समुदाय है जो ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर क्षेत्रों, सीमांचल और कोसी क्षेत्र में हैं। इन क्षेत्रों में दस्तावेजों की कमी और प्रवास की अधिकता के कारण मतदाता सूची से नाम हटने की संभावना ज्यादा है। उदाहरण के लिए, किशनगंज, अररिया और पूर्णिया जैसे जिलों में आधार कार्ड धारकों की संख्या आबादी से अधिक पाई गई जिसे फर्जी या अपात्र मतदाताओं का संकेत माना गया। इसके विपरीत, एनडीए का वोट बैंक अपेक्षाकृत शहरी और मध्यम वर्गीय है जो दस्तावेजीकरण में बेहतर स्थिति में है। शहरी क्षेत्रों में विशेष शिविरों और चुनाव आयोग के पोर्टल के जरिए मतदाता पंजीकरण को आसान बनाया गया है जिसका लाभ एनडीए समर्थकों को मिल सकता है। सोशल मीडिया पर कुछ दावे हैं कि यह प्रक्रिया भाजपा के पक्ष में हो सकती है, क्योंकि उनके मतदाता आधार को कम नुकसान होने की संभावना है। मतदाता सूची संशोधन से कांग्रेस और अन्य छोटे सहयोगी दल भी प्रभावित हो सकते हैं, क्योंकि उनका दलित और अल्पसंख्यक वोट बैंक भी ग्रामीण क्षेत्रों में है। सांसद पप्पू यादव जैसे नेताओं की सीमांचल में मजबूत पकड़ को झटका लग सकता है, अगर उनके समर्थक मतदाता सूची से बाहर हो जाते हैं। शायद इसलिए भी राजद नेता तेजस्वी यादव विधानसभा चुनाव के बहिष्कार की धमकी देकर चुनाव आयोग के कदम रोकना चाहते हैं, लेकिन उनकी धमकियों को किसी पर कोई असर हो ही नहीं रहा है और चुनाव आयोग की प्रक्रिया बरकरार है और रहेगी।

देश भर में चले ऑपरेशन कालनेमि

पुष्कर सिंह धामी साफ कहा कि 'ऑपरेशन कालनेमि' केवल सुरक्षा अभियान नहीं, बल्कि आस्था, सनातन संस्कृति और देवभूमि की दिव्यता की रक्षा का संकल्प है, राज्य सरकार देवभूमि की पवित्रता और सांस्कृतिक अस्मिता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है।

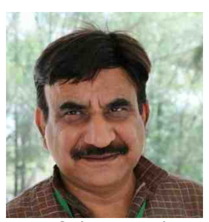

दिनेश मानसेरा
वरिष्ठ पत्रकार

सनातन धर्म और हिंदू संस्कृति पर प्रहार की घटनाएं आए दिन सामने आती रहती हैं, किंतु जिस तरह से उत्तराखंड सरकार ने 'ऑपरेशन कालनेमि' शुरू किया है, उसने कुछ ही दिनों में यह सच्चाई सभी के सामने ला दी है कि सनातन को बदनाम करने के एक षड्यंत्र में छद्म साधु का वेश धारण करना भी शामिल है। पहचान छिपाकर सनातनियों की आस्था को खंडित करना है। जिस तरह उत्तराखंड में 'ऑपरेशन कालनेमि' शुरू किया गया उसी तरह इसे पूरे देश में शुरू करने की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है। क्योंकि मथुरा में श्रीबांके विहारी मंदिर के गेट नंबर 1 के पास बनी झुग्गी में 10 मुस्लिम सावन के पवित्र मास में मांस पकाते व खाते मिले। श्रीबांके विहारी गौसेवा संस्थान की शिकायत पर पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया, जबकि नौ आरोपी फरार हो गए। मेरठ में तो इससे भी ज्यादा चौकाने वाला मामला सामने आया। यहां दौराला थाना क्षेत्र के दादरी गांव में बिहार का कासिम खान पहचान बदल कर मंदिर का पुजारी बन गया। उसने अपना नाम कृष्ण कुमार रख लिया और हनुमान चालीसा से लेकर तमाम मंत्रों का कंठस्थ कर लिया। वो मंदिर में आने वाले तमाम लोगों की हाथ की रेखाएं देखकर भविष्य भी बताने लगा, लेकिन दानपात्र से पैसे चुराने की उसकी आदत ने उसके चेहरे से नकाब उतार दिया। अब वो सलाखों के पीछे है। उसके खिलाफ पुलिस जांच कर रही है कि कहीं कासिम मंदिर का पुजारी बनकर धर्मांतरण का खेल तो नहीं खेल रहा था। वो कहीं धर्म परिवर्तन कराने वाले किसी गैंग का सदस्य तो नहीं है। इसलिए भी सनातन के विरुद्ध साजिश रचने वालों के खिलाफ 'ऑपरेशन कालनेमि' की जरूरत है। वैसे इस्लाम में बुत पूजा करना हराम है, सबसे बड़ा गुनाह है, लेकिन कट्टरपंथियों ने बुत पूजा करने वाले मुस्लिमों के खिलाफ आज तक न तो फतवा जारी किया और न ही उन्हें काफिर घोषित किया है।

एक आस्थावन सनातनी भगवाधारी साधु या संत को देखकर अपनी क्या प्रतिक्रिया देगा, यह सभी को पता है। किंतु बदले में उसे क्या मिलेगा, यह अहम सवाल है? दरअसल 'कालनेमि' रामायण काल का एक मायावी राक्षस था, जिसने छद्मवेष धारण कर 'संजीवनी' लेने जा रहे हनुमानजी का रास्ता रोकने की कोशिश की थी। रामायण की सुप्रसिद्ध मायावी राक्षसनी ताड़का उसकी दादी थी व मायावी मारीच उसका पिता

मथुरा में श्रीबांके विहारी मंदिर के पास मुस्लिम मांस पकाते व खाते मिले, मेरठ के दादरी गांव में बिहार का कासिम पहचान बदल कर मंदिर का पुजारी बन गया, उसने अपना नाम कृष्ण रखकर हनुमान चालीसा से लेकर कई मंत्र कंठस्थ कर लिए, मंदिर में आने वालों के हाथ की रेखाएं देखकर भविष्य बताने लगा।

था। 'कालनेमि' अपनी मायावी शक्ति से किसी तरह का भी रूप धारण कर सकने में सक्षम था, इसलिए रावण ने उसे यह महत्वपूर्ण काम सौंपा कि वह किसी भी हाल में हनुमानजी को हिमालय से 'संजीवनी' न लाने दे। ताकि लक्ष्मण की बेहोशी मृत्यु में बदली जा सके। सनातन संस्कृति को बदनाम करने पर आमादा हैं। धर्मनगरी हरिद्वार सनातन के मानने वालों के लिए आस्था का केंद्र है। लिहाजा जब 'ऑपरेशन कालनेमि' चला तो पता चला कि 'कालनेमियों' ने धर्मनगरी को अर्धम का अड्डा बना रखा है। असल 'कालनेमि' की तरह ये ढोंगी छद्मवेश धारण कर सनातन धर्म की खोज, पुण्य की खोज और आध्यात्म के जरिये अपने आप को प्राप्त करने के लिए भगवान की शरण में देवभूमि या अन्य धर्मस्थलों पर आने वालों को किसी न किसी रूप में भटकाने का प्रयास कर रहे हैं। उनका रास्ता रोकने का काम कर रहे हैं और सनातन को नुकसान पहुंचाते हैं। इसलिए उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी ने दो टूक कहा कि उत्तराखड की पुण्य एवं पावन भूमि पर किसी भी प्रकार का ढोंग, छल-प्रपंच या धार्मिक आवरण में छिपा अपराध सहन नहीं किया जाएगा। पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि 'ऑपरेशन कालनेमि' केवल सुरक्षा अभियान नहीं, बल्कि आस्था, सनातन संस्कृति और देवभूमि की दिव्यता की रक्षा का संकल्प है। राज्य सरकार देवभूमि की पवित्रता और सांस्कृतिक अस्मिता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है। सावन मास और चारधाम यात्रा के दौरान यह अभियान और अधिक सतर्कता व गंभीरता के साथ चलाया गया है। ताकि लव जिहाद, लैंड जिहाद और धर्मांतरण जैसी गतिविधियों पर अंकुश लगाया जा सके। देवभूमि के संतों ने 'ऑपरेशन कालनेमि' का समर्थन करते हुए स्पष्ट कहा कि यह ऑपरेशन किसी साधु या संत के खिलाफ नहीं है, बल्कि उन लोगों के खिलाफ है जो साधु-संत के रूप में समाज को ठग और लूट रहे हैं। इसलिए यह ऑपरेशन बहुत महत्वपूर्ण है। सभी सनातनियों को इस ऑपरेशन का समर्थन करना चाहिए। जूना अखाड़े के महामंडलश्वर स्वामी यतींद्र आनंद गिरी जी महाराज ने कहा है कि ये सनातन के खिलाफ बड़ा षडयंत्र हो सकता है इसकी गहराई से जांच की जानी चाहिए। कुल मिलाकर उत्तराखंड में कालनेमियों की अब खैर नहीं है। शायद इसलिए ही पुलिस का एक्शन शुरू होते ही 'कालनेमियों' में भगदड़ मची है। लेकिन पुलिस को यह अभियान लगातार चलाना होगा, ताकि उत्तराखंड छोड़ने वाले ये ढोंगी बाबा फिर यहां ठिकाना न बना सकें।

असली नकली में अंतर बड़ी चुनौती

उत्तराखंड के आईजी अपराध एवं कानून व्यवस्था नीलेश आनंद भरणे का कहना है कि पुलिस संदिग्धों से पूछताछ और सत्यापन का काम कर रही है। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने प्रदेश में धार्मिक और सांस्कृतिक पवित्रता बनाए रखने के लिए 'ऑपरेशन कालनेमि' चलाने का निर्देश दिया है। पुलिस अधीक्षक और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रैंक के सभी अधिकारियों को भगवा वेश धारण करने वाले शरारती तत्वों की पहचान करने का निर्देश दिया है। उनका कहना है कि सावन के पवित्र महीने में भगवान शिव के भक्तों का सैलाब उत्तराखंड में उमड़ता है। कांवड़ यात्रा के बीच साधु-संतों के वेशभूषा में असामाजिक तत्व सक्रिय होते हैं। इनका धर्म से कोई नाता नहीं होता है। इन छद्म वेशधारियों को पुलिस ठगी, धोखाधड़ी और धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के आरोप में गिरफ्तार कर रही है। ये ढोंगी बाबा ठगी और धोखाधड़ी के अलावा भ्रामक गतिविधियों में संलिप्त हो सकते हैं। जिससे सनातन परंपरा की छवि को नुकसान हो सकता है। सामाजिक समरसता में बाधा डाली जा सकती है, धार्मिक भावनाओं को आहत किया जा सकता है। सनातन में आस्था रखने वालों का विश्वास तोड़ने की कोशिश हो सकती है। पहचान छिपाकर आस्था को चोट पहुंचाई जा सकती है। उन्होंने 'ऑपरेशन कालनेमि' का उद्देश्य बताते हुए कहा कि इसके माध्यम से लोगों को धोखाड़ी से बचाना है। असामाजिक तत्वों की पहचान कर उन्हें कानून के अनुसार सजा दिलाना है। सांप्रदायिक सद्भाव को बनाए रखना है। अनैतिक गतिविधियों पर लगाम लगाना है। धर्म के नाम पर ठगी को रोकना है। धोखेबाजों को उनके सही ठिकाने पर पहुंचाना है। पुलिस अफसरों के इस तरह के बयान तो अच्छ लगते हैं, लेकिन असली और फर्जी बाबा या साधु संत की पहचान कैसे होगी? क्योंकि उत्तराखंड के 'ऑपरेशन कालनेमि' पर सबसे बड़ा सवाल यही है। पुलिस अधिकांश मामलों में सिर्फ दस्तावेज और लोगों की शिकायत के आधार पर एक्शन ले रही है। मगर बहुत से लोग सिर्फ धार्मिक आस्था के आधार पर भगवा धारण करते हैं। उनके पास धर्म का व्यापक ज्ञान

आपरेशन में 20 साल से लापता मुरादाबाद जिले के बिलारी का जितेंद्र पुत्र कुंवरपाल साधु वेश में मिला तो रुड़की पुलिस ने बिलारी पुलिस के माध्यम से उसके परिवार से संपर्क किया और बताया कि जितेंद्र को 'ऑपरेशन कालनेमि' के दौरान पकड़ा गया है, इस खबर पर परिजने रुड़की पहुंचे और जितेंद्र को देखकर खुशी से रो पड़े।

भी नहीं होता है। वह जीवन पद्धति के तौर पर इसे स्वीकारते हैं। कुछ बुजुर्ग एक निश्चित उम्र के बाद साधु के तौर पर रहना पसंद करते हैं। ऐसे में पुलिस के सामने असली अनुयायी और छद्म वेशधारियों के बीच अंतर करने की बड़ी चुनौती है।

20 साल से लापता जितेंद्र बरामद

हरिद्वार में ही बांग्लादेशी नागरिक रुकन राकम उर्फ शाह आलम ने जटा धारण कर रखी थी, तिलक लगाता था वह खुद को शिव योगी बताता था। इसी तरह से अन्य अपराधी और ठग पकड़े गए हैं, जो भगवा पहन कर साधू के वेश में सनातनियों को ठग रहे थे। इनमें उत्तर प्रदेश के हरदोई के बोडिग गांव का मोहम्मद अहमद पुत्र रहूफ, जिला राजगढ़ के नरसिंहगढ़ फूलबाग वार्ड 7 का रशीद पुत्र बपाती, पश्चिम बंगाल के कड़ाया कोलकाता का मोहम्मद इमरान पुत्र मोहम्मद इस्लाम, बिहार के पखरी बेलवारी वार्ड 13 का मोहम्मद जैनउद्दीन पुत्र शेख अब्बास हरिद्वार के कलियर पिरान का मोहम्मद सलीम, बिहार के सारसा पिपड़पाती का ईजाजूल पुत्र अब्दुल कादिर उत्तर प्रदेश के कुरड़ी खेड़ा का मोहम्मद याकूब पुत्र मकेसुद्दीन, यूपी के सहारनपुर जिले के नवाबगंज का जैद पुत्र गुलजार जैसे कालनेमियों को गिरफ्तार कर सलाखों के पीछे पहुंचाया जा चुका है। उत्तराखंड पुलिस ने जुलाई में 13 जिलों में 2848 संदिग्ध साधुओं की जांच की। इनमें से 377 संदिग्ध रूप में चिह्नित कर उनके चालान किए गए। 240 से अधिक फर्जी बाबाओं को गिरफ्तार किया गया। इस आपरेशन के दौरान 20 साल से लापता एक व्यक्ति भी साधु वेश में मिला जिसे उसके परिवार के सुपुर्द किया गया। हरिद्वार जिले में रुड़की के पिरान कलियर में पुलिस ने ढोंगी बाबाओं के भेष में तंत्र मंत्र, जादू-टोने की कला दिखाकर भीड़ को आकर्षित करने वाले तीन बाबाओं को पकड़ा था। पुलिस ने उनकी पहचान संबंधी कागजात तलब किए, लेकिन वह कोई भी कागजात नहीं दिखा पाए। पुलिस को जितेंद्र का मामला कुछ संदिग्ध लगा। इसके बाद पुलिस ने अपने स्तर से जितेंद्र पुत्र कुंवरपाल की कुंडली खंगाली तो पुलिस को पता चला कि जितेंद्र मूल रूप से यूपी के मुरादाबाद जिले के बिलारी थाना क्षेत्र का रहने वाला है। वो बीते 20 सालों से अपने परिजनों से बिछड़ा हुआ है। जितेंद्र के परिजन 2005 से उसकी तलाश कर रहे है। रुड़की पुलिस ने बिलारी थाना पुलिस से जितेंद्र के परिजनों का नंबर लिया और उनसे संपर्क किया। जैसे ही परिजनों को पता चला कि जितेंद्र सही सलामत है तो उनकी खुशी की ठिकाना नहीं रहा। इसके बाद जितेंद्र के परिजन रुड़की पहुंचे और पुलिस से मिले। 20 साल बाद जितेंद्र को अपने सामने सही सलामत देखकर परिजनों के आंसू नहीं रुके। पुलिस ने जितेंद्र को उसके परिजनों से सुपुर्द कर दिया। परिजनों और जितेंद्र ने घर लौटते समय उत्तराखंड पुलिस का शुक्रिया अदा किया। जितेंद्र का इकलौता मामला है कि उसे जेल भेजने की बजाये परिवार के सुपुर्द किया गया।

फर्जी मौलाना मोम्मद याकूब को गिरफ्तार

देहरादून जिले में लगातार चलाए जा रहे आपरेशन कालनेमि एवं देहरादून पुलिस की सख्ती का असर ये रहा कि पुलिस की कार्रवाई के भय से फर्जी बाबा (कालनेमि) देहरादून को छोड़कर भागने लगे हैं। पुलिस ने विशेषकर महिलाओं और युवाओं को भ्रमित कर उनकी व्यक्तिगत या घरेलू समस्याओं का निदान करने का झांसा देकर ठगने वालों पर सख्त कार्रवाई की है। पुलिस ने ऑपरेशन कालनेमि के अंतर्गत एक फर्जी मौलाना मोम्मद याकूब को गिरफ्तार किया है। मोहम्मद याकूब लोगों के बीच भ्रम फैलाकर और उनको डरा धमकाकर मदरसे के नाम पर चंदा वसूलता था और लोगों से मिले चंदे को खुद डकार जाता था। मोहम्मद याकूब पीलीभीत जिले के रड़ीखेड़ा थाना क्षेत्र के रानीगंज मखना गांव का निवासी है। वो जादू- टोना अथवा दैवीय प्रकोप का भय दिखा कर लोगों के साथ ठगी भी करने में लिप्त पाया गया। देहरादून पुलिस जुलाई में 191 ढोंगी बाबाओं को गिरफ्तार कर चुकी है।

धनखड़ की ये कैसी विदाई

संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने संसद का मानसून सत्र शुरू होने से 4-5 दिन पहले उपराष्ट्रपति को सूचित कर दिया था कि सरकार दोनों सदनों में जस्टिस यशवंत वर्मा के खिलाफ प्रस्ताव ला रही है, सरकार ने लोकसभा में विपक्षी दलों को भी शामिल करके प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करवा लिए हैं।

एचपी शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

राज्यसभा में रिटायर होने वाले या त्यागपत्र देने वाले सदस्यों की विदाई बड़ी धूमधाम से होती रही है, डिनर दिया जाता रहा है, आपको याद होगा जब कांग्रेस से राज्यसभा सांसद गुलामनवी आजाद रिटायर हुए थे तब खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनके विदाई के समय आजाद के राजनीतिक जीवन की प्रशंसा की थी, लेकिन जिन जगदीप धनखड़ को भाजपा के समर्थन से उपराष्ट्रपति बनाया गया था उनके इस्तीफे के बाद न तो कोई विदाई कार्यक्रम हुआ और न ही किसी ने कोई भोज दिया, यानी एक तरह से धनखड़ के लिए यह स्थिति असमान्य ही कही जाएगी। वैसे दूसरे दलों को छोड़ कर भाजपा में आने वालों ने भाजपा के साथ विश्वासघात ही किया है। लोकदल से राजनीति की शुरुआत करने वाले जगदीप धनखड़ लोकदल, कांग्रेस और एनसीपी छोड़कर भाजपा में शामिल हुए थे। ऐसे ही पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक जो जनता दल व समाजवादी पार्टी से होते हुए भाजपा में आए थे। ये दोनों वो नेता हैं जिनकी मूल विचारधारा भाजपा या संघ से बिल्कुल मेल नहीं खाती थी। इसलिए इन दोनों ने भाजपा के साथ विश्वासघात ही किया। पहले पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक भाजपा में रहते हुए भाजपा के ही खिलाफ बयानबाजी करने लगे थे। कई मौकों पर उपराष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति के पद पर रहते हुए जगदीप धनखड़ ने भी ऐसे बयान दिए और काम किए जिससे भाजपा और केंद्र सरकार को असहजता का सामना करना पड़ा। अब तो राज्यसभा के सभापति व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ भाजपा की विचारधारा को छोड़कर विपक्षियों की भाषा बोलने लगे और विपक्ष को तवज्जो देने लगे थे। लिहाजा उनकी जिस तरह अचानक उपराष्ट्रपति पद से विदाई हुई वो अप्रत्याशित है। क्योंकि मानसून सत्र के पहले दिन सभापति के रूप में जगदीप धनखड़ ने दिन भर राज्यसभा की कार्रवाई में हिस्सा लिया, शाम को चार बजे के बाद धनखड़ ने खुद ऐसी स्थिति पैदा कर दी जिसने उन्हें उपराष्ट्रपति के पद से स्वास्थ्य कारण बताकर इस्तीफा देना पड़ा। हालांकि धनखड़ अस्वस्थ तो थे, लेकिन पद पर रहते जो उपचार उन्हें मिलता रहा, वो शायद पूर्व उपराष्ट्रपति के तौर पर न मिल पाए। वैसे जुलाई में धनखड़ जब दो दिन के नैनीताल दौरे पर आए थे, तब भी उनका स्वास्थ्य खराब हो गया था। लिहाजा उन्होंने कार्यक्रम बीच में ही छोड़ दिया था। इस लिहाज से स्वास्थ्य एक कारण हो सकता है, लेकिन पहला कारण तो मोदी सरकार को असहज करने वाला ही माना जा रहा है। क्योंकि त्यागपत्र की पूरी कहानी भ्रष्टाचार का सामना कर रहे जस्टिस यशवंत वर्मा के आसपास घूमती है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने संसद का मानसून सत्र शुरू होने से 4-5 दिन पहले उपराष्ट्रपति को सूचित कर दिया था कि सरकार लोकसभा और राज्यसभा में जस्टिस यशवंत वर्मा के खिलाफ प्रस्ताव ला रही है। सरकार ने लोकसभा में विपक्षी दलों को भी शामिल करके प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करवा लिए हैं। इस बीच 20 जुलाई और 21 जुलाई को विपक्ष के कुछ नेता उपराष्ट्रपति से मिलने पहुंचे और जस्टिस वर्मा के खिलाफ प्रस्ताव लाने को लेकर लम्बी चर्चा की।

विपक्ष के करीब जा रहे थे धनखड़

अंतिम सच्चाई जो सामने आई वह विश्वासघात की नई दास्तान है। तो क्या जगदीप धनखड़ ने मोदी सरकार से विश्वासघात किया? क्या उन्होंने विपक्ष के साथ मिलकर कोई नया गुल खिलाने की कोशिश की? जिससे असहज सरकार को उनसे इस्तीफा लेना पड़ा। क्या सरकार के पास इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं बचा था। दरअसल केंद्र की मोदी सरकार दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस रहे यशवंत वर्मा के खिलाफ लोकसभा के मानसून सत्र में महाभियोग लेकर आने वाली थी। सरकार की योजना थी कि लोकसभा स्पीकर की अगुवाई में जस्टिस यशवंत वर्मा को हटाने की प्रक्रिया होनी चाहिए। लेकिन मानसून सत्र के पहले ही दिन राज्यसभा में वो हुआ, जिसने भाजपा व सरकार को हिला कर रख दिया। राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने अचानक राज्यसभा में जस्टिस वर्मा के खिलाफ विपक्ष द्वारा लाए गए महाभियोग के नोटिस को स्वीकार कर लिया। इस नोटिस पर सिर्फ विपक्ष के 63 सांसदों के हस्ताक्षर थे। धनखड़ ने ये सब तब किया, जब राज्यसभा में नेता सदन जेपी नड्डा और वरिष्ठ मंत्री अनुपस्थित थे। सिर्फ कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल और जी किशन रेड्डी ही थे, जो अचानक विपक्ष का प्रस्ताव स्वीकार किए जाने से हक्का-बक्का रह गए। उनके चेहरे की हवाइयां उड़ गई। क्योंकि राज्यसभा के सभापति ने केंद्र को बताए बिना विपक्ष का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था। जबकि सरकार लोकसभा के माध्यम से जस्टिस यशवंत वर्मा को हटाने की प्रक्रिया का नेतृत्व कर न्यायिक सुधार का बड़ा उदहारण पेश करना चाहती थी। यानी धनखड़ ने राज्यसभा के माध्यम से विपक्ष को शामिल कर जस्टिस वर्मा को बचाने की पिच तैयार कर दी। क्योंकि विपक्ष के कई नेता जस्टिस वर्मा को हटाने के विरोध में बोल चुके थे। हालांकि ये वही धनखड़ हैं जो कुछ दिन पहले मीडिया के सामने न्यायिक व्यवस्था के खिलाफ हुंकार भर रहे थे, लेकिन कुछ ही दिनों बाद राज्यसभा में विपक्ष के एजेंडे को बढ़ाकर जस्टिस वर्मा को बचाने की प्रक्रिया का हिस्सा बन गए। विपक्ष का प्लान प्रयागराज हाईकोर्ट के जज जस्टिस शेखर यादव को हटाने के लिए महाभियोग लाने का था, जिन्होंने विश्व हिंदू पारिषद (वीएचपी) के एक कार्यक्रम में कहा था कि यह देश कठमुल्लों से नहीं चलेगा। सभापति धनखड़ विपक्ष के इस प्रस्ताव को भी स्वीकार करने को तैयार थे। मानसून सत्र के दूसरे दिन विपक्ष का यह प्रस्ताव आना था। सरकार को इसकी भी कोई जानकारी नहीं थी। इसलिए माना जाने लगा कि उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ अब सरकार के विश्वासपात्र नहीं रहे। शायद इसलिए धनखड़ का अचानक स्वास्थ्य संबंधी समस्या पैदा हुई और उन्हें अचानक त्यागपत्र देना पड़ा। जिस तरह उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की विदाई हुई उससे उन्हें अब एहसास हुआ होगा कि संवैधानिक पद रहकर राजनीति करना कितना घातक होता है?

सरकार जिस जस्टिस शेखर यादव को बचाने में लगी थी, धनखड़ सरकार को बताए बिना उन्हें हटाने की साजिश रच रहे थे और विपक्ष से मिलकर जस्टिस शेखर यादव को हटाने की प्रक्रिया शुरू करने वाले थे और 500-500 रुपये के नोटों से भरे बोरे के मामले में फंसे जस्टिस यशवंत वर्मा को बचाना चाहते थे।

विपक्ष की साजिश का हिस्सा बने

केंद्र सरकार जिस जस्टिस शेखर यादव को बचाने में लगी थी, धनखड़ सरकार को बताए बिना विपक्ष के महाभियोग प्रस्ताव को राज्यसभा में स्वीकार कर जस्टिस शेखर यादव को हटाने की प्रक्रिया शुरू करने वाले थे। यानी धनखड़ विपक्ष की साजिश का हिस्सा बन गए थे, जिसके तहत 500-500 रुपये के नोटों से भरे बोरे के मामले में फंसे जस्टिस यशवंत वर्मा को बचाया जाना था और संघ के आनुवांशिक संगठन वीएचपी के मंच से हिंदुत्व की हुंकार भरने वाले जस्टिस शेखर यादव को हटाया जाना था। ये सब उस भाजपा की सरकार में किए जाने का षड्यंत्र था, जो भाजपा आरएसएस का ही आनुवंशिक संगठन है। जरा सोचिए कि ये आरएसएस, भाजपा, विश्व हिंदू परिषद और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए कितनी शर्म की बात होती कि विश्व हिंदू परिषद के मंच से हिंदुत्व की बात करने वाले जस्टिस को भाजपा की सरकार में विपक्ष द्वारा भाजपा के बनाए उपराष्ट्रपति के सहयोग से हटा दिया गया? विपक्ष पिछले दो-तीन महीने से आक्रामक था क्योंकि राज्यसभा के सभापति शायद उनके अपने हो चुके थे। संभवतः विपक्ष की योजना थी कि राज्यसभा में सरकार के बिल रोके जाएंगे और सरकार को देश के सामने शर्मशार किया जाएगा। जगदीप धनखड़ का विपक्षी प्रेम इसलिए भी जगजाहिर होने लगा क्योंकि वो सरकार और भाजपा को कटघरे में खड़ा करने लगे थे।

अज्ञातवास काट रहे धनखड़ का सितारा 2019 में तब चमका जब नरेंद्र मोदी और अमित शाह ने जगदीप धनखड़ को पश्चिम बंगाल का गवर्नर बनाया, इसके बाद धनखड़, टीवी व अखबारों की सुर्खियों पर छा गए, क्योंकि उनके राजभवन पहुंचने के साथ ही ममता बनर्जी से उनका टकराव दिखने लगा था।

उन्होंने दो बार अलग-अलग मंचों से किसानों के मुद्दे पर सरकार की आलोचना की, बाद में केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने डेमेज कंट्रोल किया। आम आदमी पार्टी के राज्य सभा सांसद राघव चडढा को विशेषाधिकार समिति के मामले में धनखड़ ने ही क्लीन चिट दी थी। राघव चड्ढा को उनकी योग्यता से बड़ा बंगला अलॉट किया गया, बाद में जब उसे कैंसिल किया गया तो चड्ढा ने कोर्ट से स्टे ले लिए, मामला कोर्ट में है। जस्टिस यशवंत वर्मा के भ्रष्टाचार के मुद्दे पर धनखड़ ने सुप्रीम कोर्ट की आलोचना की जिसकी वजह से धनखड़ विवादों में रहे। राज्यसभा में विपक्ष के नेताओं को ज्यादा तरजीह देने के आरोप उन पर लगे, ये सब तब होने लगा, जब विपक्ष ने धनखड़ के खिलाफ महाभियोग लाने की धमकी दी।

कांग्रेस के करीबी रहे धनखड़

धनखड़ कभी राजीव गांधी के करीबी माने जाते थे। लेकिन 1999 में शरद पवार ने कांग्रेस छोड़कर राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) बनाई तो जगदीप धनखड़ भी कांग्रेस छोड़ कर शरद पवार की पार्टी में चले गए। हालांकि वो एनसीपी में ज्यादा दिन नहीं टिके और 2000 में धनखड़ ने भाजपा का दामन थाम लिया। लेकिन भाजपा में आकर जगदीप धनखड़ को कुछ खास नहीं मिला। उन्होंने जब भाजपा ज्वाइन की तब वो वसुंधरा राजे के करीबी माने जाते थे, किंतु माना जाता है कि समय के साथ ये करीबी दूरी में बदल गई और वसुंधरा राजे ने धनखड़ को हासिये पर पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इसलिए अटल बिहारी वाजपेयी गुट के नेता भी धनखड़ को पसंद नहीं करते थे। अज्ञातवास काट रहे धनखड़ का सितारा 2019 में तब चमका, जब नरेंद्र मोदी और अमित शाह ने जगदीप धनखड़ को पश्चिम बंगाल का गवर्नर बनाया। इसके बाद धनखड़, टीवी और अखबारों की सुर्खियों पर काबिज हो गए। क्योंकि धनखड़ के राजभवन पहुंचने के साथ ही ममता बनर्जी से उनका टकराव दिखने लगा था। ममता सरकार के आरोप थे कि राज्यपाल धनखड़ 'भाजपा के एजेंट' की तरह काम कर रहे हैं। इससे धनखड़ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह की फेवरेट लिस्ट में आ गए। 11 अगस्त को जगदीप धनखड़ ने देश के 14वें उपराष्ट्रपति के रूप में शपथ ली। लेकिन राज्यसभा में सभापति के रूप में वो भाजपा को असहज करने लगे। शायद इसलिए धनखड़ ऐसे दूसरे उपराष्ट्रपति है जो अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाए और तीन साल पूरे होने में जब 20 दिन बाकी थे उन्हें उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा देना पड़ा।

उपराष्ट्रपति बनने की कहानी

जिस तरह जगदीप धनखड़ राज्यपाल से उपराष्ट्रपति बने उसी रहस्यमयी तरीके से उनका त्यागपत्र आया। हालांकि जगदीप धनखड़ के उपराष्ट्रपति की कुर्सी तक पहुंचने की भी कई कहानियां हैं। भाजपा में शामिल होने के बाद जब वो पार्टी में उपेक्षित थे तब खाली समय में वह पार्टी से ज्यादा आरएसएस के नजदीक हो गए थे। आरएसएस के अधिवक्ता एसोसिएशन के गठन में भी धनखड़ का अहम रोल रहा था। 2022 में उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के ऐलान से करीब 10 दिन पहले धनखड़ अपनी पत्नी के साथ जयपुर एक शादी समारोह में शामिल होने राजस्थान गए थे। इसी दौरान संघ प्रमुख मोहन भागवत राजस्थान के दौरे पर थे, उन्हें झुंझुनू भी जाना था। शादी समारोह में शामिल होने के बाद धनखड़ तो कोलकाता राजभवन लौट गए, लेकिन उनकी पत्नी झुंझुनू गईं। मोहन भागवत झुंझुनू में धनखड़ के घर भी गए। धनखड़ की पत्नी ने उनकी आवभगत की। जगदीप धनखड़ की पत्नी सुदेश धनखड़ ने तब मीडिया को बताया था कि उस दिन मोहन भागवत से उपराष्ट्रपति चुनाव के बारे में उनकी कोई बात नहीं हुई। इस बारे में पहले उन्हें कोई जानकारी नहीं थी, 16 जुलाई की सुबह 9 बजे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने का फोन आया और धनखड़ को उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित कर दिया गया। 6 अगस्त को धनखड़ ने कांग्रेस उम्मीदवार मार्गरेट अल्वा को हराकर उपराष्ट्रपति पद का चुनाव जीता था। ●

मोदी ने कांग्रेस को धोया

एक तरफ भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है, वहीं कांग्रेस मुद्दों के लिए पाकिस्तान पर निर्भर होती जा रही है, दुर्भाग्य से कांग्रेस पाकिस्तान से मुद्दे आयात कर रही है, पाकिस्तान के सभी बयानों और यहां हमारा विरोध करने वालों के बयानों को देख लीजिए, वे फुल स्टॉप और कोमा के साथ बिल्कुल एक जैसे हैं।

केके चौहान

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी हों या समाजवादी पार्टी के सांसद अखिलेश यादव अथवा कोई अन्य अपोजिशन लीडर जिसने भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ को चुनौती दी उसने खुद अपने वोटबैंक का नुकसान किया। विपक्ष ने चेलेंज किया था कि कि सरकार सीएए लागू करके दिखाए, केंद्र सरकार ने कर दिया। फिर चेलेंज किया कि तीन तलाक समाप्त करके दिखाओं वो भी कर दिया, इसके बाद चुनौती दी कि जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाकर दिखाओ, वो भी हटा दिया। इसके बाद भी विपक्ष को समझ नहीं आया और वक्फ कानून बदलने की चुनौती पेश कर दी और एक ही झटके में मोदी सरकार ने वक्फ कानून भी बदल डाला। ऐसे ही यूपी विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रहते हुए सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ को कानून व्यवस्था के मुद्दे पर ललकारा था लिहाजा योगी आदित्यनाथ ने तुरंत प्रतिक्रिया दी और विधानसभा में ठोक बजाकर कहा था कि पूर्व की सरकारों द्वारा पाले पोसे गए माफियाओं को मिट्टी में मिला देंगे। यूपी में आतंक के पर्याय बने माफिया अतीक अहमद और मुख्तार अंसारी को मिट्टी में मिला दिया। अब ताजा चेलेंज लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को फिर दे दिया कि वो संसद में कहें कि आपरेशन सिंदूर में सीजफायर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने नहीं कराया। 29 जुलाई की शाम राहुल गांधी एक नए अंदाज में उछल-उछल कर प्रधानमंत्री को चुनौती दे रहे थे 'अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने 29 बार कहा है कि उन्होंने सीजफायर कराया है। अगर वह (ट्रंप) गलत हैं तो प्रधानमंत्री यहां सदन में कहें कि ट्रंप असत्य बोल रहे हैं। अगर प्रधानमंत्री में इंदिरा गांधी की तरह 50 प्रतिशत भी साहस है तो वह यहां पर कह दें कि ट्रंप ने झूठ बोला है। ट्रंप के बयान को खारिज कर दें।' नेता प्रतिपक्ष यहीं नहीं रुके उन्होंने दावा किया, 'मुद्दा यह है कि अब हम अपने सामने चीन-पाकिस्तानी गठजोड़ का सामना कर रहे हैं। यह बहुत खतरनाक समय है। हम ऐसे प्रधानमंत्री को बर्दाश्त नहीं कर सकते जिनमें सेना का प्रभावी ढंग से उपयोग करने का साहस नहीं है।' 'हम ऐसे प्रधानमंत्री को बर्दाश्त नहीं कर सकते जिनमें यह कहने की हिम्मत नहीं है कि डोनाल्ड ट्रंप झूठ बोल रहे हैं।' राहुल गांधी ने इस बात पर जोर दिया, कि 'हमें ऐसे प्रधानमंत्री की जरूरत है जो सेना और वायुसेना को सशक्त बनाए, उन्हें कार्य करने की आजादी दे और कहे कि उसी तरह 'कांग्रेस केकाम खत्म करो जैसे इंदिरा गांधी ने किया था।' अब इंदिरा गांधी का नाम पोते ने ले ही लिया तो फिर पूरे खानदान की पगड़ी उछलनी ही थी, सो भरी संसद में कांग्रेस की खानदानी पगड़ी जमकर उछली गई। राहुल गांधी जिस तरह की राजनीति कर रहे हैं जिस तरह की भाषा बोल रहे हैं उससे मेरे जहन में सवाल आता है कि जब महात्मा गांधी की हत्या हुई तब कांग्रेस की सरकार थी और पंडित जवाहर लाल नेहरू पीएम थे, जब इंदिरा गांधी की सरकारी आवास में हत्या हुई तब खुद इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री थी। जब राहुल गांधी के पिता राजीव गांधी की हत्या हुई तब राजीव गांधी भी प्रधानमंत्री थे और कांग्रेस की सरकार थी। मतलब कांग्रेस राज में के बड़े-बड़े नेताओं की हत्या हो गई कांग्रेस कुछ नहीं कर पाई। अब राहुल गांधी देश को बता रहे हैं कि देश को इंदिरा गांधी जैसी प्रधानमंत्री की जरूरत है। राहुल गांधी को अपनी चार पीढ़ियों के शासनकाल का इतिहास पढ़ना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जगह अपने पूर्वजों से पूछना चाहिए कि उनके शासनकाल में कड़ी सुरक्षा के बीच उनकी हत्या क्यों हुई?

कांग्रेस सरकार से सवाल कर रही है कि ऑपरेशन सिंदूर में पीओके वापस क्यों नहीं लिया वो बताए कि पीओके पाकिस्तान को दिया किसने था, फिर 1971 में मौका मिला तो वापस क्यों नहीं लिया था, अमित शाह ने भारत विभाजन के लिए भी कांग्रेस को दोषी ठहराया।

छिछोरापन पर हंस रहा देश

नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के बाद ही बारी पीएम नरेंद्र मोदी के संसद में बोलने की थी। उन्होंने भरी संसद में राहुल गांधी सहित उनके सहयोगियों को एक लाइन में जवाब दे दिया कि ट्रंप क्या दुनिया के किसी भी नेता ने आपरेशन सिंदूर रोकने को नहीं कहा। पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि नौ मई की रात अमेरिका के उप राष्ट्रपति का फोन आया था लेकिन 'मैं सेना के साथ मीटिंग में व्यस्थ था लिहाजा बात नहीं हो पाई। इसके बाद मैंने कालबैक किया तो उपराष्ट्रपति ने बताया कि पाकिस्तान, भारत पर बड़ा हमला करने वाला है।' जिसके जवाब में 'मैंने अमेरिका के उप राष्ट्रपति को कह दिया था कि पाकिस्तान हमला करेगा तो उसे बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी, हम बड़े हमले से जवाब देंगे। गोली का जवाब गोले से देंगे।' लेकिन जब चुनौती का जवाब मिला तो नेता प्रतिपक्ष सहित विपक्षी सांसदों के चेहरे लटक गए। नेता प्रतिपक्ष ने चेलेंज किया था लिहाजा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संसद में जवाब देना शुरू किया तो राहुल गांधी एंड कंपनी के तोते उड़ गए। पीएन मोदी ने कहा कि कुछ लोग भारतीय सेना के बयान पर विश्वास नहीं करके पाकिस्तान के झूठ को आगे बढ़ाते हैं। एक तरफ भारत आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है, वहीं कांग्रेस मुद्दों के लिए पाकिस्तान पर निर्भर होती जा रही है। दुर्भाग्य से कांग्रेस पाकिस्तान से मुद्दे आयात कर रही है। सशस्त्र बलों का विरोध करना और उनके प्रति नकारात्मकता कांग्रेस का पुराना रवैया रहा है। पाकिस्तान के सभी बयानों और यहां हमारा विरोध करने वालों के बयानों को उठा लीजिए, वे फुल स्टॉप और कोमा के साथ बिल्कुल एक जैसे हैं। देश हैरान है कि कांग्रेस ने पाकिस्तान को क्लीन चिट दे दी है। वे इस बात का सबूत मांगने की हिम्मत करते हैं कि पहलगाम के हमलावर पाकिस्तानी थे। पाकिस्तान भी यही मांग कर रहा है जो कांग्रेस कर रही है। कांग्रेस सांसद महाराष्ट्र की प्रणीति शिंदे के लोकसभा में दिए गए उस बयान पर, जिसे हटा दिया गया है, पर प्रधानमंत्री मोदी भड़क गए। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की एक नई सदस्य को क्षमा करनी चाहिए। क्योंकि कांग्रेस के आका जो खुद बोलने की हिम्मत नहीं कर पाते वो लिखकर नए सदस्यों से बोलवाते हैं। यानी नई संसद सदस्य को यह कहने के लिए विवश किया गया कि ऑपरेशन सिंदूर एक 'तमाशा' था। यह आतंकवादियों द्वारा मारे गए 26 लोगों के घावों पर तेजाब डालने जैसा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा आतंकवादी रो रहे हैं, उनके आका रो रहे हैं और उन्हें रोता देख, यहां भी कुछ लोग रो रहे हैं। इससे पहले बालाकोट सर्जिकल स्ट्राइक के दौरान भी एक खेल खेलने की कोशिश की गई थी, वह काम नहीं आई। जब ऑपरेशन सिंदूर हुआ, तो विपक्ष ने एक नई रणनीति अपनाई 'आप रुक क्यों गए?' वाह रे बयान बहादुरों! आपको विरोध करने के लिए एक या दूसरे बहाने की आवश्यकता होती है। इसलिए, केवल मैं ही नहीं, बल्कि पूरा देश विपक्ष पर हंसता है। पीएम मोदी ने कहा, कि 'कांग्रेस के छिछोरेपन ने देश का मनोबल गिराया है।'

हमेशा मुंह की खाते हैं राहुल गांधी

संसद हो या संसद के बाहर खासकर जब भी राहुल गांधी सरकार को घेरने के लिए बोलते हैं तो मुंह की ही खाते हैं। सत्ता पक्ष जब विपक्ष को जवाब देता है तो उसके पूरे खानदान का लेखाजोखा सामने रख देता है। ऐसा ही मानसून सत्र में हुआ। नेता प्रेतिपक्ष राहुल गांधी ने 'ऑपरेशन सिंदूर के सीजफायर के बाद सरकार पर तंज कसते हुए कहा था कि ट्रंप के एक फोन पर नरेंद्र-सरेंडर हो गया।' मानसून सत्र में राहुल गांधी को इस तंज का भी जवाब एक बार नहीं बल्कि बार-बार मिला। भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर ने ही नेता प्रतिपक्ष को ऐसे-ऐसे किस्से याद दिलाए जब उनके पिता राजीव गांधी, दादी इंदिरा गांधी और दादी पिता पंडित जवाहर लाल नेहरू ने पाकिस्तान और

महात्मा गांधी की हत्या हुई तब कांग्रेस की सरकार थी नेहरु पीएम थे, जब इंदिरा गांधी की हत्या हुई तब खुद इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री थी, जब राहुल गांधी के पिता राजीव गांधी की हत्या हुई तब राजीव गांधी भी प्रधानमंत्री थे और कांग्रेस की सरकार थी, राहुल गांधी को सवाल अपने पूर्वजों से पूछना चाहिए कि वो इतने कमजोर क्यों थे।

आतंकवाद के सामने सरेंडर किया था। भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर ने राहुल गांधी की कांग्रेस को पाकिस्तान कब्जे वाली कांग्रेस का दर्जा तक दे दिया। भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर ने कहा कि हमने इतिहास में कई 'सरेंडर' और 'बवंडर' देखे हैं। 1971 के युद्ध में 93 हजार पाकिस्तानी सैनिकों ने घुटने टेके तब इंदिरा गांधी ने पीओके वापस नहीं लिया। इससे पता चलता है कि उस समय कांग्रेस ने सरेंडर किया था। अटल जी ने आतंकवादियों पर नकेल कसने के लिए आतंकवाद निरोधक अधिनियम 'पोटा' कानून बनाया। यूपीए सरकार आई और 'पोटा' कानून खत्म कर आतंकवाद और पाकिस्तान के सामने सरेंडर कर दिया। राहुल गांधी को जवाब देना चाहिए कि ऐसी क्या मजबूरी थी कि बार-बार कांग्रेस सरकार को सरेंडर करना पड़ा। कांग्रेस के सीनियर लीडर पी चिदंबरम दावा करते हैं कि इस बात का 'कोई सबूत' नहीं है कि पहलगाम आतंकी हमले में शामिल आतंकवादी पाकिस्तान से आए थे। कांग्रेसियों की ऐसी क्या मजबूरी है कि वो पाकिस्तान की खुलेआम पैरवी करते हैं? यानी पाकिस्तान भी अपना उतना बचाव नहीं करता जितना 'राहुल-कब्जे वाली कांग्रेस' करती है। ऐसी क्या मजबूरी है कि कांग्रेस को पाकिस्तान का पक्ष लेना पड़ता है? पूर्व गृह मंत्री पी चिदंबरम का बयान कांग्रेस की देश विरोधी मानसिकता को दर्शाता है।

अमित शाह ने कांग्रेस को बेनकाब किया

पूर्व मंत्री व सांसद अनुराग ठाकुर के बाद केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने राहुल गांधी को मानसून सत्र में जमकर धोया। उन्हें याद दिलाया कि 15 अगस्त 1965 को भारतीय सेना ने पाकिस्तान के उन तीन पहाड़ी क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया था, जिसमें एक जगह हाजीपीर पास भी शामिल था जिसका उपयोग पाकिस्तान घुसपैठ के लिए करता है। 28 अगस्त को हाजीपीर पास पर भारतीय सेना का कब्जा हो गया और पाकिस्तानी सेना भाग खड़ी हुई थी, बाद में भारत और पाकिस्तान के बीच ताशकंद समझौता हुआ और भारत ने हाजीपीर पास पाकिस्तान को लौटा दिया था। यानी पूरा पीओके पाकिस्तान को सौंप कर कांग्रेस सरकार के प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने पाकिस्तान के सामने सरेंडर किया था। 1971 में इंदिरा गांधी ने तब सरेंडर किया था जब 93 हजार पाकिस्तान के युद्धबंदी फौजियां के बदले में भारत 54 युद्धबंदियों को वापस नहीं ला पाई थीं। पाकिस्तान को जीता हुआ 15 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल लौटा दिया था। आज जो कांग्रेस हमसे सवाल कर रही है कि ऑपरेशन सिंदूर में पीओके वापस क्यों नहीं लिया वो बताए कि पीओके पाकिस्तान को दिया किसने था। फिर 1971 में मौका मिला तो वापस क्यों नहीं लिया था। ऑपरेशन सिंदूर पर बहस के दौरान अमित शाह ने भारत के विभाजन के लिए भी कांग्रेस को दोषी ठहराया और भारत के संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (एनएससी) का स्थायी सदस्य न बनने के लिए भी जवाहर लाल नेहरू को ही जिम्मेदार ठहराया। अमित शाह ने कहा कि पाकिस्तान की स्थापना ही कांग्रेस की भूल है। अगर कांग्रेस ने विभाजन स्वीकार नहीं किया होता, तो आज पाकिस्तान का अस्तित्व ही नहीं होता। गृह मंत्री अमित शाह ने कांग्रेस को आतंकियों के प्रति सहानुभूति रखने वाली पार्टी बता दिया। उन्होंने बाटला हाउस एनकाउंटर की चर्चा करते हुए कहा कि मैंने टीवी पर सुना था कि कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद यह कह रहे थे कि मैंने जब बाटला हाउस एनकाउंटर की तस्वीरें सोनिया गांधी को दिखाई, तो वे रो पड़ीं थीं? अमित शाह ने कहा कि मैं इनसे पूछना चाहता हूं कि आपको आतंकियों के लिए क्यों रोना आता है? शहीद मोहन शर्मा के लिए रोना क्यों नहीं आता है? हालांकि अमित शाह की इस टिप्पणी पर कांग्रेस की ओर से प्रियंका गांधी ने जवाब दिया और कहा कि मेरी मां के आंसुओं की बात हुई है, तो मैं यह बताना चाहती हूं कि मेरी मां के आंसू तब गिरे थे जब मेरे पिता आतंकवादी घटना में मारे गए थे। प्रियंका गांधी ने सोनिया गांधी के आंसुओं पर तो बात की, लेकिन उन्होंने इस बात से इनकार नहीं किया कि उनकी मां बाटला हाउस एनकाउंटर पर रोईं थीं। हालांकि यह भी सच है कि बाद में सोनिया गांधी व प्रियंका गांधी ने राजीव गांधी के हत्यारों को माफ किया था।

पर्यटन

खूबसूरत हिल स्टेशन कानाताल

कानाताल में प्राचीन समय में एक झील हुआ करती थी जब वह सूख गई तो लोग इस झील को काना ताल कहने लगे और इसी के नाम पर इस गांव का नाम कानाताल पड़ गया, इसके साथ ही एक पौराणिक कथा के अनुसार कानाताल वह स्थान है जहां माता सती का जला हुआ सर गिरा था, पौराणिक कथा में इस मंदिर को 51 शक्तिपीठों में से एक बताया गया है।

कमल कपूर
वरिष्ठ पत्रकार

कुदरत ने उत्तराखंड को नैसर्गिक खूबसूरती से संवारा है। यहां एक से बढ़कर एक हिल स्टेशन अपनी सुंदरता के लिए मशहूर हैं। इन्हीं हिल स्टेशन में देहरादून से 78 किलोमीटर व मसूरी से 38 किलोमीटर तथा चंबा से 12 किलोमीटर जबकि दिल्ली से 300 किलोमीटर की दूरी पर कानाताल हिल स्टेशन है। यह पर्यटन स्थल चंबा-मसूरी रोड पर है। यह खूबसूरत हिल स्टेशन उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल जिले में आता है। यकीन मानिये अगर आप एक बार कानाताल हिल स्टेशन देख लेंगे तो नैनीताल और मसूरी को भूल जाएंगे। यह बात इसलिए कही जा रही है क्योंकि इस छोटे से हिल स्टेशन को प्रकृति ने अद्भुत सौंदर्य से संवारा है। यहां की मनमोहक वादियां और वातावरण सैलानियों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। चाहे गर्मी हो या फिर सर्दी कानाताल हिल स्टेशन आपका दिल जीत ही लेगा। बस आपको एक बार यहां जाने की जरूरत है और कुछ दिन बिताने हैं। कभी गुमनामी का शिकार रहे कानाताल में अब धीरे-धीरे काफी संख्या में टूरिस्ट आने लगे हैं। क्योंकि यह हिल स्टेशन चारों तरफ से हरियाली और जंगलों से घिरा हुआ है। यहां के मनमोहक नजारे आपके दिल में उतर जाएंगे। समुद्र तल से 2,590 मीटर की ऊंचाई पर स्थित कानाताल हिल स्टेशन में एडवेंचर्स एक्टिविटी कर सकते हैं, कैंपिंग का आनंद ले सकते हैं। सर्दियों में पर्यटक यहां बर्फबारी का लुत्फ उठा सकते हैं। एक तरह से कहा जा सकता है कि इस स्थान पर आकर सैलानी पहाड़, घाटियां, झरनें, नदियां और जंगल सब कुछ देख सकते हैं। यहां आप फोटोग्राफी का लुत्फ भी उठा सकते हैं। यहां जंगल में घूमने के लिए पर्यटकों को जीप सफारी भी मिल जाएगी। इस हिल स्टेशन में आप दोस्तों व परिवार के साथ कैंपिंग भी कर सकते हैं और बोनफायर का मजा भी ले सकते हैं। कैंपिंग के दौरान यहां आप स्टारगेजिंग नाइट का भी आनंद उठा सकते हैं, ताकि आपकी यात्रा और ज्यादा मजेदार और खास व यादगार बन सके। अगर आपने अभी तक यह हिल स्टेशन नहीं देखा है, तो आप यहां की सैर आने वाली सर्दियों में कर सकते हैं।

मसूरी व चंबा के बीच कानाताल गांव

सैलानियों को आकर्षित करने वाला हिल स्टेशन कानाताल उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल जिले का एक छोटा सा गांव है जो चंबा और मसूरी मार्ग पर है। इसी कानाताल गांव के पास पहले एक झील थी जिसके नाम पर इस प्राचीन और आकर्षक गांव का नाम रखा गया था। आम तौर पर पर्यटक देहरादून, मसूरी और चंबा जैसे प्रसिद्ध और पारंपरिक हिल स्टेशन ही घूमने जाते है, लेकिन इन हिल स्टेशनों पर भीड़ अधिक होने लगी है और भीड़ की वजह से महंगे भी हो गए हैं, लिहाजा कानाताल गांव आपके लिए बेहतर विकल्प हो सकता है। हालांकि शहरों की भाग-दौड़ वाली जिंदगी में हर कोई एकांत में शांति चाहता है ताकि वो प्रकृति के साथ कुछ समय बिता सके। कानाताल की पहाड़ियां, यहां फूलों की घाटी, सेब के बाग और हरे-भरे जंगल पर्यटकों को बहुत ज्यादा पसंद आते है। यह हिल स्टेशन मसूरी से सिर्फ 38 किलोमीटर के फासले पर है इसलिए नवदंपति अब मसूरी के स्थान पर कानाताल में हनीमून मनाने आने लगे हैं। इसी कानाताल गांव का सुरखंडा मंदिर इस क्षेत्र का सबसे लोकप्रिय स्थान है। यहां वन्यजीव, पक्षी और यहां के झरने आपको प्रकृति के साथ जोड़ देंगे जिससे आपकी यात्रा यादगार बन जाएगी। मसूरी में अनेकों प्रकार की वनस्पतियां और जीव-जंतु पाए जाते है जो विज्ञान में रूचि रखने वाले पर्यटकों को बहुत आकर्षित करते है। मसूरी भी हनीमून मनाने वालों के लिए बेहतरीन और खूबसूरत स्थान है। मसूरी में लाल टिब्बा, केम्प्टी फॉल्स, भट्टा फॉल्स, मॉल रोड और गन हिल्स जैसे कई आकर्षक स्थल है जहां आपको घूमने जरूर जाना चाहिए। मसूरी से मन भर जाए जो फिर कानाताल गांव जरूर जाएं। लौटते समय या मसूरी जाते समय कानाताल से लगभग 17 किलोमीटर की दूरी पर चंबा हिल स्टेशन बहुत ही आकर्षक और लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। चंबा समुद्र तल से लगभग 1676 मीटर की उंचाई पर पहाड़ी क्षेत्र है जो हिमालय के सुंदर दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है। चंबा में चारों तरफ चीड़ और देवदार के वृक्ष देखने को मिलते है जो पर्यटकों को कहीं और देखने को नहीं मिलते हैं। चंबा में पवित्र भागीरथी नदी का दृश्य भी बहुत शनदार लगता है।

कानाताल के पास सुरखंडा देवी का शक्तिपीठ

कानातल टिहरी गढ़वाल जिले का छोटा सा गांव है और इस स्थान के बारे में बहुत ज्यादा ऐतिहासिक जानकारी सामने नहीं आई है। कानाताल में प्राचीन समय में एक झील हुआ करती थी जब वह सूख गई तो लोग इस झील को काना ताल कहने लगे और इसी के नाम पर इस क्षेत्र का नाम कानाताल पड़ गया। इसके साथ ही एक पौराणिक कथा के अनुसार कानाताल वह स्थान है जहां माता सती का जला हुआ सिर गिरा था। माता सती को समर्पित सुरकंडा देवी मंदिर कद्दूखाल में स्थित है जो बहुत लोकप्रिय धार्मिक पर्यटन स्थल है। सुरकंडा देवी मंदिर को लेकर मान्यता है कि अगर इंसान यहां आता है तो उसके पाप धुल जाते हैं और भक्तों को मनचाहा वरदान मिल जाता है। यही नहीं इस मंदिर की अपनी एक ऊर्जा है, माना जाता है ऐसे स्थानों पर एनर्जी वोर्टेक्स यानी ऊर्जा भंवर होता है। टीओआई के लेख के मुताबिक ऐसी जगहों पर आध्यात्मिक या पारलौकिक ऊर्जा सबसे ज्यादा होती है, जो वहां जाने वालों को प्रभावित करने की शक्ति रखती है। ऐसी ही शक्ति सुरकंडा देवी मंदिर में है। पौराणिक कथा में इस मंदिर को 51 शक्तिपीठों में से एक बताया गया है। मां दुर्गा को समर्पित सिद्धपीठ सुरकंडा मंदिर सुरकट पर्वत पर है। जो भीड़-भाड़ से दूर शांतिपूर्ण आध्यात्मिक स्थल भी है। आध्यात्मिक रूप से समृद्ध यह स्थल समुद्र तल से 2500 मीटर की ऊंचाई पर है और अपनी ऊर्जा से जुड़े महत्व के लिए जाना जाता है। यह मंदिर उन भक्तों और ऊर्जा साधकों को आकर्षित करता है, जो इस जगह के बारे में अच्छी तरह से जानते हैं। हालांकि बहुत कम लोग ये जानते होंगे कि यह मंदिर भारत के शक्तिपीठ मंदिरों में से एक है, जो पारंपरिक भारतीय वास्तुकला शैली में निर्मित है। इस मंदिर से आप पहाड़ों और घाटियों के अद्भुत नजारे भी देख सकते हैं। मंदिर तक पहुंचने के लिए तीर्थ यात्रियों को लगभग 2.5 किलोमीटर की कठिन और खड़ी चढ़ाई करनी पड़ती है। हालांकि मंदिर का रास्ता इतना सुंदर है कि चढ़ते हुए बलूत के पेड़ दिखाई देंगे और सफेद पर्वत शिखरों की झलक देखने को मिलेगी। यहां से जुड़ी यात्रा खुद में ही शुद्धिकरण के रूप में जानी जाती है और यहां आकर श्रद्धालु प्रकृति से भी जुड़ पाते हैं। देवी मंदिर को लेकर एक खास बात ये है कि यहां प्रसाद के रूप में रौंसली की पत्तियां दी जाती हैं, जिसके अपने औषधीय गुण है। धार्मिक मान्यता के मुताबिक इन पत्तियों से घर में सुख समृद्धि आती है। क्षेत्र में देववृक्ष का दर्जा भी हासिल है। इसलिए इस पेड़ की लकड़ी को इमारती या दूसरे व्यावसायिक उपयोग में नहीं लाते।

- **आम तौर पर पर्यटक देहरादून, मसूरी और चंबा जैसे प्रसिद्ध हिल स्टेशन ही घूमने जाते है, लेकिन इन हिल स्टेशनों पर भीड़ अधिक होने लगी है, भीड़ की वजह से महंगे भी हो गए हैं, लिहाजा कानाताल गांव आपके लिए बेहतर विकल्प हो सकता है।**
- **कानाताल यात्रा के दौरान धनोल्टी जैसे पर्यटक स्थलों तक भी पहुंचना आसान है, मसूरी से करीब 62 किलोमीटर की दूरी पर धनोल्टी उत्तराखंड की शोभा बढ़ाता हैं, धनोल्टी रोडोडेंड्रोन, देवदार और ओक के मोटे आवरण से घिरा है, धनोल्टी में बर्फ से ढंकी चोटियां, हरी-भरी घाटियां और सुहावना मौसम टूरिस्टों के मन को तरोताजा करने के लिए जाना जाता है।**

कानाताल के आसपास हिल स्टेशन

कानाताल चंबा मार्ग से लगभग 6 किलोमीटर दूर स्थित कोडिया जंगल बहुत ही शानदार स्थान है। यानी फोटोग्राफी में रूचि रखने वालों व प्रकृति से प्यार करने वालों के लिए यह खूबसूरत गंतव्य है। इस स्थान पर ट्रैकिंग करना पर्यटकों को बहुत अच्छा लगता है। इसके अलावा यहां कस्तूरी मृग, काकर, जंगली सूअर घोरल जैसे कई दुर्लभ वन्यजीवों की प्रजातियां देखने को मिलती हैं। कानाताल यात्रा के दौरान धनोल्टी जैसे पर्यटक स्थलों तक भी पहुंचना आसान होता है। जो कानाताल आने वाले टूरिस्टों को बहुत अधिक पसंद आता है। मसूरी से करीब 62 किलोमीटर की दूरी पर स्थित धनोल्टी उत्तराखंड की शोभा बढ़ाता हैं। धनोल्टी की ऊंचाई समुद्र तल से लगभग 2,200 मीटर है। धनोल्टी रोडोडेंड्रोन, देवदार और ओक के मोटे आवरण से घिरा है, धनोल्टी में बर्फ से ढंकी चोटियां, हरी-भरी घाटियां और सुहावना मौसम टूरिस्टों के मन को तरोताजा करने के लिए जाना जाता है।

पहाड़ी व्यंजनों का स्वाद लें

यदि कानाताल में आप छुट्टियां मनाने जाते है तो यहां के खूबसूरत होमस्टे में रहना बहुत ही अच्छा लगेगा। ये घर मिट्टी व पत्थर के बने हुए होते है। यहां आने के बाद हर शहरी व्यक्ति पहाड़ के लोगों की कठिन जीवन शैली से भलीभांति परिचित हो जाता है। गांव के लोगों के बीच रहना और उनके खान-पान को अपनाना और प्रकृति के बीच घूमने का भरपूर मजा लेना बहुत ही अद्भुत लगता है। पहाड़ी व्यंजनों का स्वाद भी होमस्टे में लिया जा सकता है। हालांकि कानाताल में खाने के ज्यादा विकल्प मौजूद नहीं है परंतु यहां भारतीय पकवानों से लेकर चाईनीस खाना बहुत स्वादिष्ट मिलता है। कानाताल के प्रसिद्ध पकवानों में गन की दाल (एक स्वादिष्ट ग्रेवी वाली डिश) है, सानी हुई मूली (मूली का सलाद), कंडाली का साग (एक पत्ती वाला पसंदीदा), कुमाऊंनी रायता (दही पर आधारित), बाल मिठाई और झंगोरा की खीर बहुत ही लोकप्रिय है। कानाताल घूमने का सबसे अच्छा समय दिसंबर से फरवरी और अप्रैल से जून के बीच रहता है। इस समय कानाताल का मौसम बहुत अच्छा होता है। कानाताल का तापमान ज्यादातर ठंडा ही रहता है, सर्दियों में यह तापमान 0 से 14 डिग्री सेल्सियस के बीच रहता है जो पर्यटकों के लिए बहुत ज्यादा ठंडा तापमान है। अगर आप कानाताल में बर्फबारी देखने चाहते है तो दिसंबर से फरवरी के बीच देख सकते है। रैपलिंग और रॉक क्लाइम्बिंग कानाताल के पहाड़ी और चट्टानी क्षेत्र का सबसे लोकप्रिय खेल है। यही कारण है कि यह क्षेत्र शहरी लोगों को बहुत बड़ी संख्या में अपनी और आकर्षित करता है। ऐसे साहसिक खेलों से आपको एक अलग ही अनुभव मिलेगा जिसे आप अपनी यात्रा से लौटने के बाद अपने साथियों मित्रों, अपने आस-पास के रिश्तेदारों व परिजनों को सुनाकर बहुत खुश और उत्साहित होंगे। वैली क्रॉसिंग कानातल की सबसे शानदार गतिविधियों में से एक है जिसमें टूरिस्ट को रस्सी से बांध कर घाटी को पार करना होता है। यह आप किसी एक्सपर्ट की देखरेख में ही कर सकते हैं। जिससे जोखिम नहीं रहता और टूरिस्ट पूरा एंजॉय कर पाते हैं।

पंगोट गांव का पक्षी विहार

पंगोट गांव के करीब दो प्रसिद्ध पर्यटन स्थल, गुआओ हिल्स व नैना पीक भी लोकप्रिय हैं जो मनोरम सुंदरता से टूरिस्टों को आकर्षित करते हैं, ये हिल स्टेशन फोटोग्राफी के शौकीनों के लिए जन्नत है, यहां कई नदियां बहती हैं जो इस क्षेत्र के प्राकृतिक आकर्षण में चार चांद लगाती हैं, सर्दियों में ये हिल स्टेशन बर्फ की सफेद चादर में बदल जाते हैं।

अफजल फौजी
नैनीताल

उत्तराखंड की सरोवर नगरी नैनीताल अपनी नैसर्गिक खूबसूरती के लिए देश और दुनिया में प्रसिद्ध है। लेकिन नैनीताल की वादियों में कुछ वक्त गुजारने वाले बहुत से सैलानियों को नैनीताल से सिर्फ 13 किलोमीटर के फासले पर मौजूद पंगोट गांव के बारे में शायद जानकारी नहीं है। यह एक सुरम्य गांव दिल को छू लेने वाला हिल स्टेशन है। यहां के पक्षी विहार के बारे में भी शायद सैलानियों को पता नहीं होगा। बेहद शांत और सुंदर इस हिल स्टेशन पर आने वाले पर्यटक यहां की सुंदरता और स्वच्छ आबो हवा में ऐसे बंध जाते हैं कि लौटने का मन ही नहीं करता। हालांकि ये नैनीताल के पास भले ही एक छोटा सा हिल स्टेशन है, लेकिन यहां के नजारे सैलानियों के दिल को छू जाते हैं। क्योंकि प्रकृति की गोद में बसी ये बस्ती हर किसी को प्रकृति के और भी करीब ले जाती है। पंगोट गांव अपनी बर्फ से ढकी पर्वत चोटियों और विविध वनस्पतियों व वन्य जीवन के लिए प्रसिद्ध है। उत्तराखंड का यह एकांत हिमालयी गांव, पर्यटकों को शहरी जीवन की भागदौड़ और शोरगुल से दूर एक सुखद विश्राम करने का अवसर देता है। पक्षी प्रेमियों के लिए यह एक अद्भुत स्वर्ग के समान है, जहां 350 से ज्यादा प्रजातियों के पक्षी एक साथ देखने को मिल जाते हैं। नेशनल जिम कॉर्बेट पार्क से 80 किलोमीटर दूर पंगोट गांव विविध प्रकार की वनस्पतियों और वन्यजीवों का घर है। यानी किलबरी पक्षी अभयारण्य, जहां शानदार पक्षी प्रजातियां पाई जाती हैं, इसी पंगोट गांव के करीब है। इसी के पास दो प्रसिद्ध पर्यटन स्थल, गुआओ हिल्स और नैना पीक भी काफी लोकप्रिय हैं जो अपनी मनोरम सुंदरता से टूरिस्टों को आकर्षित करते हैं। ये हिल स्टेशन फोटोग्राफी के शौकीनों के लिए जन्नत है। यहां कई नदियां बहती हैं जो इस क्षेत्र के प्राकृतिक आकर्षण में चार चांद लगाती हैं। सर्दियों में इस क्षेत्र में बर्फ से ढके ओक और देवदार के पेड़ पंगोट हिल स्टेशन को सफेद चादर में बदल देते हैं। कुल मिलाकर पंगोट को एक शांत और सुकून भरा स्थान माना जाता है, जो इसे हनीमून के लिए भी एक आदर्श स्थान बनाता है।

पक्षियों की चहचहाहट

पंगोट गांव पर्यटकों के लिए साहसिक गतिविधियों लिहाज से एक अच्छा डेस्टिनेशन है। रोमांच की तलाश में और एक अविस्मरणीय यात्रा की तलाश में आने वाले पर्यटकों के लिए पंगोट में लंबी पैदल यात्रा, ट्रैकिंग और कैंपिंग सबसे अच्छी चीजें हैं। पंगोट पहुंच कर पक्षी दर्शन, कैम्पिंग, तारों का दर्शन, पिकनिक, जिप लाइनिंग, ट्रैकिंग, बर्मा ब्रिज गतिविधि, दर्शनीय स्थलों की यात्रा, रैपलिंग, प्रकृति भ्रमण, पर्वतारोहण का

पंगोट गांव में कई खूबसूरत स्थान हैं जो पिकनिक के लिए बेहतरीन हैं, सैलानी चाहें तो पिकनिक के लिए नई जगह भी खोज सकते हैं, चाहे वह घास का मैदान हो, जंगल हो, या पहाड़ की चोटी हो जहां से मनोरम दृश्य दिखाई देते हों, पंगोट में पिकनिक मनाने का एक अलग ही आनंद है।

लुत्फ उठाया जा सकता है। यानी पंगोट गांव प्रकृति प्रेमियों, रोमांच चाहने वालों के लिए कई तरह की गतिविधियों में शामिल करने का निमंत्रण भी देता है। पंगोट में पर्यटन की बात करें तो, यहां रोमांचक अनुभव देने वाले आउटडोर साहसिक खेल तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं क्योंकि लोग उत्तराखंड के कई पर्यटन स्थलों में आउटडोर साहसिक खेलों की तलाश में रहते हैं। पंगोट में पक्षी दर्शन भी किए जा सकते हैं। इस क्षेत्र में 350 से ज्यादा प्रजातियों के पक्षी देखे जाते हैं। यानी यह छोटा सा गांव पक्षी प्रेमियों के लिए स्वर्ग कहा जाता है, जहां साल भर स्थानीय पक्षियों और पहाड़ियों पर विचरण करने वाले प्रवासी पक्षियों की चहचहाहट रहती है। इस क्षेत्र की प्रचुर वनस्पतियों के कारण, विभिन्न प्रकार के पक्षी वर्ष के अलग-अलग समय में इस स्थान पर अपना घर बनाते हैं। यहां आने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से जून तक है, हालांकि पक्षी प्रेमियों को दिसंबर और जनवरी के बीच जब पक्षियों की गतिविधि अपने चरम पर होती है, या अप्रैल और मई के बीच, जब अधिकांश पक्षी प्रजनन अवस्था में होते हैं, अपनी यात्रा की योजना बनानी चाहिए। इस दौरान घने ओक के जंगलों में सीढ़ीदार खेतों से होते हुए पंगोट में कई रोमांचकारी अनुभव करने का अवसर मिलेगा। पक्षी-दर्शन के लिए पंगोट के दो सबसे पसंदीदा स्थान हैं इनमें पहले वुडपेकर पॉइंट (धार पोखरा) पंगोट से करीब 2 किलोमीटर पैदल दूरी पर है। यहां मुख्य सड़क और पुराने ब्रिटिश घुड़सवारी मार्ग दोनों से पहुंचा जा सकता है। यह इस क्षेत्र के सबसे लोकप्रिय पक्षी-दर्शन स्थलों में से एक है। यहां एक उथला तालाब है जहां भूरे-सामने वाले और भूरे-हुड वाले कठफोड़वे, साथ ही चमकदार मैरून ओरिओल और रत्न जैसे नीले वर्डीटर फ्लाईकैचर देखे जा सकते हैं। पंगोट से किलबरी तक एक किलोमीटर पैदल चलने के बाद, एक पुल आता है। पुल से ऊपर की ओर जाने वाले रास्ते पर दाईं तरफ पंगोट में पिकनिक मनाने के लिए बेहतरीन डेस्टिनेशन है। यहां सैलानी कुंडों में ठंडक पा सकते हैं या फिर गोता लगा सकते हैं। यहां स्पॉटेड फोर्कटेल, लॉन्ग-बिल्ड थ्रश और ब्राउन वुड आउल आमतौर पर देखे जाते हैं।

तारों के नीचे कैंपिंग और पिकनिक

इस जगह का पहाड़ी वातावरण कई रोमांचक गतिविधियों के लिए एकदम सही है, जिनमें से एक कैंपिंग भी है। पंगोट में कैंपिंग के कई विकल्प मौजूद हैं। परिवार और प्रियजनों के साथ तारों के नीचे कैंपिंग करना एक अविस्मरणीय अनुभव है। पंगोट में कई कैंपसाइट हैं जहां यात्री लंबी पैदल यात्रा, पक्षी दर्शन और पिकनिक जैसी कई तरह की बाहरी गतिविधियों का आनंद ले सकते हैं। इनमें से कई कैंपसाइटों में टेंट की सुविधा भी है, जो इस क्षेत्र की सुंदरता का आनंद लेने का एक मजेदार और अनोखा तरीका हो सकता है। जंगल लोर बर्डिंग लॉज, नैनीताल नेचर कैंप और पंगोट कैंपसाइट, ये सभी पंगोट के लोकप्रिय कैंपसाइट हैं। इसके अलावा आसपास के इलाके में भी कैंपसाइट हैं, जिनमें से कई में बाथरूम और बहते पानी जैसी बुनियादी सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। खाने-पीने की चीजें खुद पैक करना एक अच्छा अनुभव कराता है, क्योंकि इस क्षेत्र में सामान खरीदने के लिए ज्यादा विकल्प नहीं हैं। लिहाजा जरूरी सामान साथ लेकर आएं और सुरक्षित और सुखद यात्रा का आनंद लें। कैंपिंग के साथ इस खूबसूरत गांव में प्रकृति की खूबसूरती के बीच पिकनिक का आनंद भी लिया जा सकता है। पंगोट गांव में कई खूबसूरत स्थान हैं जो पिकनिक के लिए बेहतरीन हैं। सैलानी चाहें तो पिकनिक के लिए नई जगह भी खोज सकते हैं, चाहे वह घास का मैदान हो, जंगल हो, या पहाड़ की चोटी हो जहां से मनोरम दृश्य दिखाई देते हों। पंगोट गांव में पिकनिक मनाने का अलग ही आनंद है। यानी स्वच्छ, प्रदूषण-मुक्त पहाड़ी हवा। ठंडा और ताजगी भरा माहौल पिकनिक को और भी बेहतर बना देता है, जिससे शहर की भागदौड़ भरी जिंदगी से सुकून मिलता है। पंगोट में पिकनिक सिर्फ दावत भर नहीं हैं बल्कि इससे कहीं बढ़कर प्रकृति के बीच सुकून और तरोताजा होने का एक मौका है। शांत वातावरण रोजमर्रा की जिंदगी की चिंताओं से राहत का अहसास करता है। हिमालय और वन्य परिवेश के मनोरम दृश्यों वाला किलबरी सबसे प्रसिद्ध पिकनिक स्थल बन गया है। स्थानीय गांवों में जाकर और पारंपरिक कुमाऊंनी भोजन का आनंद लेकर एक सांस्कृतिक पिकनिक का अनुभव भी लिया जा सकता है। पंगोट में पिकनिक मनाने से पर्यटकों को प्रकृति से जुड़ने, आराम करने और परिवार व दोस्तों के साथ यादगार पल बिताने का मौका मिलता है। चाहे आप रोमांटिक छुट्टी, पारिवारिक समारोह या अकेले सुकून भरे पल बिताना चाहें, पंगोट में पिकनिक मनाने से आपको हिमालय की तलहटी में प्राकृतिक स्वर्ग का एक छोटा सा एहसास होगा। पहाड़ों की सुहानी हवा और प्रकृति की शांत ध्वनियों से एक ताजगी महसूस होगी।

- **इस क्षेत्र में 350 से ज्यादा प्रजातियों के पक्षी देखे जाते हैं, यानी यह छोटा सा गांव पक्षी प्रेमियों के लिए स्वर्ग है, यहां साल भर स्थानीय पक्षियों और पहाड़ियों पर विचरण करने वाले प्रवासी पक्षियों की चहचहाहट रहती है, इस क्षेत्र की वनस्पतियों के कारण, विभिन्न प्रकार के पक्षी वर्ष के अलग-अलग समय में यहां अपना घर बनाते हैं।**
- **पंगोट गांव अपनी खूबसूरत घाटियों और जंगलों के साथ अपनी अनोखी जिप-लाइनिंग यात्रा के लिए भी जाना जाता है। जिप-लाइनिंग पंगोट गांव के सबसे लोकप्रिय साहसिक खेलों में से एक है। जमीन से काफी ऊपर एक लंबे तार पर फिसलना एक ऐसा अनुभव है जो सैलानियों को ज्यादा रोमांचित करता है।**

जिप लाइनिंग का रोमांच

सरोवर नगरी के करीब छोटे सा पंगोट गांव अपनी खूबसूरत घाटियों और जंगलों के साथ अपनी अनोखी जिप-लाइनिंग यात्रा के लिए भी जाना जाता है। जिप-लाइनिंग पंगोट गांव के सबसे लोकप्रिय साहसिक खेलों में से एक है। जमीन से काफी ऊपर एक लंबे तार पर फिसलना एक ऐसा अनुभव है जो सैलानियों को ज्यादा रोमांचित करता है। पंगोट जिप लाइनिंग मेहमानों को खूबसूरत प्राकृतिक नजारों से घेर लेती है। यह सरल, आनंददायक है। इसके लिए विशेषज्ञों की टीम की देखरेख महत्वपूर्ण होती है। जिप लाइनिंग आगंतुकों को रस्सी पर सरसराहट भरी हवाओं के रोमांच का अनुभव करने और आसपास के मनोरम दृश्य का आनंद लेने का अवसर देती है। इस अभ्यास के लिए अत्यधिक साहस और इच्छाशक्ति के साथ मानसिक शक्ति की भी आवश्यकता होती है। पंगोट गांव और उसके आसपास कुछ नया करने की चाह रखने वालों के लिए बर्मा ब्रिज एक लंबी रस्सी से बना है जिसे ऊंचाई से लटकाया गया है। बर्मा रोप ब्रिज उन लोगों के लिए अनोखा मनोरंजन का अनुभव है जो कुछ नया करने के लिए उत्सुक रहते हैं। पंगोट गांव आने पर पर्यटक सुरक्षा हार्नेस पहनकर पुल पर एक रोमांचक सैर का आनंद ले सकते हैं। बर्मा ब्रिज रस्सी से बना पुल है जिसका इस्तेमाल साहसिक गतिविधियों के लिए किया जाता है। इस गतिविधि में व्यक्ति को बर्मा ब्रिज पर नदी या घाटी पार करनी होती है। बर्मा ब्रिज का एक सिरा किसी मजबूत खंभे या मजबूत पेड़ से जुड़ा होता है। दूसरा सिरा भी इसी तरह बंधा होता है। चूंकि बर्मा ब्रिज का मूल ढांचा रस्सी से बना है, इसलिए जब कोई व्यक्ति उस पर चलता है, तो पुल दाएं-बाएं हिलता है। इससे बर्मा ब्रिज का रोमांच और बढ़ जाता है। पंगोट गांव में घूमने के लिए सबसे अच्छे स्थानों की तलाश कर रहे लोगों के लिए ट्रेकिंग भी एक गतिविधि है। पंगोट गांव से नैना पीक तक का ट्रेकिंग ट्रैक एक अविस्मरणीय रोमांच देता है। यह गतिविधि उन ट्रेकर्स के लिए बेहतरीन है जो पंगोट हिल स्टेशन की प्राकृतिक सुंदरता को निहारना चाहते हैं। पंगोट शानदार ट्रेकिंग डेस्टिनेशन भी है जो न केवल एक दिलचस्प पृष्ठभूमि देता है, बल्कि मन को शांति और सुकून भी देता है। ट्रेकिंग करने वालों, खासकर पहली बार ट्रेकिंग करने वालों को जरूरी उपकरण और निगरानी मुहैया कराई जाती है। ट्रेकिंग एक खूबसूरत खेल है जो लोगों को धीमी और शांत गति से आसपास के वातावरण का अन्वेषण करने का मौका देता है। पंगोट गांव से नैना पीक और पंगोट से कॉर्बेट नेशनल पार्क दो प्रसिद्ध ट्रेकिंग ट्रैक हैं। इन रास्तों की कठिनाई कम से मध्यम तक है और ये हिमालय पर्वतमाला के अद्भुत दृश्यों के बीच से गुजरते हैं। यानी घने ओक और रोडोडेंड्रोन के जंगलों से घिरे ट्रैक रोमांचित करते हैं। क्योंकि प्रकृति की पगडंडियों पर टहलते हुए पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। जो लोग पहाड़ों से घिरे स्थलों की खोज में रुचि रखते हैं, उन्हें इस स्थान पर अवश्य आना चाहिए। क्योंकि यहां बिताया गया हर पल न केवल रोमांच की सच्ची भावना पैदा करता है, बल्कि सैलानियों की मानसिक और शारीरिक शक्ति को मजबूत करता है। पर्वतारोहण एक शारीरिक और बौद्धिक रूप से चुनौतीपूर्ण खेल है जो पर्वतारोही की शक्ति, संतुलन, चपलता और सहनशक्ति को चुनौती देता है। ●

व्यंग्य

पाक की कुटाई अभी चालू है!

मित्रों अब खुद सोचो जब पूरे भारत को कुटाई का सुनहरा मौका मिला तो कैसे छोड़ देते सो 6-7 की आधी रात को भारत ने कुछ कुटाई यंत्रों को पाकिस्तान भेज दिया और लो जी 22 अप्रैल का बदला हमारे कुटाई यंत्रों ने 22 मिनट में ले लिया।

प्रदीप डीएस भट्ट
व्यंग्यकार, मेरठ

मंत्रालय के बड़े से ऑफिस के घने बड़े से साहब ने आज समय से 15 मिनट पहले ही ऑफिस में इंट्री मारी और सीधे शाकिर मियां को हाजिर होने का हुकम छज्जू चपरासी को थमा दिया। छज्जू भी हैरान था। 11-12 और कभी लंच के बाद आने वाले चतुर्वेदी जी आज इत्ती जल्दी और आते ही शाकिर मियां की फेशी, कुछ तो गड़बड़ है। खैर सिर खुजाते हुए छज्जू ने शाकिर मियां को सलाम ठोका और चतुर्वेदी जी का आदेश ज्यों का त्यों सुनाया दिया तुरंत हाजिर होना है। शाकिर मियां की तो पहले से ही चतुर्वेदी जी से छत्तीस के आंकड़े में गुत्थम गुत्थी लगी पड़ी थी, सो शाकिर मियां छज्जू को टरकाते हुए बोले, जा बोल दे उस पंडत को मैं अभी नहीं आया। छज्जू आंखें तरेरते हुए बोला ज्यादा खलीफा मति बनो मियां आज खटपट है तो पंडत जी को टरका रहे हो कल तक तो बड़ी गलबहियां करते फिरते थे। पंडत जी का गुस्सा दूध में आए उबाल की तरह है, मियां वैसे भी तुम हो उनके डिप्टी, हमने ज्वाइन करते ही बता दिया था। साहब जब गुस्सा करें तो चुप्पी साध लो, लेकिन तुम कतई नहीं माने और जा भिड़े उस दुर्वासा से। अब जब पंडत जी खुदई बुलवा भेजें हैं तो मेढ़की की तरह टांग न उठाओ मियां, वरना पंडत जी बिफर गए तो हम दोनों की बलि लेकर ही मानेंगे। शाकिर ने अपनी इंसल्ट तो महसूस की पर बोला कुछ नहीं बस इत्ता बोला अच्छा मेरे बाप मुझे टॉयलेट तो जाने दे, जा जाकर बता दे कि शाकिर मियां टॉयलेट में व्यस्त हैं। छज्जू खींसे निपोरते हुए वहां से दफा हुआ और शाकिर मियां टॉयलेट के लिए सीधे गुसलखाने में घुस गए।

टैंशन में पंडित जी

शाकिर मियां टॉयलेट में व्यस्तता का आनंद ले ही रहे थे, तभी चतुर्वेदी जी भी कान पर जनेऊ लपेटे हुए बगल में आकर टॉयलेट में व्यस्त हो गए। शाकिर को कुछ शंका हुई। तभी पंडत जी ने टॉयलेट के बीच शाकिर से अपनी मंशा प्रकट कर दी। देखो शाकिर बहुत बड़ी मुसीबत आन पड़ी है, तुम फारिग हो कर तुरंत मेरे रूम में पहुंचो। शाकिर मियां कुछ समझते चतुर्वेदी जी हाथ धोकर कान से लिपटा जनेऊ बनियान में घुसेड़ते हुए वॉशरूम से बाहर हो गए। हैरान शाकिर मियां तुरंत फारिग हुए और चतुर्वेदी जी के रूम की तरफ लपक लिए। ना जाने आज क्या मुसीबत आ पड़ी जो पंडत जी को सबर नही हुआ और मेरे पीछे-पीछे वॉशरूम तक आ टपके। कमरे में घुसते ही पंडत जी को साइड के सोफे पर बैठे देखा तो शाकिर मियां लपक कर सामने वाले सोफे पर पसरते हुए बोले, क्या हुआ पंडत जी ऐसी क्या इमरजेंसी आ पड़ी। चतुर्वेदी जी ने एक गहरी सांस ली फिर छज्जू को बुलाकर बोला, छज्जू मिठाई वाले से समोसे जलेबी मंगाकर पूरे ऑफिस में बांट दे और हां जाने से पहले दो कप चाय यहां दे जा। और हां मनोरमा मैडम को बोल दे शाम तक कोई भी मेरे कमरे में दाखिल नहीं होगा। कोई पूछे तो बता दियो अर्जेंट मीटिंग चल रही है। छज्जू सर हिलाता हुआ दफा हो गया। शाकिर मियां संकोच करते हुए बोले क्या माजरा है पंडत जी कुछ तो बताओ। चतुर्वेदी जी ने आधे गंजे सिर पर बह रहे पसीने को पोंछते हुए कहा...देखो शाकिर मसला ये है कि तुम्हें तो पता ही है कि हम कविताएं लिखते हैं। पिछले दिनों ऑपरेशन सिंदूर पर लिखी हमारी कविता 'पाकिस्तान की कुटाई' फेमस हो गई थी अब वो कविता वायरल होते-होते मंत्री जी तक पहुंच गई है। कल मंत्री जी ने घर बुलाकर आदेश दिया है कि स्वतंत्रता दिवस पर उनका ओज से भरा भाषण हम लिखें और उसमें 'कुटाई' शब्द पूरे तालमेल और ऊर्जा से भरपूर होकर आना चाहिए। अब तुम्हीं बताओ मियां कविता लिखना और बात है भाषण लिखना अलग। करें तो क्या करें? जान मुश्किल में पड़ी है। शाकिर मियां कुछ सोचते हुए बोले पंडत जी भाषण लिखना इत्ता मुश्किल काम भी ना है जित्ता सोचकर आपका हलक सूखा जा रिया है। देखो आप बचपन की यादों से शुरू करो कि बचपन से आज तक आपकी कितनी और कब-कब, कहां-कहां कुटाई हुई है। सच कै रिया हूं अभी तो 15 अगस्त में दो दिन हैं कुछ क्या बहुत कुछ कर लेंगे। देखो बात अगर जेहादी भाषण की होती तो हम लिख देते, लेकिन मामला देशभक्ति का है इसलिए हमसे ज्यादा उम्मीद मत रखियो आइडिया दे दिया है। अब याद करते जाओ और लिखते जाओ। चतुर्वेदी जी झुंझलाते हुए बोले अबे तुम भी तो तकरीरें लिखते हो। एक बात बता दे रहा हूं शाकिर सवाल सिर्फ मेरी इज्जत का नहीं है इस ऑफिस का भी है। अगर कुछ गड़बड़ हुई तो हम सबकी ऊर्जा खत्म होने में टाइम न लगेगा। वैसे ऊर्जा विभाग के मंत्री ने कल ही दो इंजीनियरों की बलि ली है। कसूर सिर्फ इतना था कि मंत्री जी के भाषण के बीच में बत्ती गुल हो गई वो भी ट्रांसफार्मर के फुंकने से। शाकिर मियां हाथ जोड़ते हुए बोले पंडत जी अभी तो बताया जेहादी तकरीरें लिखते हैं हम। हामिद भाई जो बड़े इलाम के दामाद हैं, उनके नाम से। मतलब काम मेरा नाम उनका हमें तो हर तकरीर लिखने के दो हजार मिलते हैं बस। ऊपर का खर्चा पानी निकल जाता है। खैर आप कागज कलम उठाईये और लिखने बैठिए। चतुर्वेदी जी को असमंजस में देखकर शाकिर मियां बोले अरे महाराज आगाज तो करो अंजाम तक भी पहुंच जाएंगे। चाहो तो आपको कुटाई के काफिए (आन-बान-शान) हम दिए देते हैं जहां ठीक लगे भाषण में घुसेड़ देना। जैसे कि ठुकाई, दुहाई, रजाई, रंगाई, पुताई, मलाई, नलाई वगैरह...वगैरह कहते हुए शाकिर मियां वातानुकूलित कमरे में झपकियां लेने में व्यस्त हो गए।

पाकिस्तान कब माना जो अब मानता सो अपने फूफा चीन और जीजा तुर्की के यंत्र हमारे पे छोड़ दिए भाइयों चीन का माल बीच रास्ते में ही फुस्स हो गया, हमारे पीएम मोदी जी को भी गुस्सा आ गया और अपने संयंत्रों से ब्रह्मोस कुटाई यंत्र निकाले और पाकिस्तान की ऐसी ठुकाई की कि उनका फूफा और जीजा देखते रह गए।

चतुर्वेदी जी का भाषण लेखन

चतुर्वेदी जी ने ठंडी चाय की चुस्की लेते हुए दूसरे सोफे पर पसरे और ऊंघयाते हुए शाकिर को देखा फिर मुस्कुराते हुए कलम उठाई, डायरी का पन्ना खोला उस पे सोचते जाते हंसते जाते और कलम चलाते जाते। दो घंटे के लेखन के बाद उन्होंने एक अंगड़ाई ली फिर खर्राटों से शाकिर के उठते गिरते पेट को देखा फिर मुस्कुराते हुए लिखने में जुट गए। आखिर फाइनली ढाई बजे भाषण फाइनल किया और घंटी बजा दी, घंटी की आवाज से शाकिर मियां की नींद में खलल पड़ी लेकिन उसे जल्दी समझ में आ गया कि वो घर में नहीं, ऑफिस में है, वो भी बॉस के कमरे में। छज्जू ने दरवजा नॉक किया और अंदर आकर सीधे सावधान की मुद्रा में खड़ा हो गया। छज्जू मेरा और शाकिर का खाना यहीं लगा दे। साढ़े तीन बजे फिर मीटिंग शुरू होगी, कोई अंदर न आवे समझा, जी कहता हुआ छज्जू खाना लगाकर बाहर निकल लिया। चतुर्वेदी जी शाकिर से बोले, शाकिर तूने आइडिया अच्छा दिया बचपन याद करो बस वहीं से शुरू किया है। खाना खाकर तुझे सुनाता हुं ठुकाई क्या होती है। सो जैसे ही छज्जू ने खाना प्लेट में परोसा चतुर्वेदी जी ने उसे सीधा पेट तक पहुंचा दिया। इधर शाकिर मियां भी खाना खाते खाते सोच रहा था खा ले बेटा खा ले पंडत के घर का खाना है आज दक्षिणा में इसका भाषण सुनना पड़ेगा...।

आपरेशन सिंदूर के बाद कुटाई

हां तो शाकिर मियां सुनो...जहां कुछ अतरंगी लगे तो टोक देना मैं उसे अंडर लाइन कर दूंगा और उस पर बाद में डिस्कस कर लेंगे। अतिथियों को तो मंत्री जी खुदई नमस्कार चमत्कार करके संबोधित कर लेंगे मैं सिर्फ पढ़ता हूं और चतुर्वेदी जी शुरु हो गए...। मित्रों, जैसे कि आप सभी को पता ही है कि 22 अप्रैल को पहलगांव में आतंकियों ने 25 भारतीय हिंदुओं की और एक हमारे नेपाली हिंदू भाई की सिर्फ धर्म पूछकर ही नहीं बल्कि कपड़े खुलवाकर प्वाइंट ब्लैंक से सिर

चतुर्वेदी जी शाकिर से बोले, शाकिर तूने आइडिया अच्छा दिया बचपन याद करो बस वहीं से शुरू किया, खाना खाकर तुझे सुनाता हुं ठुकाई क्या होती है, छज्जू ने खाना प्लेट में परोसा चतुर्वेदी जी ने उसे सीधा पेट तक पहुंचाया, इधर शाकिर मियां खाना खाते-खाते सोच रहे थे खा ले बेटा खा ले पंडत के घर का खाना है आज दक्षिणा में इसका भाषण सुनना पड़ेगा...।

पे निशाना लगाकर हत्या की तो भैय्या पूरे देश में हाहाकार तो मचना ही था, फिर एक नापाकी ने जाते जाते 'म्हारी एक बेटी से कह दिया कि मोदी से कह देना' बस मित्रों यही एक गलती पाकिस्तान पे घणी भारी पड़ गई और पाकिस्तान ने भारत को 'कुटाई' का न्यौता दे दिया। फिर क्या होना था मित्रों मोदी साब सऊदी अरब से आए और तीनों सेनाओं को कह दिया कि अपने अपने 'कुटाई यंत्र' निकालो इस बार इस 'झंडू बाम' को असली कुटाई के दर्शन कराते हैं। अब आपको तो पता ही है गांव हो या शहर भाई साब ऐसा कोई न बचा जिसने कुटाई का मजा न लिया हो। 'सबसे पहले कुटाई का अनुभव अपनी मां से लिया' यो क्या बात हुई मेरी गलती पे मेरी कुटाई, पर भाई की गलती पे भी साथ में मेंरी कुटाई। बस भैय्या एक दिन गलती से मिस्टेक कर बैठा मां अहोई माता का व्रत रखें हुए थी। सो मैंन्रे ये सोचकर कि आज तो मां का व्रत है गुस्सा नहीं करेगी लेकिन मित्रों अगर मां को कूटना है तो क्या व्रत क्या अनाव्रत। जैसे ही मैंने पूछा मां भईया की गलती पर भैय्या के साथ मुझे क्यूं कूटती हो, मां हंसी और बोली तेरा बड़ा भाई अकेले पिटेगा तो अच्छा थोड़ी लगेगा। फिर कुटने कुटाने से इम्युनिटी बहुत ज्यादा बढ़ती है। धीरे-धीरे ये इम्युनिटी इतनी बढ़ जाएगी कि तेरी देह स्टील से भी घणा मजबूत हो जावेगा। अगले दिन नाश्ते में देशी घी, नमक मिर्च लगाकर दो बासी रोटी और एक गिलास दूध से पहले फिर कुटाई। मैंने प्रश्नवाचक दृष्टि मां पे गड़ाई तो बोली कल व्रत था न बेटे तो कल तेरी हिम्मत पे तुझे कूट न सकी इसलिए कल का उधार चुकता कर दिया। वैसे भी उधार ज्यादा देर अपने पास रखना नहीं चाहिए। इसके बाद जब स्कूल गए तो मासाब ने कुटाई कर दी। जब मासाब नीम की गीली टहनी से सुताई करते थे तो बस पूछो मति दिन में ही आंखों के सामने लाल नीले-पीले तारे तैरने लगते थे। कुल मिलाकर घर पे कुटाई स्कूल में कुटाई, मां से कुटाई और कभी कभी पिताजी भी हाथ साफ करने से नहीं चूकते। वैसे भी पिताजी के द्वारा की गई डंडे से, बेल्ट से थप्पड़, लात घूंसे और कभी कभी पेड़ की टहनी बस भाई हमें ही पता है देह का क्या हाल होता था कभी कभी लगता था जैसे मां-पिताजी का गुस्सा हमारी कुटाई करके निकाल रही है और पिताजी मां का गुस्सा हम पर निकाल रहे हैं, लेकिन एक बात समझ ना आती मासाब किसका गुस्सा हमारी कुटाई करके निकालते हैं। शायद प्रिंसिपल साहब का या मास्टरनी जी का। तो मित्रों अब खुद सोचो जब पूरे भारत को कुटाई का सुनहरा मौका मिला तो कैसे छोड़ देते सो 6-7 की आधी रात को भारत ने कुछ कुटाई यंत्रों को पाकिस्तान भेज दिया और लो जी 22 अप्रैल का बदला हमारे कुटाई यंत्रों ने 22 मिनट में ले लिया। तड़के उन्हें बता दिया...देखो बेटा कुटाई यंत्रों को प्रणाम करो और शांत चित्त बैठ जाओ लेकिन मित्रों पाकिस्तान कब माना जो अबकि मानता सो अपने फूफा चीन और जीजा तुर्की के यंत्रों को हमारे पे छोड़ दिया भाइयों चीन का माल बीच रास्ते में ही फुस्स हो गया और मोदी जी जो हमारे पीएम हैं न, उन्हें भी गुस्सा आ गया और फिर हमने अपने संयंत्रों से ब्रह्मोस कुटाई यंत्र निकाले और पाकिस्तान की ऐसी ठुकाई की कि उनका फूफा और जीजा देखते रह गए। खुद को दुनिया का चौधरी समझे बैठा चौधरी ट्रंप भी भौंचक हो गया। मित्रों इसके बाद हमारे कुटाई यंत्रों की मांग दुनिया में बढ़ गई। इसलिए अमेरिका का चौधरी भी कौमा में है और आजकल आएं बाएं शाएं बोल रहा है। लेकिन सारी दुनिया भारत की ताकत देखकर हैरान है। तो मित्रों इसी बात पर बोलो भारत माता की जय। और हां सुन ले पाकिस्तान ऑपरेशन सिंदूर थमा है बेटा रुका नहीं...। भाषण सुनकर शाकिर मियां बोल पड़े तुमने तो कमाल कर दिया पंडत जी। भाषण बिलकुल परफेक्ट है पंडत जी। मैं भी बोलता हूं भारत माता की जय।

आस्था

चिंता हरण महादेव मंदिर

मंदिर के पुजारी सिद्धेश्वर गिरी महाराज कहते हैं कि मंदिर में विराजमान शिवलिंग स्वयंभू है, जब शिवलिंग प्रकट हुआ था तब यह आकार में इतना बड़ा नहीं था, उनका दावा है कि अब महादेव धीरे-धीरे अपना आकार बदल रहे हैं, यानी शिवलिंग का आकार पहले के मुकाबले बढ़ रहा है।

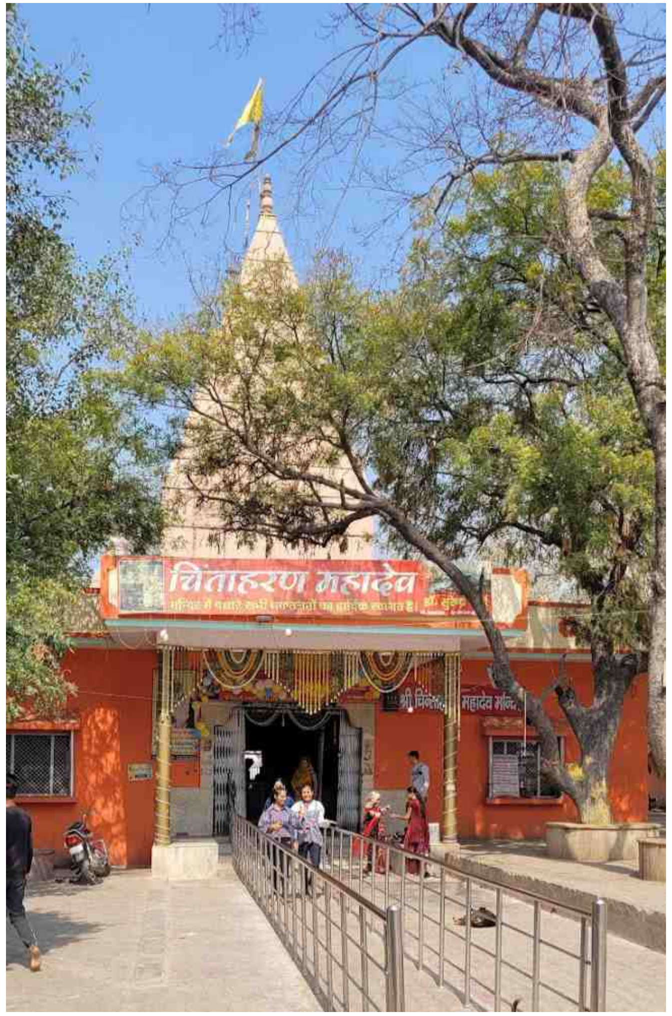

हरीश भट्ट
रामनगर

देवभूमि उत्तराखंड के कण-कण में देवी-देवताओं का वास है। देवभूमि में सबसे ज्यादा मंदिर भगवान शिव और देवी शक्ति को समर्पित हैं। इसलिए उत्तराखंड प्राचीन मंदिरों, तीर्थस्थलों, ऋषि-मुनियों की तपोभूमि के रूप में अपनी विशेष पहचान रखता है। यानी देवभूमि के नाम से भी उत्तराखंड की पहचान है। क्योंकि यह प्राचीन काल से ही अनेक देवी-देवताओं का निवास स्थान रहा है। यह स्थान अपने मंदिरों, मूर्तियों, स्मारकों, वास्तुकला और इस राज्य में बहने वाली नदियों के लिए प्रसिद्ध है। यह पंच बद्री, पंच केदार, पंच प्रयाग, छोटे चार धाम, शक्ति पीठ और सिद्ध पीठ जैसे पवित्र हिंदू मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। इन सभी मंदिरों का इतिहास और पौराणिक कथाएं समृद्ध हैं। यह राज्य देवी-देवताओं के बारे में दिव्य ज्ञान देता है। उनकी जीवनशैली, खान-पान, संस्कृति और उनके जीवन के कई पहलुओं के बारे में भी ज्ञान देता है। यहां भगवान शिव, भगवान कृष्ण, भगवान विष्णु, माता पार्वती, माता काली, चंडिका और कई अन्य हिंदू देवी-देवताओं के जीवन के बारे में जान सकते हैं। दुनिया भर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पूजा करने और सर्वशक्तिमान देवी देवताओं का आशीर्वाद पाने के लिए इस पवित्र भूमि की यात्रा करते हैं। मान्यता है कि यहां के शिवालयों में दर्शन मात्र से ही श्रद्धालुओं का कष्ट दूर हो जाते हैं। उत्तराखंड के गढ़वाल मंडल में केदारनाथ बाबा विराजमान हैं तो कुमाऊं मंडल में जागेश्वर धाम जैसा विश्व प्रसिद्ध शिव मंदिर है। देवभूमि के शिवालयों में एक शिव मंदिर ऐसा भी है जहां शिवलिंग धीरे-धीरे अपना आकार बदल रहा। यह शिव मंदिर देहरादून जिले में चकराता छावनी बाजार में हैं और श्रीचिंता हरण महादेव मंदिर के रूप में पहचाना जाता है। ऐसी मान्यता है कि यहां दर्शन मात्र से श्रद्धालुओं की सारी चिंता दूर हो जाती है। चिंताग्रस्त क्षेत्रवासियों के साथ देश भर से श्रद्धालु चिंता हरण महादेव मंदिर पहुंचते हैं। इस मंदिर के चारों तरफ मनमोहक बांझ, बुरांस, चीड़ और देवदार के पेड़ हैं। मंदिर के पास जलकुंड भी है। जिससे इसे बावड़ी मंदिर भी कहा जाता है। मान्यता है कि चिंता हरण महादेव मंदिर में स्वयंभू शिवलिंग है, जो आकार में सामान्य शिवलिंगों से काफी बड़ा है। मंदिर के पुजारी सिद्धेश्वर गिरी महाराज कहते हैं कि मंदिर में विराजमान शिवलिंग स्वयंभू है। जब शिवलिंग प्रकट हुआ था तब यह आकार में इतना बड़ा नहीं था। उनका दावा है कि अब महादेव धीरे-धीरे अपना आकार बदल रहे हैं। यानी शिवलिंग का आकार बढ़ रहा है। पुजारी कहते हैं कि मंदिर का नाम चिंता हरण महादेव इसलिए पड़ा, क्योंकि जो लोग काफी परेशानियों में थे, वे यहां आए और उन्हें हर चिंता का निवारण मिला। ऐसी मान्यता है कि मंदिर में सच्चे दिल से जो कोई प्रार्थना करता है, महादेव उसकी चिंता दूर करते हैं। श्री चिंता हरण महादेव मंदिर के प्रति स्थानीय लोग व क्षेत्रवासियों की अटूट आस्था है। यहां पर शिवरात्रि के दिन हजारों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। मंदिर के चमत्कार से प्रभावित जो श्रद्धालु एक बार महादेव के दर्शन को आता है, वह फिर बार-बार आता ही रहता है, क्योंकि उसकी सारी चिंताएं महादेव के दर्शन मात्र से ही दूर हो जाती है।

शिवलिंग पर 1108 छोटे शिवलिंग

उत्तराखंड प्राचीन काल से ही धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से आकर्षण का केंद्र रहा है। इस राज्य में कई प्रसिद्ध मंदिर हैं जिनका विशेष महत्व है। इन्हीं मंदिरों में से एक है चिंता हरण महादेव मंदिर है। चिंता हरण महादेव मंदिर के पौराणिक महत्व की बात करें तो यहां भगवान शिव ने माता यशोदा की चिंताओं को दूर किया था। कहा जाता है कि भगवान शिव ने स्वयं माता यशोदा को वचन दिया था कि वे यहां हमेशा विराजमान रहेंगे और भक्तों की चिंताएं दूर करेंगे। जिसके बाद से इस मंदिर को चिंता हरण महादेव के नाम से जाना जाता है। मान्यता है कि यहां सच्चे मन से मांगी गई हर मनोकामना पूरी होती है। इस मंदिर का उल्लेख श्रीमद्भागवत पुराण में भी मिलता है, जहां भगवान शिव ने मां यशोदा से कहा था कि जो भी भक्त यहां आकर एक लोटा यमुना जल चढ़ाएगा, उसकी सभी चिंताएं दूर हो जाएंगी। यहां स्थापित शिवलिंग पर 1108 छोटे शिवलिंग उभरे हुए हैं, जो इसे अद्भुत बनाते हैं। एक अन्य कथा के अनुसार, जब भगवान कृष्ण ने माटी खाई थी और मां यशोदा को ब्रह्मांड दिखाया था, तब माता यशोदा ने भगवान शिव से प्रार्थना की थी और भगवान शिव ने उनकी चिंता दूर की थी।

यह मंदिर अपने समृद्ध इतिहास और पौराणिक कथाओं के लिए प्रसिद्ध है, यह लोगों की चिंताओं को अवशोषित करने की क्षमता के लिए प्रसिद्ध है, यह मंदिर शिवलिंग के लिए भी प्रसिद्ध है, यह स्थान अपने मंदिरों, वास्तुकला, स्मारकों और मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है, यह तीर्थयात्रा व संस्कृति के लिए भी प्रसिद्ध है।

धार्मिक और आध्यात्मिक स्थल

चिंता का अर्थ है व्यक्ति के सामने आने वाली परेशानियों के बारे में बहुत अधिक सोचना और हरण का अर्थ है विनाशक। इसलिए, यह मंदिर आपके सभी कष्टों को समाप्त करने वाला है। उत्तराखंड के चकराता में स्थित चिंता हरण महादेव मंदिर, भगवान शिव को समर्पित अत्यंत लोकप्रिय मंदिर है। यह मंदिर चकराता शहर से सिर्फ 3 किलोमीटर की दूरी पर है। मुख्य सड़क से मंदिर तक 10 मिनट का पैदल मार्ग है। यह प्रसिद्ध मंदिर देवदार और रोडोडेंड्रोन के घने वृक्षों से घिरा हुआ है। इस मंदिर के अंदर भगवान शिव के रूप में एक प्राकृतिक शिवलिंग स्थापित है। इस मंदिर का निर्माण श्रीमती मिसोरी देवी और श्रीमती तुलसी देवी ने करवाया था। इसका उद्घाटन ब्रिगेडियर आरएन मिश्रा ने किया था। चिंता हरण मंदिर पूरी श्रद्धा से पूजा करने वालों की सभी चिंताओं और तनावों को दूर करने के लिए जाना जाता है। यह मंदिर कई कारणों से प्रसिद्ध है। मसलन यह अपने समृद्ध इतिहास और पौराणिक कथाओं के लिए प्रसिद्ध है। यह स्थान लोगों की चिंताओं को अवशोषित करने की अपनी क्षमता के लिए प्रसिद्ध है। यह मंदिर शिवलिंग के लिए भी प्रसिद्ध है। यह स्थान अपने मंदिरों, वास्तुकला, स्मारकों और मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है। यह स्थान तीर्थयात्रा और संस्कृति के लिए भी प्रसिद्ध है। चार धाम यात्रा उत्तराखंड में सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक पर्यटन स्थलों में से एक है। इसलिए भी यह मंदिर श्रद्धालुओं के लिए सबसे धार्मिक और आध्यात्मिक स्थलों में से एक है। उत्तराखंड में इसे छोटे चार धाम के नाम से भी जाना जाता है। यह भारतीय हिमालय क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण हिंदू तीर्थस्थल है। यह उत्तराखंड राज्य के गढ़वाल क्षेत्र में है इसलिए इस परिपथ में चार धाम शामिल हैं। यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ। ऐसा माना जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवनकाल में एक बार इन धामों के दर्शन अवश्य करने चाहिए। यह भी माना जाता है कि यदि आप इन धामों के दर्शन करते हैं और पूरी श्रद्धा से प्रार्थना करते हैं, तो आपको परम मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। अगर आप इन धामों की यात्रा पर जाते हैं तो चिंता हरण महादेव मंदिर अवश्य जाना चाहिए। क्योंकि यह बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। यह एक ऐसा स्थान है जहां लोगों को मन की शांति मिलती है। यह पवित्र स्थान चार धामों के बहुत निकट भी है। इसलिए भी चार धाम यात्रा के दौरान चिंता हरण महादेव मंदिर के दर्शन अवश्य करने चाहिए।

साल भर खुला रहता है मंदिर

चिंता हरण महादेव मंदिर की यात्रा वैसे तो साल भर की जा सकती है, लेकिन यहां आने का सबसे अच्छा समय मई से अक्टूबर के बीच का है। इन महीनों में यहां की यात्रा सबसे बेहतरीन और आनंददायक होती है। सर्दियों के मौसम में यहां का मौसम ठंडा होता है। सर्दियों के मौसम में आसपास की पहाड़ियों पर बर्फबारी के कारण यहां का तापमान बहुत कम हो जाता है। बारिश के मौसम में भारी बारिश के कारण यहां की यात्रा करना थोड़ा मुश्किल और खतरनाक हो सकता है। हालांकि मानसून में यहां का मौसम बेहद सुहावना रहता है। चारों तरफ हरियाली छाई रहती है और पहाड़ियों से घिरे बादलों का मनमोहक नजारा देखने को मिलता है। इस समय यह जगह अपनी चरम सुंदरता पर होती है। गर्मियों के मौसम में यहां दिन में धूप और रात में हल्की ठंडी होती हैं। यहां मनाए जाने वाले त्योहारों के दौरान भी आ सकते हैं। यहीं से हिमालय की श्रृंखला भी नजर आती है।

उत्तराखंड के गढ़वाल मंडल में केदारनाथ विराजमान हैं तो कुमाऊं में जागेश्वर धाम जैसा प्रसिद्ध शिव मंदिर है, देवभूमि के शिवालयों में एक शिव मंदिर ऐसा भी है जहां शिवलिंग अपना आकार बदल रहा, यह शिव मंदिर देहरादून में चकराता छावनी बाजार में हैं जो चिंता हरण महादेव मंदिर के रूप में जाना जाता है।

मथुरा में भी है चिंता हरण महादेव मंदिर

कुछ ऐसी ही मान्यताओं वाला चिंता हरण महादेव मंदिर उत्तर प्रदेश के मथुरा में गोकुल महावन में ब्रह्मांड घाट से सटे हुए पूर्व की ओर यमुना जी के चिंता हरण घाट के समीप है। लोकमान्यता है कि यहां भगवान शिव को चिंता हरण महादेव के नाम से पुकारा जाता है। यहां भी 1008 छोटे शिवलिंगों के साथ स्वयंभू शिवलिंग होने का दावा किया जाता है। यानी शिवलिंग मानव निर्मित नहीं बल्कि स्वयं प्रकट हुआ है। पौराणिक कथा के अनुसार महादेव शिव, बाल कृष्ण के दर्शन के लिए कैलाश पर्वत से मथुरा आए थे। लेकिन मां यशोदा ने अपने कान्हा को उन्हें दिखाने से मना कर दिया था। उन्होंने कहा मेरा छोटा सा कान्हा आप से डर जाएगा, कृपया आप अपने भयावह रूप को खुद देखें। तब भगवान शिव अपने दृढ निश्चय के यमुना के घाट पर बैठ गए और संकल्प लिया कि मैं भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन किए बिना कैलाश पर्वत नहीं जाऊंगा। एक दिन माता यशोदा अपने पुत्र कृष्ण को स्नान कराने के लिए यमुना जी के ब्रह्मांड घाट पर ले गईं। वहां बाल कृष्ण ने मिट्टी खा ली। माता यशोदा को चिंता हुई कि मेरे बेटे को क्या हो गया है कि वह दूध, दही और माखन छोड़कर मिट्टी खा रहा है। जब माता यशोदा ने मिट्टी निकालने के लिए श्रीकृष्ण का मुंह खोला तो उन्हें पूरा ब्रह्मांड दिखाई देने लगा, यहां तक कि उन्होंने स्वयं को भी उसमें देखा। माता यशोदा को अपने बेटे की चिंता हुई, कि उसे कहीं कुछ हो तो नहीं गया है। तभी कुछ ग्वालों ने आकर माता यशोदा से कहा कि एक संत पास में ही बैठे हैं, अपने बेटे को उनके पास ले जाओ और उन्हें दिखाओ, वह तुम्हारे पुत्र को निश्चित रूप से ठीक कर देंगे। माता यशोदा श्रीकृष्ण को लेकर महादेव शिव के पास ले गईं। भगवान शिव ने माता यशोदा की चिंता को दूर कर दिया। इस तरह शिव जी को श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप के दर्शन हो गए। एक अन्य कथा के अनुसार माता यशोदा वृद्ध हो चली थी, लेकिन उन्हें कोई संतान नहीं थी। इसी चिंता में वे डूबी रहती थी। एक दिन माता यशोदा और नन्द बाबा यमुना जी के चिंता हरण घाट आए और महादेव जी से पुत्र प्राप्ति की प्रार्थना की। महादेव की कृपा से माता यशोदा एवं नंद बाबा को श्रीकृष्ण पुत्र रूप में प्राप्त हुए। यानी माता यशोदा की चिंता का हरण करने के कारण ही महादेव का नाम चिंता हरण महादेव हुआ। ●

यूट्यूब ने सख्त किए नियम

यूट्यूब के स्वामित्व वाले इस प्लेटफॉर्म ने एक सपोर्ट पेज पर जानकारी साझा करते हुए बताया कि अब यूट्यूब पार्टनर प्रोग्राम के तहत मास-प्रोड्यूस्ड और रिपेटेटिव कंटेंट को पहचानने और उनका मूल्यांकन करने की प्रक्रिया और भी सख्त की जाएगी।

बाबू सिंह
वरिष्ठ पत्रकार

आज के समय में यूट्यूब सिर्फ वीडियो देखने की जगह नहीं रह गया है बल्कि यह लाखों लोगों की कमाई का जरिया भी बन गया है। खासकर यूट्यूब शॉर्ट्स की बढ़ती लोकप्रियता ने नए और छोटे क्रिएटर्स को भी पैसे कमाने और पहचान बनाने का मौका दिया है। लेकिन अब यूट्यूब ने एक बड़ा बदलाव कर दिया है। यह बदलाव उन सभी लोगों को प्रभावित करेगा जो यूट्यूब से कमाई कर रहे हैं या कमाई करना चाहते हैं। अगर आप यूट्यूब पर वीडियो क्रिएट करके अपलोड करते हैं तो आपको नए नियम के बारे में जरूर जानना चाहिए। क्योंकि यूट्यूब आज के दौर में पूरी तरह से एक ओपन सोर्स है। इसमें कोई भी व्यक्ति वीडियो अपलोड करके कमाई कर सकता है। हालांकि इसके लिए आपको यूट्यूब की गाइडलाइंस को फॉलो करना जरूरी होता है। यूट्यूब ने 15 जुलाई से अपने मोनेटाइजेशन नियमों में बदलाव किया है। इसका मकसद ऐसे वीडियोज की पहचान करना है जो मौलिक नहीं हैं और सिर्फ व्यूज पाने के लिए बनाए जाते हैं। यूट्यूब का कहना है कि वह अपने अपडेट किए गए मोनेटाइजेशन गाइडलाइंस के तहत ऑरिजनल कंटेंट और ज्यादा मेहनत के साथ तैयार किए गए कंटेंट पर फोकस करेगा। जो क्रिएटर्स रिपीट कंटेंट या बार-बार एक ही कंटेंट को तैयार करते हैं, उन पर इसका प्रभावी असर पड़ेगा। यूट्यूब का कहना है कि यूट्यूब हमेशा क्रिएटर्स से ऑरिजनल और ऑथेंटिक कंटेंट अपलोड करने की उम्मीद करता है। यानी अब उन क्रिएटर्स पर शिकंजा कसा जाएगा जो बार-बार एक जैसे कंटेंट बनाते रहे हैं। यूट्यूब के स्वामित्व वाले इस प्लेटफॉर्म ने एक सपोर्ट पेज पर जानकारी साझा करते हुए बताया कि अब यूट्यूब पार्टनर प्रोग्राम के तहत मास-प्रोड्यूस्ड और रिपेटेटिव कंटेंट को पहचानने और उनका मूल्यांकन करने की प्रक्रिया और भी सख्त की जाएगी। क्योंकि क्रिएटर्स जब यूट्यूब पर वीडियो अपलोड करते हैं और चैनल पर कुछ जरूरी शर्तें पूरी हो जाती है जैसे सब्सक्राइबर, व्यूज आदि तो यूट्यूब आपको अपने पार्टनर प्रोग्राम में शामिल कर लेता है। इसके बाद वीडियो पर विज्ञापन आने लगते हैं और उन विज्ञापनों से यूट्यूबर को पैसे मिलते हैं। यानी ये एक ऐसा सिस्टम है जो यूट्यूब और क्रिएटर के बीच कमाई बांटने का तरीका है। लेकिन अब यूट्यूब उन चैनलों पर कड़ी कार्यवाही करेगा जो एक ही वीडियो को बार-बार चैनल पर अपलोड करते हैं। जो सिर्फ एआई से बने वीडियो दिन में दर्जनों बार डालते हैं जिनमें स्क्रिप्ट, आवाज और विजुअल सब कुछ बिना किसी इंसानी मेहनत के बनाया जाता है। ऐसे कंटेंट को अब स्पैम और आर्टिफिशियल एक्टिविटी माना जाएगा। इसका नतीजा सीधा होगा डिमोनेटाइजेशन। यानी आपका चैनल यूट्यूब पार्टनर प्रोग्राम से बाहर कर दिया जाएगा और एड से पैसे मिलने बंद हो जाएंगे। अगर एआई से बनाए गए नकली वीडियो गलत जानकारी (फेक न्यूज) या नफरत फैलाने वाली बातों (हेट स्पीच) वाले वीडियो डालते हैं तो वीडियो से होने वाली कमाई बंद की जा सकती है, चैनल यूट्यूब पार्टनर प्रोग्राम से हटाया जा सकता है।

एआई से बनाए गए नकली वीडियो गलत जानकारी (फेक न्यूज) या नफरत फैलाने वाली बातों (हेट स्पीच) वाले वीडियो यूट्यूब पर डालते हैं तो वीडियो से होने वाली कमाई बंद हो सकती है, किसी भी चैनल को यूट्यूब पार्टनर प्रोग्राम से हटाया जा सकता है।

रिपेटेटिव कंटेंट अब नहीं चलेंग

कंपनी का कहना है कि यूट्यूब हमेशा से ही ओरिजिनल और ऑथेंटिक कंटेंट को बढ़ावा देता आया है, और यह नीति उसी दिशा में एक और कदम है। यूट्यूब की मोनेटाइजेशन पॉलिसी में पहले से ही स्पष्ट है कि जो भी क्रिएटर यूट्यूब से पैसे कमा रहे हैं, उनके कंटेंट को मौलिक होना चाहिए। यूट्यूब की नई नीति दो बातों पर खास जोर दे रही है-पहली कंटेंट की मौलिकता यानी किसी और का कंटेंट बिना बड़े बदलाव के उपयोग नहीं किया जा सकता। अगर कंटेंट कहीं से लिया भी गया है तो उसे इस हद तक मॉडिफाई करना जरूरी है कि वह नया लगे और आपका खुद का हो। दूसरा रिपेटेटिव कंटेंट अब नहीं चलेंगे। वहीं तरह-तरह के टेम्पलेट्स में बनाए गए, बार-बार दोहराए गए और केवल व्यूज पाने के मकसद से तैयार किए गए वीडियो अब यूट्यूब की नजर में संदिग्ध होंगे। इसमें कम मेहनत वाला कंटेंट, क्लिकबेट थंबनेल्स और बिना किसी शिक्षा या मनोरंजन की भावना के बनाए गए वीडियोज शामिल होंगे। हालांकि यूट्यूब ने सीधे तौर पर इसका जिक्र नहीं किया, लेकिन मौजूदा ट्रेंड्स को देखते हुए माना जा रहा है कि ऐसे एआई जनरेटेड वीडियो जिनमें आवाज या रिएक्शन को बिना मानवीय योगदान के जोड़ा गया हो, वो इस नई सख्ती के दायरे में आएंगे। यूट्यूब की नई पॉलिसी के तहत मोनेटाइजेशन के लिए पहले से ही कुछ न्यूनतम शर्तें हैं जैसे कि कम से कम 1,000 सब्सक्राइबर्स होने चाहिए और पिछले 12 महीनों में 4,000 वैध पब्लिक वॉच ऑवर्स या पिछले 90 दिनों में 10 मिलियन वैध शॉट्स व्यूज हों। किंतु अब इन शर्तों को पूरा करने के बाद भी कंटेंट की गुणवत्ता और मौलिकता तय की जाएगी कि क्रिएटर को यूट्यूब से पैसा मिलेगा या नहीं? यूट्यूब का यह कदम उन सभी लोगों के लिए चेतावनी है जो कम मेहनत में ज्यादा कमाई की उम्मीद कर रहे थे। अब केवल मेहनत, क्रिएटिविटी और असली कंटेंट ही इस प्लेटफॉर्म पर टिक पाएंगे। अगर कोई चैनल सिर्फ बैकग्राउंड बदलाव के साथ कोई वीओ बेस्ड वीडियो अपलोड करता है तो उसे इसमें शामिल किया जाएगा। वहीं किसी चैनल द्वारा महज स्लाइड शो अपलोड होते हैं और उनमें एक जैसी ही जानकारी दी जाती है तो ऐसा कंटेंट मास प्रोड्यूस होंगे। नई पॉलिसी आने से पहले यूजर्स के बीच यह भ्रम था कि क्या री-यूज्ड कंटेंट उपयोग कर पाएंगे या नहीं? तो आपको बता दें कि यूट्यूब ने साफ कर दिया है कि उनकी री-यूज्ड कंटेंट पॉलिसी में कोई बदलाव नहीं हो रहा है। इस पॉलिसी के तहत यूट्यूब द्वारा कमेंट्री, क्लिप्स और रिएक्शन वीडियो जैसे कंटेंट का रिव्यू किया जाता है। इस प्रकार के कंटेंट को अभी भी मोनेटाइज किया जाएगा। हालांकि, इसमें अन्य क्रिएटिविटी होनी चाहिए जैसे कि ऑरिजनल कमेंट्री हो या कोई एजुकेशनल जानकारी आदि।

4.8 मिलियन चैनल्स को भी रिमूव किए

अब यूट्यूब गैंबलिंग साइट्स या ऐप्स को प्रमोट करने वाले वीडियो पर यूट्यूब एज रेस्ट्रिक्शन भी लगाएगा। ऐसा कोई भी वीडियो साइन आउट यूजर्स और 18 साल से कम उम्र के यूजर्स को नहीं दिखाए जाएंगे। अगर कोई क्रिएटर किसी गैंबलिंग से गांरटी के साथ रिटर्न मिलने का दावा करता हुआ पाया गया तो उसे तुरंत प्लेटफॉर्म से हटा दिया जाएगा। यूट्यूब की कॉन्टेंट पॉलिसी के खिलाफ बनाए गए करीब 9 लाख से ज्यादा वीडियो को डिलीट कर दिया है। डिलीट किए वीडियो में से सबसे ज्यादा वीडियो भारतीय क्रिएटर्स के डिलीट किए गए। करीब 3 मिलियन से अधिक वीडियो भारतीय क्रिएटर्स के थे जिन्हें डिलीट किया गया। कंपनी की पॉलिसी का उल्लंघन न हो इसे जानने के लिए अब यूट्यूब अपने प्लेटफॉर्म में एआई बेस्ड सिस्टम का इस्तेमाल कर रहा है। वीडियो हटाने के साथ ही यूट्यूब ने करीब 4.8 मिलियन चैनल्स को भी रिमूव कर दिया है।

क्या एआई कंटेंट चलेगा?

यूट्यूब ने साफ कर दिया है कि वह एआई पर रोक नहीं लगा रहा है। बल्कि वो चाहता है कि इसके द्वारा कंटेंट को और बेहतर बनाया जाए। यूट्यूब खुद क्रिएटर्स को एआई टूल्स प्रदान करता है जिसमें ऑटो डबिंग और ड्रीम स्क्रीन शामिल है। क्रिएटर्स के लिए यूट्यूब की मोनेटाइजेशन पॉलिसी का पालन करना जरूरी है। अब चैनल को यह बताना होगा कि क्या उनका कंटेंट असली है या नहीं। वहीं अगर किसी भी प्रकार का बदलाव किया गया है तो उसकी भी जानकारी देनी होगी। उदाहरण के लिए अगर कोई कंटेंट एआई फोटो या वीडियो से लैस है तो उसमें यह बताना होगा कि यह एआई जनरेटेड है। अगर कंटेंट क्रिएटर एआई के जरिए ब्यूटी फिल्टर लगाते हैं। रिकॉर्डिंग वॉयस की गुणवत्ता बेहतर करने के लिए इफेक्ट लगाते हैं तो उसमें ये बताने की जरूरत नहीं होगी। हाल ही में यूट्यूब और अन्य वीडियो प्लेटफॉर्म्स पर एआई वीडियो की बाढ़ देखने को मिली थी। लेकिन अब यूट्यूब के सख्त नियमों का खामियाजा इस तरह के वीडियो को भी भुगतना पड़ सकता है। बताया जा रहा है रिवाइज्ड गाइडलाइन्स में एआई से बने वीडियोज भी शामिल हैं। यह ऐसे वीडियो होते हैं जहां क्रिएटर्स एआई से जेनरेटेड आवाजों का इस्तेमाल करके किसी और के वीडियोज पर रिएक्ट करते हैं। हालांकि इस पर स्पष्ट जानकारी का फिलहाल इंतजार है।

यूट्यूब की कॉन्टेंट पॉलिसी के खिलाफ बनाए गए करीब 9 लाख से ज्यादा वीडियो को डिलीट कर दिया है, डिलीट किए वीडियो में से सबसे ज्यादा वीडियो भारतीय क्रिएटर्स के डिलीट किए गए, करीब 3 मिलियन से अधिक वीडियो भारतीय क्रिएटर्स के थे जिन्हें डिलीट किया गया।

अब चैनल को यह बताना होगा कि क्या उनका कंटेंट असली है या नहीं, वहीं अगर किसी भी प्रकार का बदलाव किया गया है तो उसकी भी जानकारी देनी होगी, उदाहरण के लिए अगर कोई कंटेंट एआई फोटो या वीडियो से लैस है तो उसमें यह बताना होगा कि यह एआई जनरेटेड है।

शॉर्ट्स ने बदला ट्रेंड

यूट्यूब पर एक जैसे वीडियो का ट्रेंड शॉर्ट्स की वजह से शुरू हुआ है। साल 2020-2021 में कंपनी ने रील्स जैसे वीडियो को अपने प्लेटफॉर्म पर पेश किया था। इस तरह के वीडियो को यूट्यूब पर शॉर्ट्स नाम दिया गया था। बड़ी बात यह है कि यूट्यूब से पहले इस तरह के वीडियो जिस भी प्लेटफॉर्म पर पॉपुलर थे जैसे कि टिकटॉक, वहां एक जैसा और रिपीट होने वाला कंटेंट आम बात थी। अब क्योंकि प्लेटफॉर्म के तौर यूट्यूब का नेचर टिकटॉक जैसे प्लेटफॉर्म से अलग है इसलिए मॉनेटाइजेशन पॉलिसी में बदलाव करके रिपीट होने वाले बोरिंग और एक जैसे कंटेंट की सफाई यूट्यूब करना चाह रहा है। यूट्यूब की नई पॉलिसी के तहत अब अगर कोई क्रिएटर चाहता है कि उसकी वीडियो पैसा कमाए, तो जरूरी होगा कि उसका वीडियो ओरिजनल हो। अगर किसी वीडियो को किसी दूसरी जगह से उठाया जाता है, तो भी उसमें बदलाव करना जरूरी होगा। यूट्यूब चाहता है कि क्रिएटर्स के वीडियो व्यूज से ज्यादा जानकारी देने या दर्शकों का मनोरंजन करने पर केंद्रित होने चाहिए। इतना ही नहीं यह सख्ती ऐसे कंटेंट पर भी लागू होगी जो एआई से बनाए जाते हैं। यूट्यूब की ओर से इस बारे में जानकारी एक सपोर्ट पेज पर दी है। इस पर बताया गया है कि वह अपनी मॉनेटाइजेशन पॉलिसी को अपडेट कर रहा है। ऐसा मास-प्रोड्यूस्ड और रिपीट होने वाले कंटेंट की पहचान करने के लिए किया गया है। इस सपोर्ट पेज पर यूट्यूब ने साफ किया है कि उसने हमेशा से क्रिएटर्स से ओरिजनल और ऑथेंटिक कंटेंट बनाने की अपेक्षा की है।

समीक्षा

'वो साल चौरासी' एक प्रेम कथा

मनोज इष्टवाल ने सीधी-सपाट भाषा में जीवन में जो हुआ, देखा और समझा उसे बेबाकी से अपने आत्म-संस्मरणों में सार्वजनिक कर दिया, रोचकता यह है कि अपने आत्म-संस्मरणों को संवेदनाओं की सरिता में लेखक ने निर्बाध रूप में बहने दिया है, उसे बांधकर निश्चित दिशा देने की अनावश्यक चेष्टा नहीं की है।

द ल्वाळआ कळ्या, अफुथैंन भारी हीरो समझदी क्य! पर क्य कन यार...त्वे दिख्यां बिना भि नि रयेंदु! जब क्वी छोरी त्वे दगड़ बात करदी छई त मन ब्वादु छायो कि वींका भि अर त्यारा भी पळ्य द्वी आंखा निखोळी द्यूं! अर हां...अच्छु व्है वीं कु ब्यो व्हेगे, निथर तू वींका ही फेर मा पोडयूं रैंदू...! अर्थात ओ रे लॉटे कालिये, अपने को बड़ा हीरो समझता है क्या! लेकिन क्या करूं यार...तुझे देखे बिना भी रहा नहीं जाता! जब कोई लड़की तेरे साथ बात करती थी तब मन कहता था कि उसकी भी और तेरी भी आंखें एक ही झटके में निकाल दूं! और हां...अच्छा हुआ उसकी शादी हो गई, नहीं तो तू उसके चक्कर में ही पड़ा रहता!'

'भैजी...आज से तुम्हारी रोज यहां दौड़कर आने की छुट्टी। वीं कु ब्यो हेग्या (उसका विवाह हो गया) मुझे काटो तो खून नहीं...मेरी तरफ से एक तरफा ऐसा प्यार था जिसका आदि न अंत...!' 'तुम्हें विश्वास न हो तो उस गेंठी के पेड़ को देख आना। जब भी हम घास काटने जाया करते थे, वह उस पर उसी चादर का एक और टुकड़ा बांधती थी जिसे फाड़कर उसने कभी तुम्हारे दरांती से कटे अंगूठे पर बांधा था। सच मानो तब से न किसी ने उस पेड़ से घास ही काटा न उसने किसी को घास काटने दिया। उस पेड़ से उसने तुमसे शादी की मन्नत मांगी थी। तुम इतने निष्ठुर निकले कि उसका दिल तोड़ कर दिल्ली में ही मंगनी कर ली और उसकी खबर लेने तब आ रहे हो जब उसकी शादी हो रही है, ताकि उसकी डोली उठते देख सको।'

अतीत के अन्तर्द्वंद में

क्या शमशान की लकड़ी लेकर घर जाएगा? मैं अवाक! निःश्ब्द! क्या कहता...उस पेड़ ने मेरी तीन बहुत प्यारी चीजों के संजोग को निभाया। लेकिन मुझे उसकी पीर तीनों बार तब पता चली जब सब कुछ निबट चुका था। यानी मेरा पहला प्यार...मेरे पिता और मेरे ताऊ...मेरा सब कुछ...! बस, इतनी सी कहानी है 'वो साल चौरासी' किताब की। पर इस बित्तेभर की कहानी की बैचेनी ने उससे ही उसको ता-उम्र छीन लिया। ये बात और है कि नित्य-प्रतिदिन का जीवनीय वक्त उन घावों को उभरने नहीं देता है। परंतु उसकी कसक दिल के सबसे नाजुक कोने में हर समय उसे कचौटती रहती है। उसी कसक की कथा और व्यथा को उसने जग-जाहिर किया है। सच तो ये है कि ऐसी ही मिलती-जुलती जीवनीय नियतियों से हम-सब गुजरते हैं। मेरी हम-उम्र के महानुभावों के अपने-अपने 'वो साल चौरासी' हैं और होंगे। इस किताब को पढ़कर एक भूली सी कहानी उनको जरूर याद आई होगी। ये बात और है कि वे उस समय इस किताब को पढ़ते हुए मुस्कराएं होंगे या फिर उस अतीत के अन्तर्द्वंद में अनमने से हुए होंगे। इस समीक्षा की टिप्पणियों में वे इसे सार्वजनिक करेंगे या नहीं, यह सशंय है। करेंगे भी तो मनोज इष्टवाल जैसे बेधड़क तरीके से तो नहीं, ये बात तय है।

80 के दशक में गढ़वाल के निम्नमध्यम वर्गीय पहाड़ी किशोर के माध्यम से उस दौर के युवाओं की मनोभावनाएं, दोस्ती की अंतरंगता, उनके संघर्ष, लोक जीवन से उनका लगाव, समर्पण, माता-पिता की परेशानियों को समझने की प्रवृत्ति, ग्रामीणों के अपने संघर्ष, उनके रिश्ते, आपसी मनमुटाव, ईष्या, पिता-पुत्र के आपसी रिश्तों का तनाव यह किताब बताती है।

प्रेम में सिर्फ देना होता

मनोज इष्टवाल एक कामयाब और चर्चित पत्रकार हैं, बिंदास भी और बहुआयामी भी। जीने और कार्य करने का उनका तरीका और नजरिया जरा हटकर है। इसलिए मित्रों की जुबां और नजर में वे बने रहते हैं। 'वो साल चौरासी' आत्म-संस्मरण के बतौर लेखक वो मित्रों और पाठकों में नई चर्चा में हैं। चंगीज आइत्मातोव का विश्व चर्चित उपन्यास 'पहला अध्यापक' का नायक दूइशेन और नायिका आल्तीनाई के अनकहे प्रेम, पवित्र और त्यागपूर्ण संबंध इस विचार को पुष्ट करते हैं कि प्रेम में 'केवल और केवल' देना होता है। पाने की इच्छा मात्र ही प्रेम की आत्मा को कमजोर कर देता है। लेखक मनोज इष्टवाल के मन ही मन के ऐसे ही प्रेम प्रसंगों की कशिश की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति है 'वो साल चौरासी'। लेखक ने स्वीकारा है कि 'अतृप्त प्रेम एक गहरी भावना है जो व्यक्ति को मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से प्रभावित करती है। इसका प्रभाव सकारात्मक हो सकता है यदि इसे सही दृष्टिकोण से देखा जाए और नकारात्मक हो सकता है यदि इसे संभालने में कठिनाई हो।' वास्तव में, 'वो साल चौरासी' पुस्तक की प्रेम कहानियों का एक प्रमुख हिस्सा मनोज इष्टवाल का व्यक्तिगत हो सकता है। परंतु पुस्तक की मूल आत्मा बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के दशकों में जन्में उन अधिकांश उत्तराखंडी व्यक्तित्वों की ही है जो ग्रामीण पष्ठभूमि में पले और पढ़े। लड़कपन में अपने गांव-परिवेश से आधुनिक शिक्षा और जीवकोपार्जन के लिए बाहरी दुनिया की ओर वो निकले। भौगोलिक विकटताओं, शैक्षिक पिछड़ेपन और आर्थिक अभावों को पीछे धकेलते हुए वे जीवन और जीविका के क्षेत्र में रम गए। उनके जीवन को शिक्षा और रोजगार ने समृद्ध जरूर किया। लेकिन बाहरी जीवन की नित्य नई जरूरतों, अपेक्षाओं और दायित्वों के भ्रमजाल ने उन्हें जीवन-भर अपने घर-परिवार और रोजगार में ही समेटकर रखा। वर्तमान में इसी जीवनीय प्रक्रिया में वे अपने गांव, इलाके और जन-जीवन से बेगाने हुए हैं। वे उन व्यक्तियों को भुला बैठे जिनके साथ (लड़कपन में ही सही) जीवन जीने के वादे वे कर चुके थे। जिस समाज और क्षेत्र से वे बाहर निकले थे, वो उनके जीवनीय नेपथ्य में विलीन हो गया। परंतु मन के किसी कोने में अवचेतन अवस्था में समाई वे अनगिनत यादें कभी-कभार उनसे मुखातिब हो ही जाती हैं।

पहाड़ी जीवन शैली बताती किताब

यह पुस्तक विगत शताब्दी के अस्सी के दशक में गढ़वाल के निम्न मध्यम वर्गीय पहाड़ी किशोर के माध्यम से उस दौर के युवाओं की मनोभावनाएं, दोस्ती की अंतरंगता, उनके संघर्ष, लोक जीवन से उनका लगाव, समर्पण, माता-पिता की परेशानियों को समझने की प्रवृत्ति, ग्रामीणों के अपने संघर्ष, उनके रिश्ते, आपसी मनमुटाव, ईष्या, पिता-पुत्र के आपसी रिश्तों का तनाव एवं लगाव, संयुक्त परिवारों का बाहुल्य, खेती-किसानी, शहरी प्रवासियों की मनोवृत्ति, महानगरों में उनकी मजबूरियां, किशोर-किशोरियों के आपसी संवाद, युवाओं के एक-दूसरे के प्रति आकर्षण के तौर-तरीके, उनके लड़ाई-झगड़े, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के रिश्ते, विद्यालयों का अनुशासन, शहर से गांव में आए कुटम्बजन के स्वागत की परंपरा, तीज-त्यौहार, उत्सव, मेलों का परिदृश्य आदि को 16 अध्यायों में जीवंत तरीके से सार्वजनिक करती है। उस दौर के किशोर-किशोरियों के आपसी बातचीत के कोड वर्ड के एक रोचक प्रसंग का आनंद लीजिए- 'बहे बक्या बबात बव्हे' 'बकुछ बनि बबोली बएंन...!' भाषा में बात होने लगी...! क्या आप भी समझ सकते हैं इस भाषा शैली को? नहीं समझ तो हर शब्द के आगे का 'ब' निकाल दीजिए...। पूरी बात समझ में आ जाएगी। उन्हें लगा कि मैं कुछ नहीं जानता, लेकिन मैं इस कोड वर्ड भाषा शैली को जानता था। मैंने वहां से खिसकना ही उचित समझा।' इस पुस्तक में लेखक की यादें नितांत व्यक्तिगत हैं। परंतु इन यादों के खजाने को सार्वजनिक करके वह नए जमाने को बताने के लिए बेताब है। जीवन में यह क्यों, कब और कैसे घटित हुआ? यह अभी भी अनुत्तरित है। आज 'उसके लिए वे' और 'उनके लिए वो' अंजाने है। पर वो यादें हैं कि रोज चली आती हैं, वक्त-बेवक्त उससे मिलने, बतियाने और उसको सहलाने। ताकि, जीवन की नर्म नमी जीवंत रहे।

जिंदगी का सच स्वीकारा

मनोज इष्टवाल ने सीधी-सपाट भाषा में जीवन में जो हुआ, देखा और समझा उसे बेबाकी से अपने आत्म-संस्मरणों में सार्वजनिक कर दिया। रोचकता यह है कि अपने आत्म-संस्मरणों को संवेदनाओं की सरिता में लेखक ने निर्बाध रूप में बहने दिया है। उसे बांध कर एक निश्चित दिशा देने की उन्होंने अनावश्यक चेष्टा नहीं की है। पहाड़ी नदी की तरह एक ठेठ पहाड़ी आदमी के निरंतर प्रवाहमान व्यक्तित्व की कहानी है, जिसे कहीं ठौर नहीं। लेखक जीवन में कहां-कहां नहीं भटका और कैसी-कैसी मुसीबतों का बचपन से सयानेपन तक सामना नहीं किया? लेकिन भटकनों की इस यात्रा में उसका मन सदैव जखेटी इंटर कालेज, अगरोड़ा, पैडुल, धारकोट, थैर, नैल, खरगड़ नदी, कुलड़ीधार, कुणाबूण, घाट उडियार, असवालस्यूं, कफोलस्यूं, क्रिकेट, गाय-बकरी चराना, मुंडनेश्वर मेला, चिट्ठी लिखना फिर उसे फाड़ना, चंद्र प्रकाश, गोकुल, सुलोचना फूफू, धर्मा जोगी आदि में अटका रहा। तभी तो, 'ऊधौ मोहि बृज बिसरत नाहीं...यह मथुरा कंचन की नगरी मनिमुत्ताहल जाही' जैसे चरम वियोग के भाव इस किताब में हैं। लेखक के 'मन का हंस' तो आज भी यही कहता है '

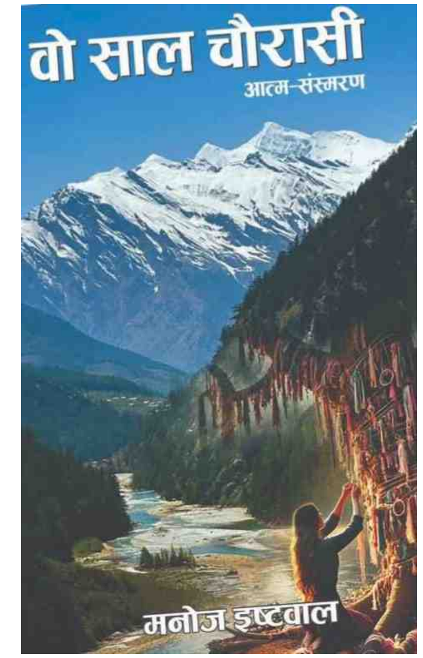

जैसे उडि जहाज कु पंछी, फिर जहाज पर आवे'। ये महज आत्मकथा और आत्मसंस्मरण नहीं हैं। क्योंकि, ज्यादातर आत्मकथाओं और संस्मरणों में दिखाई देने वाली आत्ममुग्घता इसमें सिरे से गायब है। यह लेखक की लेखकीय ईमानदारी, हिम्मत, उदारता और साफगोई का ही कमाल है। ऐसा करके उन्होने पाठकों को भी अपनी-अपनी जिंदगी के सच को स्वीकार करने का हौसला प्रदान किया है। इन अर्थों में ये आत्म-संस्मरण मात्र नॉस्टेल्जिया नहीं है। यह किताब बताती है कि आदमी की नियति भी क्या है कि उसे दुनियादारी के तथाकथित मानकों को बनाए रखने के लिए प्यार तो छिप कर करना होता है। लेकिन अपना गुस्सा और नफरत को बेहिचक बोलने और करने में उसे कोई ज्यादा संकोच नहीं होता है। वह दिल से जिसे चाहता है उससे जाहिर करने में संकोच करता है और जिससे बात नहीं करना चाहता उससे बात करना अक्सर उसकी मजबूरी हो जाती है। तभी तो मन की बात मन में ही रह जाती है। इसी अधूरेपन की अतृप्तता में आदमी का संपूर्ण जीवन बीत जाता है। मित्र जयप्रकाश पंवार ने सही लिखा है कि 'वो साल चौरासी' जैसी पुस्तक उत्तराखंड के परिपेक्ष्य में एक नवीन लेखकीय पहल है। इस पुस्तक के माध्यम से मनोज इष्टवाल ने हजारों-हजार उत्तराखंडी मित्रों की मनोभावों को जग-जाहिर किया है। इस तथ्य को स्वीकारते हुए कि मोहब्बतें हमेशा जीवंत और जिंदाबाद रहेंगी, पत्रकार और लेखक मनोज इष्टवाल को इस चर्चित पुस्तक के लिखने और उसके प्रकाशन की बधाई और शुभाशीष। ये लेखकीय सफर जारी रहे...।

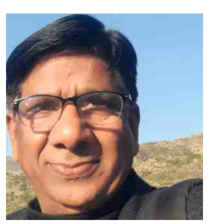

अरुण कुकसाल
चामी, पौड़ी, गढ़वाल

पर्यटन

जन्नत जैसा मोरी गांव

मोरी के पास नैतवार भी छोटा सा गांव है, यहां सैलानी यादगार ट्रिप एंजॉय कर सकते हैं, यहां की हसीन वादियों में एक अलग ही नशा है, कहते हैं कि ये गांव महाभारत काल से जुड़ा है, नैतवार टोंस नदी के संगम पर स्थित है, जिसकी वजह से यह जगह ट्रैकिंग और नेचर प्रेमी के लिए जन्नत से कम नहीं है।

अतुल सिन्हा
टीवी जर्नलिस्ट

पर्वतीय राज्य उत्तराखंड अपनी नैसर्गिक सुंदरता और मनोहर, आकर्षक व हसीन दृश्यों के लिए देश और दुनिया में मशहूर है। यहां का शांत वातावरण-स्वच्छ हवा और मौसम आने वाले टूरिस्टों पर अपनी अमिट छाप छोड़ता है। शायद यही वजह है कि देवभूमि उत्तराखंड की हसीन वादियों की खूबसूरती न केवल स्थानीय लोगों को बल्कि देशी और विदेशी सैलानियों को खूब आकर्षित करती हैं। हालांकि उत्तराखंड में घूमने वाली जगहों की कोई कमी नहीं है। लेकिन उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले के छोटे से मोरी गांव की बात ही कुछ अलग है। देश की राजधानी दिल्ली से करीब 410 किलोमीटर की दूरी पर छोटा सा गांव मोरी अपनी खूबसूरती के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध है। यह उत्तरकाशी के बेहतरीन हिल स्टेशन में से एक है। हरे-भरे बासमती धान के खेत, खूबसूरत वॉटरफॉल और यहां का नजारा मोरी गांव की सुंदरता में चार चांद लगाते हैं। एशिया का सबसे लंबा देवदार का जंगल मोरी गांव में ही है। हालांकि यह जगह अब तक पर्यटकों की नजर से बची हुई है। लेकिन उत्तराखंड आने वाले लोगों को एक बार इस गांव में जरूर आना चाहिए। सैलानी मोरी गांव आकर जेपी कैंप में ठहर सकते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि यह जगह बेहद खूबसूरत है। यहां आप घूमने के साथ-साथ ट्रैकिंग का भी लुत्फ उठा सकते हैं। नदी के पास होने के कारण यह जगह पर्यटकों को सबसे ज्यादा आकर्षित करती है। अगर आप वाइल्ड लाइफ लवर हैं, तो आपको मोरी गांव में वन विभाग के जंगल की यात्रा जरूर करनी चाहिए। जहां अलग-अलग तरह के वन्यजीवों को घूमते हुए करीब से देख सकते हैं। यही नहीं मोरी गांव के चारों तरफ लंबे-लंबे देवदार के पेड़ है। इनकी खूबसूरती को निहारते हुए सैलानी जंगल वॉक पर जा सकते हैं। प्रकृति से लगाव रखने वाले लोगों को पक्षियों की चहचहाहट सुनकर काफी सुकून मिलेगा। साथ ही मोरी के पास ही नैतवार भी छोटा सा ही गांव है, लेकिन यहां आकर सैलानी एक यादगार ट्रिप एंजॉय कर सकते हैं। यहां की हसीन वादियों में एक अलग ही नशा है। कहते हैं कि ये गांव महाभारत काल से जुड़ा हुआ है। नैतवार टोंस नदी के संगम पर स्थित है, जिसकी वजह से यह जगह ट्रैकिंग और नेचर प्रेमी के लिए जन्नत से कम नहीं लगती।

दुर्योधन मंदिर

उत्तराखंड को देवभूमि कहा ही नहीं माना भी जाता है। देवी-देवताओं और आस्था का केंद्र ये राज्य खुद में कई पौराणिक कथाएं और रहस्य समेटे हुए हैं। उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में महाभारत के खलनायक दुर्योधन और कर्ण के मंदिर भी है। नैतवार गांव से करीब 12 किलोमीटर की दूरी और देहरादून रोड पर सौर गांव में दुर्योधन का मंदिर है। स्थानीय लोग इस मंदिर को बहुत पवित्र मानते हैं। दुर्योधन के मंदिर की कहानी पाताल लोक के राजा भुब्रुवाहन से जुड़ी है। यहां से करीब डेढ मील दूर दानवीर कर्ण का मंदिर सारनौल गांव में है। सारनौल और सौर गांव में कर्ण तथा दुर्योधन के मंदिर की कहानी पाताल लोक के राजा भुब्रुवाहन से जुड़ी है। भुब्रुवाहन एक महान योद्धा था। वह कौरव और पांडव के बीच हुए महाभारत युद्ध का हिस्सा बनना चाहता था। कौरवों की तरफ से युद्ध में भाग लेने के लिए वह पाताल लोक से धरती पर आया, लेकिन भगवान श्रीकृष्ण को अंदेशा था कि भुब्रुवाहन ही केवल अर्जुन के लिए परेशानी खड़ी कर सकता है। ऐसे में उन्होंने पहले ही पाताल लोक के राजा को चुनौती दे दी। भगवान श्रीकृष्ण ने भुब्रुवाहन को एक ही तीर से एक पेड़ के सभी पत्तों को छेदने की चुनौती दी। लेकिन भगवान श्रीकृष्ण ने पहले ही एक पत्ता तोड़कर अपने पैर के नीचे दबा लिया था। पेड़ पर मौजूद सभी पत्तों को छेदने के बाद भुब्रुवाहन का तीर श्रीकृष्ण के पैर की तरफ बढ़ रहा था, तभी उन्होंने अपना पैर हटा लिया। इसके बाद भगवान श्रीकृष्ण ने भुब्रुवाहन से निष्पक्ष रहने के लिए कहा। लेकिन महाभारत के युद्ध से दूर रहना किसी भी योद्धा को मंजूर नहीं था। इसलिए भगवान श्रीकृष्ण ने राजा भुब्रुवाहन का सिर धड़ से अलग कर दिया और उसके सिर को यहां एक पेड़ पर टांग दिया। यहीं से पाताल लोक के राजा भुब्रुवाहन ने महाभारत का पूरा युद्ध देखा। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार जब भी महाभारत के युद्ध में कौरव की रणनीति विफल होती थी, तब राजा भुब्रुवाहन जोर-जोर से रोने लगता था। कहा जाता है कि भुब्रुवाहन के इन्हीं आंसूओं से यहां तमस या टोंस नाम की नदी बनी है। लोकमान्यता है कि यहां राजा भुब्रुवाहन आज भी रोते हैं। महाभारत काल से चली आ रही दुर्योधन-कर्ण की दोस्ती आज भी यहां जिंदा है। टोंस नदी के पानी को आज भी कोई नहीं पीता। दुर्योधन और कर्ण दोनों भुब्रुवाहन के बड़े प्रशंसक थे। इस कारण स्थानीय लोग आज भी दोनों की वीरता को नमन करते हैं। इसलिए भुब्रुवाहन के मित्र कर्ण और दुर्योधन के मंदिर बनाए हैं। दोनों इस इलाके के क्षेत्रपाल भी बन गए। एक अन्य लोककथा के अनुसार टोंस नदी के किनारे बसे स्थानों का इतिहास प्राचीनकाल तक जाता है। महाभारत काल में इस नदी का उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि महाभारत युद्ध के बाद, द्रौपदी अपने पति पांच पांडवों के साथ देहरादून रहने आई थीं। अपने बच्चों की मृत्यु का शोक मनाते हुए, उन्होंने इस नदी के पास आंसू बहाए और इन्हीं आंसुओं से टोंस नदी का निर्माण हुआ। एक अन्य कथा के अनुसार ऐसा माना जाता है कि टोंस नदी का निर्माण रावण की बहन सूर्पणखा के आंसुओं से हुआ था इसी लिहाजा ग्रामीण इस नदी का पानी नहीं पीते। ग्रामीणों का मानना है कि सूर्पणखा के आंसू आज भी नदी में बहते हैं। अलग-अलग लोककथाएं व लोकमान्यताएं निश्चित रूप से किसी को भी भ्रमित ही करेंगी। इन कहानियों में सिर्फ विशेष आकर्षण और सांस्कृतिक महत्व ही नजर आता है।

लोककथा के अनुसार टोंस नदी के किनारे बसे स्थानों का इतिहास प्राचीनकाल तक जाता है, महाभारत काल में इस नदी का उल्लेख मिलता है, महाभारत युद्ध के बाद द्रौपदी पांच पांडवों के साथ देहरादून रहने आई थीं, अपने बच्चों की मृत्यु का शोक मनाते हुए, उन्होंने इस नदी के पास आंसू बहाए और इन्हीं आंसुओं से टोंस नदी का निर्माण हुआ।

लोकमान्यता से अलग

टोंस नदी उत्तराखंड के गढ़वाल क्षेत्र के टोंस ग्लेशियर से निकलती है। इसलिए इस नदी का नाम टोंस है। यह टोंस ग्लेशियर लगभग 20,720 फीट की ऊंचाई पर है। लगभग 250 किलोमीटर तक फैली इस नदी का प्रवाह ऊबड़-खाबड़ इलाकों, गहरी घाटियों और घने जंगलों से होकर गुजरता है। टोंस नदी की प्रमुख सहायक नदियों में रूपिन, सुपिन और यमुना शामिल हैं। यह देहरादून के कालसी क्षेत्र में यमुना नदी में मिल जाती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह नदी हिमालय की बर्फ और वर्षा जल से बनती है। लेकिन यह मिथक इस नदी के प्रति लोगों की भावनाओं और सांस्कृतिक जुड़ाव को दर्शाते हैं। टोंस नदी न केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि इसका पारिस्थितिक और सांस्कृतिक महत्व भी अत्याधिक है। यह नदी क्षेत्र के वनस्पति और जीव-जंतुओं के लिए जीवनदायिनी है। देहरादून की टोंस घाटी क्षेत्र में यह नदी धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों का केंद्र रही है। इसके किनारे कई पुरातात्विक स्थल, मंदिर और गांव भी हैं, जो इस क्षेत्र के समृद्ध इतिहास की कहानी कहते हैं।

इको-पर्यटन के रूप में विकसित

मोरी का इतिहास सदियों पुराना है, जिसमें इस क्षेत्र में बसने वाली विभिन्न संस्कृतियों का प्रभाव है। अतीत में मोरी गांव व्यापारिक केंद्र होता था जो गढ़वाल क्षेत्र को हिमाचल प्रदेश और तिब्बत से जोड़ता था और जीवन के लिए महत्वपूर्ण वस्तुओं और संस्कृति के आदान-प्रदान को सुगम रास्ता था। इस गांव में रहने वालों ने आज भी अपने पारंपरिक त्योहारों, अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों व अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित कर रखा है। ब्रिटिश औपनिवेशिक युग के दौरान मोरी गांव ने अपने स्थान के कारण सामरिक महत्व प्राप्त किया और इस क्षेत्र में व्यापार और प्रशासन का केंद्र बना। हाल के वर्षों में मोरी गांव के बुनियादी ढांचे का विकास हुआ है। सरकार ने इसे इको-पर्यटन के रूप में विकसित किया है। जो शांति और प्राकृतिक सौंदर्य की तलाश करने वाले यात्रियों को आकर्षित करता है। मोरी गांव समुद्र तल से लगभग 1,152 मीटर (3,780 फीट) की ऊंचाई पर है, जहां से हिमालय पर्वतों का अद्‌भुत व मनोरम दृश्य दिखाई देता है। मोरी गांव को ट्रेकर्स और रोमांच चाहने वाले आधार के रूप में उपयोग कर सकते हैं। जो हरकी दून और बाली दर्रे जैसे प्रसिद्ध ट्रैकिंग मार्गों तक पहुंचता है, जिससे यह प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग बन जाता है। इस ट्रैक से स्वर्गारोहिणी चोटियों का मनोरम दृश्य भी दिखाई देता है।

उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में महाभारत के खलनायक दुर्योधन और कर्ण के मंदिर भी है, नैतवार गांव से करीब 12 किलोमीटर की दूरी और देहरादून रोड पर सौर गांव में दुर्योधन का मंदिर है, जबकि इससे कुछ दूर सारनौल गांव में कर्ण का मंदिर है।

गढ़वाली व्यंजनों का स्वाद

गांव की आबादी संस्कृतियों की एक समृद्ध विविधता को दर्शाती है, जिसमें गढ़वाली, जौनसारी और तिब्बती परंपराओं का प्रभाव नजर आता है। मोरी गांव में प्रामाणिक गढ़वाली व्यंजनों का स्वाद लेने का अवसर मिलता है, जिसमें मंडुआ की रोटी, गहत के पराठे और स्थानीय रूप से उगाए जाने वाला राजमा शामिल है। मोरी गांव आकर सैलानी यहां के पारंपरिक त्योहारों में भाग ले सकते हैं। स्थानीय लोगों के साथ बातचीत करके यहां की सांस्कृतिक विरासत को समझ सकते हैं। स्थानीय लोगों की जीवनशैली को करीब से देख सकते हैं। आसपास के मंदिरों और मठों में जाकर स्थानीय संस्कृति में गोते लगा सकते हैं। मोरी गांव और उसके आसपास के प्राकृतिक सौंदर्य को कैमरे में कैद कर सकते हैं। बर्फ से ढकी चोटियों से लेकर हरे-भरे परिदृश्यों तक फोटोग्राफी कर सकते हैं। शहरी जीवनशैली की आपाधापी से दूर, शांत वातावरण में विश्राम करें और हिमालय की शांति के बीच अपने मन और आत्मा को तरोताजा करें। होमस्टे और कैम्पसाइट जैसे पर्यावरण अनुकूल आवासों को चुन सकते हैं। मोरी गांव की प्रसिद्धि न केवल इसकी प्राकृतिक सुंदरता के कारण है, बल्कि यहां आने वाले पर्यटकों को मिलने वाली असंख्य गतिविधियों और अनुभवों के कारण भी है, जो इसे उत्तराखंड में अवश्य देखने योग्य स्थल बनाती है। कुल मिलाकर उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में मोरी गांव एक छिपे हुए रत्न की तरह है, जो प्राकृतिक सुंदरता, रोमांच और सांस्कृतिक समृद्धि का एक आदर्श मिश्रण प्रस्तुत करता है। हिमालय के प्रवेश द्वार के रूप में इसकी प्रसिद्धि, साथ ही एक ट्रैकिंग केंद्र और पर्यावरण-अनुकूल डेस्टिनेशन के रूप में इसकी प्रतिष्ठा पूरी तरह से योग्य है।

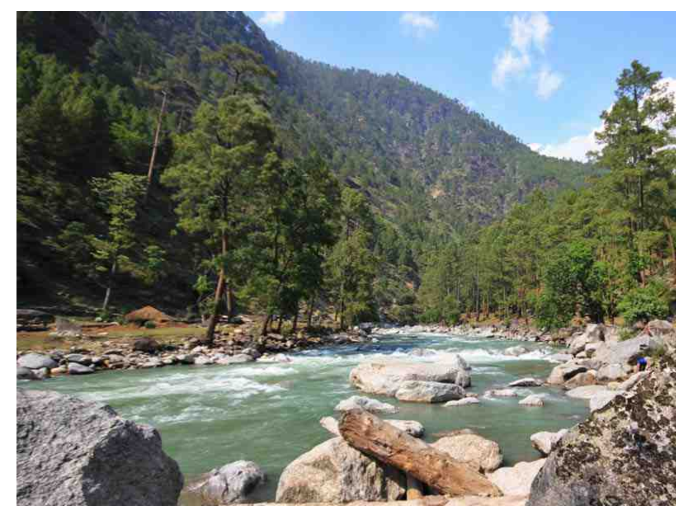

विलुप्त होती वनराजी जाति

वनराजी जनजाति आर्थिक, शैक्षिक एवं सामाजिक रूप से अन्य जनजातियों की अपेक्षा काफी कमजोर व पिछड़ी हुई है, इसलिए इन्हें आदिम जनजाति समूह की श्रेणी में रखा गया है, भारत की विलुप्त होती आदिम जनजातियों की सूची में 'वनराजी' जाति शामिल है।

डॉ.हरीश चंद्र अंडोला
दून यूनिवर्सिटी

आदिवासी या आदिम समाज देश के विभिन्न राज्यों में पाया जाता हैं। जो वर्तमान गतिशील समाज व सभ्यता से दूर रहना पसंद करता है तथा पारंपरिक परंपराओं, व्यवसायों, जीवनशैली को सुरक्षित रखने के लिए पूरी तरह से प्रयासरत रहता है। आदिम जनजातियां मुख्य रूप से छोटे-छोटे समूहों में रह कर आखेट, वस्तुओं का संग्रह, पशुपालन, कृषि एवं मत्स्य आखेट से अपना जीवन यापन करती हैं। उत्तराखंड में मूल रूप से पांच जनजातियां निवास करती हैं, इनमें भोटिया, थारू, जौनसारी, बुक्सा एवं वनराजी प्रमुख हैं। इन पांचों जनजातियों को 1967 में अनुसूचित जनजाति घोषित किया गया था। इन पांच जनजातियों में बुक्सा एवं वनराजी जनजाति आर्थिक, शैक्षिक एवं सामाजिक रूप से अन्य जनजातियों की अपेक्षा काफी कमजोर व पिछड़ी हुई है। इसलिए इन्हें आदिम जनजाति समूह की श्रेणी में रखा गया है। भारत की विलुप्त होती आदिम जनजातियों की सूची में 'वनराजी' जनजाति शामिल है। वनराजि मूलतः आदिम आखेटक संग्रह जाति है जिनका विस्तार पिथौरागढ़ से लेकर दक्षिणी नेपाल तक है। 1975 में भारत सरकार ने देश की 75 जनजातियों के साथ ही वनराजी और बुक्सा को आदिम जनजातियों में शामिल किया था। यह जनजाति देश की उन 18 आदिम जनजातियों में शामिल है जिनकी जनसंख्या हजार से भी कम रह गई हैं। भाषाई आधार पर वनराजीयों को राज किरातों के वंशज होने का अनुमान है। वनराजी उत्तराखंड के तीन जिलों ऊधमसिंह नगर, पिथौरागढ़ और चंपावत में अधिक है। इन जिलों में वनराजी के 143 परिवार रहते हैं। वनराजीयों की ताजा आबादी 690 दर्ज की गई हैं, जिसमें 366 पुरूष और 324 महिलाएं हैं जो धारचूला, डीडीहाट और चंपावत के 9 गांवों में हैं। 2001 में इनके परिवारों की कुल संख्या 130 तथा इनकी कुल जनसंख्या 528 थी। इस स्थिति के मद्देनजर इनके लिए राजकीय सेवाओं, शिक्षण संस्थाओं, सार्वजनिक उद्यमों, निगमों एवं स्वायत्तशासी संस्थाओं में आरक्षण के लिए नया शासनादेश जुलाई 2001 में जारी किया गया था। उत्तराखंड व भारत सरकार ने इन्हें पोषित करने के लिए कई परियोजनाएं चलाई हैं। जिससे ये भी भारत के सामान्य नागरिक की तरह रहन-सहन, खान-पान की स्थिति में शामिल हो सकें।

योजनाओं का लाभ नहीं मिलता

वनराजी जनजाति जंगलों में रहने वाली जनजाति है जिन्होंने अपनी पीढ़ी गुफाओं में बिताई है। अब धीरे-धीरे इनका रहन-सहन तो अन्य लोगों जैसा होने लगा है, लेकिन अभी भी यह जनजाति विकास की मुख्यधारा से बहुत दूर है। वनराजी जनजाति की महिला पदमा देवी कहती हैं कि सरकारी योजनाओं जिसमें स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार प्रमुख हैं उससे उनके समाज के परिवार वंचित हैं। सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए उनके पास कोई सरकारी कागज तक नहीं है। खेती करने लायक जमीन उनके पास नहीं है। हालांकि पांच जनजातियों में से सबसे कम जनसंख्या वाली इस वनराजी जनजाति के संरक्षण के लिए तमाम संगठन प्रयास कर रहे हैं। इन पर हुए शोध के अनुसार इस जनजाति के लोगों की औसत आयु 50 से 55 साल है। पिथौरागढ़ जिले में करीब 150 लोग ही इस जनजाति में हैं। साक्षरता दर भी इस जनजाति समाज का न के बराबर है, जिससे सरकार ने इन्हें सरकारी नौकरी में विशेष आरक्षण तो दे रखा है लेकिन उसका लाभ इन्हें नहीं मिल पाता है। सरकार की तमाम जनकल्याणकारी योजनाएं भी यहां धरातल पर कम ही दिखाई देती हैं।वनराजी जनजाति के तमाम परिवारों को अभी तक आरक्षित जनजाति का सर्टिफिकेट तक नहीं मिल पाया है जिससे सरकार की जितनी भी योजनाएं इस जनजाति के लोगों के लिए हैं, उनका लाभ इन्हें नहीं मिलता है। आधुनिक युग में भी इस जनजाति के परिवार आदम युग में ही जी रहे हैं। बदलाव सिर्फ इतना भर आया है कि पहले ये परिवार वनों में निवास करते थे, लेकिन अब झोपड़ियों व बस्तियों के करीब निवास करने लगे हैं। वनराजी समाज के लोग अपने आवास को 'रौत्यूड़ा' कहते हैं। पत्थर की दीवार तैयार कर, लकड़ी एवं पत्तों की सहायता से छप्पर डालकर छोटे-छोटे घरों का निर्माण पर्वतीय ढालों पर करते हैं जिनका आकार खोह नुमा होता है। इनके आवास घने जंगलों में हैं। घरों के निर्माण एवं इनकी प्रकृति से स्पष्ट होता है कि ये एकांतवासी हैं। साथ ही इनकी आवासीय संस्कृति पर पर्यावरण का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। शीत से रक्षा के लिए ये विशेष प्रकार के मकान तैयार करते हैं।

वनराजी समाज में पहले यदि लड़का और लड़की एक दूसरे को पसंद करते थे तो अपने माता-पिता के पास तरुण का फल ले जाते थे, वो इसे पकाकर साथ में खाते और माता-पिता से आशीर्वाद लेकर दांपत्य जीवन व्यतीत करने लगते थे, वर्तमान में वनराजी समुदाय अपनी इस परंपरागत विवाह की प्रथा को छोड़ चुका है।

हाईकोर्ट से वनराजी को उम्मीद

उत्तराखंड में रहने वाले वनराजी आदिवासी समाज का मुख्यधारा से कोई संपर्क नहीं है। इन आदिवासियों की जनसंख्या बढ़कर अब 850 हो गई है। इसका मतलब ये कि वनराजी समुदाय लुप्त होने की कगार पर है। क्योंकि ये किसी सरकारी मूलभूत सुविधा जैसे शिक्षा, चिकित्सा, बिजली और सड़क का लाभ नहीं उठाते हैं। इन्हें सरकार की किसी भी हेल्थ केयर योजना के साथ अन्य किसी भी योजना का लाभ नहीं मिलता। इसलिए इनकी औसत आयु 50 से 55 वर्ष ही रह गई है वहीं पूरे देश की औसत आयु 70 वर्ष है। एक अध्ययन रिपोर्ट के मुताबिक इन आदिवासियों के लिए शिक्षा तो बहुत दूर की बात है इन्हें सही तरीके से चिकित्सा सुविधा तक नहीं मिल पा रही है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भी उनसे 20 से 25 किलोमीटर की दूरी पर है। अगर सरकार ने जल्द ही कोई ठोस एक्शन नहीं लिया तो हो सकता है कि उत्तराखंड की यह जनजाति इतिहास न बन जाए। उत्तराखंड का कमजोर होता आदिवासी समुदाय 'वनराजी' जो हमेशा बाकी दुनिया से कटा रहता है। अब नैनीताल हाई कोर्ट द्वारा एक जनहित याचिका पर संज्ञान लेने से इस समुदाय को कुछ उम्मीद बंधी है। नैनीताल हाई कोर्ट ने राज्य सरकार और केंद्र सरकार से सवाल किया है कि वनराजी समुदाय को सरकारी कल्याणकारी योजनाओं और कार्यक्रमों से क्यों वंचित रखा गया है? उत्तराखंड स्टेट लीगल सर्विस अथॉरिटी की ओर से इस मामले में एक जनहित याचिका दायर की गई है। जनहित याचिका में कहा गया कि उत्तराखंड में वनराजी जनजाति का अस्तित्व समाप्त होने के कगार पर है। इस जनजाति की जनसंख्या लगातार घटती जा रही है। जिसकी वर्तमान जनसंख्या मुश्किल से अब लगभग 850 रह गई है।

अपनी विरासत को संजों रहे

सरकारी पुनर्वास कार्यक्रमों ने वनराजी समुदाय की जीवनशैली में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं, फिर भी उनमें से बहुत सारे अभी भी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। दूरदराज के इलाकों में रहने के कारण, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और बुनियादी ढांचे जैसी सामान्य सुविधाओं तक उनकी पहुंच दुर्लभ है। इन चुनौतियों और उनकी वंचित सामाजिक स्थिति के कारण उनके जीवन स्तर में सुधार की प्रक्रिया धीमी है। हालांकि वनराजी जनजाति ने उल्लेखनीय लचीलापन दिखाया है। कई परिवार अपनी आजीविका चलाने के लिए कृषि, पशुपालन और छोटे पैमाने के व्यापार में लगे हैं। चुनौतियों के बावजूद उनकी सांस्कृतिक प्रथाएं, भाषा और पारंपरिक ज्ञान उनके जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहते हैं। अपनी विरासत को संजोते हुए

- **वनराजी पर हुए शोध के अनुसार इस जाति के लोगों की औसत आयु 50 से 55 साल है, पिथौरागढ़ जिले में करीब 150 लोग इस जनजाति के हैं, साक्षरता दर इस जनजाति का न के बराबर है, जिससे सरकारी नौकरी में विशेष आरक्षण होते हुए भी उसका लाभ इन्हें नहीं मिल पाता है।**
- **1975 में भारत सरकार ने देश की 75 जनजातियों के साथ वनराजी और बुक्सा जनजाति को आदिम जनजातियों में शामिल किया था, यह जनजाति देश की उन 18 आदिम जनजातियों में शामिल है जिनकी जनसंख्या एक हजार से भी कम रह गई हैं।**

आधुनिक समाज की मांगों के अनुकूल ढ़लने की वनराजी जनजाति की क्षमता उनकी स्थाई शक्ति और अपनी पैतृक जड़ों से जुड़ाव को रेखांकित करती है। लिहाजा वनराजी जनजाति के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए उनके समुदायों में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और बुनियादी ढांचे तक पहुंच में सुधार पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है। उनकी आजीविका को बेहतर बनाने, उनकी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और सतत विकास के विकल्प प्रदान करने के उद्देश्य से सरकारी कार्यक्रम उनके भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसके अलावा उनके अधिकारों, पर्यावरणीय स्थिरता और पारंपरिक संसाधन प्रबंधन प्रथाओं के बारे में जागरूकता और चेतना को बढ़ावा देने से वनराजी जनजाति को तेजी से बदलती दुनिया में फलने-फूलने में मदद मिल सकती है।

वनराजी जीवनशैली में बदलाव

पुरानी परंपराएं और रीति-रिवाज उनके आसपास की बदलती दुनिया के बीच भी फलते-फूलते रहते हैं। हालांकि पुनर्वास की पहलों के कारण कई परिवार अब खेती के माध्यम से अपनी आजीविका चलाते हैं, लेकिन चट्टान तोड़ने और लकड़ी के बर्तन बनाने जैसी पारंपरिक गतिविधियां उनके दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनी हुई हैं। इन परिवर्तनों के बावजूद, वनराजी समुदाय आधुनिक चुनौतियों के साथ तालमेल बैठाते हुए अपनी अनूठी सांस्कृतिक पहचान को गर्व से बरकार रखे हुए है। सत्यता चाहे जो भी रही हो लेकिन वनराजी जनजाति में स्वाभिमान, राजसी आन, जंगलों के प्रति लगाव और वनों को कायम रखने का जज्बा आज भी दिखाई पड़ता है। जंगलों से जुड़ाव के कारण ये प्रकृति प्रेमी हैं और देवताओं के रूप में प्रकृति को ही पूजते हैं। वृक्ष पूजा और भूमि पूजा इनके यहां अत्यधिक प्रचलित है। हालांकि कुछ वर्षों से ये लोग हिंदू रीति-रिवाज के अनुसार त्योहार मनाने लगे हैं। पुराने समय में वनराजी गुफाओं में रहते थे और मालू पत्तों के बने वस्त्र पहनते थे। आधुनिक समय में इस समाज की महिलाएं धोती या साड़ी और पुरुष पजामा या पेंट पहनने लगे हैं। वनराजी समाज में पहले यदि लड़का और लड़की एक दूसरे को पसंद करते थे तो अपने माता-पिता के पास तरुण का फल खोद कर ले जाते थे। वो इसे पकाकर साथ में खाते और माता-पिता से आशीर्वाद ले कर दांपत्य जीवन व्यतीत करने लगते थे, वर्तमान में वनराजी समुदाय अपनी इस परंपरागत विवाह की प्रथा को छोड़ चुका है। कुछ परिवार तो आज के समाज से इतने प्रभावित हैं कि वे सामान्य प्रचलित हिंदू रीति-रिवाज के अनुसार विवाह करने लगे हैं। इनकी शिकार पद्यति एक अलग तरह की है। जिसमें ये एक भारी पत्थर के नीचे मजबूत लकड़ी की फांस लगाकर कुछ अनाज के दाने एवं खाद्य सामग्री रख देते हैं। जिनको खाने के लालच में जंगली मुर्गियां तथा छोटे-छोटे जानवर आते हैं और बड़ी सरलता से जाल में फंस जाते है और ये लोग उनका शिकार कर लेते हैं। मछली का शिकार भी यदा-कदा करते हैं। वर्तमान समय में इनके भोजन में निरंतर परिवर्तन हो रहा है। जैसे जैसे बाहरी समाज से इनका संर्पक बढ़ रहा है ये फल एवं कंदमूल के स्थान पर रोटी, दाल, सब्जी का प्रयोग करने लगे हैं। घरों के आस-पास सब्जी पैदा करना भी शुरू कर दिया है। प्रचीन वनराजी समुदाय कंदमूल, फल एवं कच्चा शिकार खाकर ठंडा पानी पीकर गुफाओं में सो जाता था।

बरसात

सन्नाटे में पर्यटन

उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के हिल स्टेशनों पर आजादी का जश्न मनाने की प्लानिंग करने वालों ने होटल, होमस्टे, टैक्सी, गाइड, ट्रेन में आरक्षण तक सब बुक कर लिए थे, लेकिन प्रकृति के प्रकोप और मानसून ने उनकी सारी प्लानिंग पर पानी फेर दिया।

उत्तरांचल दीप डेस्क

15 अगस्त यानी देश आजादी का जश्न मनाने के लिए तैयार है। इस बार 15 अगस्त शुक्रवार को है, दिल्ली वाले के लिए एक तरह से यह वीकेंड तीन दिन का हो जाता है। यानी शुक्रवार, शनिवार और रविवार। लिहाजा इस वीकेंड के लिए दिल्ली के बहुत से परिवारों ने दोस्तों व रिश्तेदारों के साथ उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के हिल स्टेशनों पर आजादी का जश्न मनाने की प्लानिंग की थी। होटल, होमस्टे, टैक्सी, गाइड, ट्रेन में आरक्षण तक सब बुक कर लिए थे, लेकिन प्रकृति के प्रकोप और मानसून ने उनकी सारी प्लानिंग पर पानी फेर दिया है। टीवी और सोशल मीडिया पर भूस्खलन से रास्ते बंद होने नदियों में उफान आने, मूसलाधार बारिश होने और उत्तरकाशी के धराली में खीर गंगा में बादल फटने से तबाही की जो तस्वीरें आई उन्होंने उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के हिल स्टेशनों पर आजादी का जश्न मनाने वालों के रोंगटे खड़े कर दिए। क्योंकि इन दो राज्यों में कब और कहां बादल फटने की घटना हो जाए, नदियां उफानकर सड़कों को बहा कर ले जाएं, कब और कहां भूस्खलन हो जाए कुछ कहा नहीं जा सकता है। यह कुदरत के सिवा कोई नहीं जानता। उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में बादल फटने व भूस्खलन और भारी बारिश लगातार हो रही है। इससे भी पर्यटकों में डर का माहौल है। ऐसा नहीं है कि टूरिस्ट अगस्त की ही बुकिंग कैंसिल कर रहे हैं बल्कि सितंबर के लिए बुकिंग भी कम ही करा रहे हैं। होटल संचालक हो या टैक्सी चालक, वोट चालक अथवा दुकानदार सभी का मानना है कि अकेले अगस्त में ही पर्यटकों की संख्या में पिछले साल के मुकाबल 50 प्रतिशत तक कमी आई है। यहां तक कि कई लोगों ने एडवांस पेमेंट करने के बावजूद अपनी यात्रा कैंसिल कर दी है। टूरिस्ट ट्रांसपोर्ट एंड टूर ऑपरेटर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट का कहना है कि इस मानसून सीजन में हिल स्टेशनों पर पर्यटकों की भारी कमी देखने को मिल रही है। इसका सीधा असर होटल, टैक्सी सर्विस और स्थानीय व्यापारियों पर पड़ा है। होटल खाली पड़े हैं। टूर ऑपरेटर्स के वाहन पार्किंग में खड़े हैं। टैक्सी ड्राइवर बेरोजगार बैठे हैं। पहाड़ों पर आपदा की वजह से टोल प्लाजा को भी कहीं न कहीं घाटा हो रहा है। प्राकृतिक आपदा व हादसों के कारण उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश सरकार ने कई हाईवे और पर्यटन मार्गों को बंद कर दिया है। अलबत्ता स्थानीय प्रशासन की निगरानी में हाईवे सहित तमाम क्षतिग्रस्त और बंद मार्गो को खोलने के लिए लोक निर्माण विभाग पूरी क्षमता से काम कर रहा है। लेकिन स्थिति पूरी तरह सामान्य होने में कुछ समय लग सकता है, क्योंकि नुकसान भारी है।

उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में बादल फटने व भूस्खलन और भारी बारिश लगातार हो रही है, इससे पर्यटकों में डर का माहौल है लिहाजा टूरिस्ट अगस्त के लिए कराई गई बुकिंग जहां कैंसिल कर रहे हैं वहीं के लिए भी बुकिंग कराने से बच रहे हैं।

95 प्रतिशत होटल बुकिंग कैंसिल

उत्तराखंड के नैनीताल में प्राकृतिक आपदा का असर पर्यटन पर पड़ा है। लगातार हो रही मूसलाधार बारिश से नैनीताल में सैलानियों से गुलजार रहने वाली सड़कों पर सन्नाटा है। सड़कों पर मलबे, भूस्खलन और मौसम विभाग की ओर से जारी रेड अलर्ट के कारण पर्यटकों ने मानसून के इस मौसम में नैनीताल की यात्रा से परहेज शुरू कर दिया है। इसका सीधा असर होटलों और स्थानीय व्यापारियों पर पड़ रहा है। होटल एसोसिएशन के अध्यक्ष दिग्विजय सिंह बिष्ट का कहना है कि पिछले कुछ दिनों में ही लगभग 95 प्रतिशत होटल बुकिंग कैंसिल हो चुकी हैं। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे भूस्खलन के वीडियो और रील्स ने भ्रम की स्थिति पैदा कर रखी है, जबकि नैनीताल और इसके आसपास के अधिकतर पर्यटन स्थल पूरी तरह सुरक्षित हैं। नैनीताल और इसके आसपास कहीं भी भूस्खलन होने पर प्रशासन द्वारा तुरंत राहत और मरम्मत कार्य शुरू कर दिया जाता है। सुरक्षा बल भी सतर्कता के साथ तैनात हैं। नैनीताल घूमने आए पर्यटक हरजीत सिंह का कहना है कि वो दिल्ली से नैनीताल आए लेकिन रास्ते में कहीं भी भूस्खलन जैसी कोई समस्या नहीं दिखाई दी। सफर पूरी तरह सुरक्षित रहा। बरसात में यहां का मौसम बेहद सुहावना है। उनके साथी पर्यटक सर्वजीत सिंह का कहना है कि सोशल मीडिया पर जो दिखाया गया, वह देखकर डर लग रहा था, लेकिन यहां आकर महसूस हुआ कि हालात सामान्य है। स्थानीय व्यापारियों का कहना है कि मानसून के मौसम में आमतौर पर पर्यटकों की संख्या घटती है, लेकिन इस बार सोशल मीडिया पर फैली अफवाहों और आपदा की खबरों ने पर्यटन को लगभग पूरी तरह ठप कर दिया है। उनका कहना है कि नैनीताल पूरी तरह सुरक्षित है और प्रशासन लगातार निगरानी कर रहा है। अब जरूरत इस बात की है कि सही जानकारी लोगों तक पहुंचे, ताकि भ्रम का माहौल खत्म हो और पर्यटन गतिविधियां फिर से रफ्तार पकड़ सकें। सरोवर नगरी नैनीताल में साल भर देश-विदेश से बड़ी संख्या में पर्यटक पहुंचते हैं। नैनीताल के व्यापारियों का पर्यटन ही आय का मुख्य साधन है। नैनीताल के साथ ही आसपास के क्षेत्र भी पर्यटन के लिहाज से काफी खूबसूरत हैं, जहां साल भर पर्यटकों की गतिविधियां बनी रहती हैं। किंतु इन दिनों नैनीताल में मौसम सुहावना बना हुआ है, पर आपदा की खबरों ने नैनीताल के पर्यटन को एक तरह से चौपट कर दिया है। इसलिए इन दिनों नैनाताल खाली-खाली सा नजर आ रहा है।

महंगे प्रवेश शुल्क व पार्किंग का असर

गर्मी की छुट्टियों के बाद जैसे ही मानसून ने दस्तक दी, नैनीताल में पर्यटकों की संख्या में लगातार गिरावट होने लगी। ऐसे में सवाल यही है कि क्या सिर्फ बारिश ही इसकी वजह है? स्थानीय व्यापारियों की मानें, तो तस्वीर इससे कहीं अलग है। होटल व्यवसायियों का कहना है कि पहाड़ों में लगातार बारिश और भूस्खलन की आशंका ने सैलानियों को रोका है, लेकिन इसके साथ ही नैनाताल में बढ़ते टैक्स भी बड़ी वजह है। नैनीताल में आने वाले पर्यटकों को अब 300 रुपये का प्रवेश शुल्क (टोल टैक्स) देना होता है, वहीं पार्किंग शुल्क 500 रुपये प्रति दिन कर दिया गया है। यानी सिर्फ शहर में प्रवेश और वाहन खड़ा करने के लिए ही एक पर्यटक को 800 रुपये देने पड़ते हैं। इस भारी-भरकम खर्च ने खासतौर पर मध्यम वर्ग की जेब पर असर डाला है। छोटे दुकानदारों और कैफे संचालकों का कहना है कि इस अतिरिक्त शुल्क ने नैनीताल को एक महंगा डेस्टिनेशन बना दिया है, जिससे पर्यटकों का रुझान कम हो रहा है। नैनीताल के स्थानीय व्यापारी दिनेश भोटिया का कहना है कि सरोवर नगरी में इस समय ऑफ सीजन है, ऐसे में पर्यटकों की संख्या में हर साल कमी होती है। लेकिन इस साल कमी नहीं बल्कि सन्नाटा है। इक्का-दुक्का पर्यटक ही नैनीताल पहुंच रहे हैं। पर्यटकों की संख्या में गिरावट की एक वजह प्रवेश शुल्क और पार्किंग में बढ़ोत्तरी और सुविधाओं में कमी भी है। उनकी दुकान पर आने वाले पर्यटक सामान खरीदते समय जब बात करते हैं तो ये जरूर कहते हैं कि उन्हें पार्किंग शुल्क 500 रुपये प्रतिदिन और 300 रुपये प्रवेश शुल्क देना काफी खलता है। साथ ही ये भी कहते हैं कि अब नैनीताल में पहले जैसी सुविधाएं भी नहीं रही हैं। इसलिए पर्यटक नैनीताल की बजाय भीमताल, रानीखेत, मुक्तेश्वर, कैंचीधाम, जागेश्वर, अल्मोड़ा, नौकुचियाताल, रानीखेत, कौसानी की तरफ रुख कर रहे हैं। इसके अलावा छोटे-छोटे गांवों का शांत वातावरण टूरिस्ट को ज्यादा आकर्षित कर रहा है। क्योंकि अब गांवों में रुकने के लिए होमस्टे बन गए हैं जो होटलों से सस्ते भी पड़ते हैं। साथ में उन्हें पहाड़ी खाने का स्वाद भी घर जैसा मिलता है। नैनीताल होटल एसोसिएशन के सचिव वेद साह का कहना है कि इस समय बारिश की वजह से नैनीताल में ऑफ सीजन है, लेकिन उम्मीद थी कि 15 अगस्त पर तीन दिन का वीकेंड पड़ेगा तो टूरिस्ट की संख्या बढ़ेगी लेकिन जिस तरह के हालात है उसे देखकर तो नहीं लगता कि टूरिस्ट पहोड़ों की तरफ आएंगे। पहाड़ों की रानी के नाम से मशहूर पर्यटन नगरी मसूरी में भी मूसलाधार बारिश की वजह से पर्यटन प्रभावित हुआ है। बारिश के पानी से नाले उफान पर है। जिससे स्थानीय लोगों को भी दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है।

पहाड़ों की बारिश डराती है

चार धाम यात्रा उत्तराखंड की आर्थिकी के लिहाज से बड़ा पर्यटन है लेकिन आसमान से आफत बरसती है तो केदारनाथ, बदरीनाथ, यमुनोत्री व गंगोत्री की यात्रा पर ब्रेक लगते रहते हैं। पिछले दिनों मूसलाधार बारिश से गौरीकुंड पैदल मार्ग के पास पहाड़ी का मलबा भरभराकर नीचे आया तो पैदल मार्ग भी बंद हो गया था। लिहाजा प्रशासन ने यात्रा रोक दी थी। किसी तरह पैदल मार्ग को आवाजाही लायक बनाया गया जिससे केदारनाथ धाम की ओर से आ रहे तीर्थयात्री को सुरक्षित निकालते हुए गौरीकुंड भेजा गया था। इसी तरह रुद्रप्रयाग जिले में मूसलाधार बारिश के कारण कई इलाकों में जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया था। रुद्रप्रयाग तहसील में चमेली, रूमसी, चमरारा तोक और विजयनगर क्षेत्र में सौड़ी नाले और बेडू बगड़ नाले में भारी मात्रा में पानी के साथ मलबा आने से कई घरों, गौशालाओं, शौचालयों और संपर्क मार्गों का कटान हो गया था। कई घरों में मलबा घुस गया था। रुद्रप्रयाग के गस्त्यमुनि ब्लॉक के बेडू बगड़, चमेली और बगड़ धार तोक गांवों में बारिश ने भारी तबाही मचाई थी। भारी बारिश से रुमसी गदेरा उफान पर आने से बाढ़ जैसे हालात बन गए थे। यहां कई घरों के नीचे से जमीन धसी तो मकान हवा में लटक गए। बारिश की वजह से ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली-पानी की व्यवस्था ध्वस्त हो गई। आपदा को देखते हुए बहुत से परिवार अपने घर छोड़ कर सुरक्षित स्थानों पर चले गए और बेडू बगड़, चमेली और बगड़ धार तोक गांवों को रुमसी नाले ने अपने आगोश में ले लिया। कई घंटों की मूसलाधार बारिश के कारण रुमसी नाले का पानी अपने साथ मिट्टी और बड़े बड़े बोल्डर लेकर तबाही मचाता रहा। डरे सहमे लोग रात भर इस जीवन बचाने की जद्दोजहद करते रहे। सुबह हुई तो पता चला कि रुमसी नाले ने गांवों में और खेतों में कितनी भारी तबाही मचाई है। इस तरह की खबरें देखकर और सुनकर भी पर्यटक पहाड़ों पर जाने से बचने की कोशिश कर रहे हैं। खैर अगस्त के बाद हालात में सुधार होगा और रास्ते व हाईवे खुलेंगे और पहाड़ों पर फिर रौनक देखने को मिलेगी।

- **नैनीताल में पिछले कुछ दिनों में ही लगभग 95 प्रतिशत होटल बुकिंग कैंसिल हो चुकी हैं, सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे भूस्खलन के वीडियो और रील्स ने भ्रम की स्थिति पैदा कर रखी है, जबकि नैनीताल और इसके आसपास के अधिकतर पर्यटन स्थल पूरी तरह सुरक्षित हैं।**
- **नैनीताल आने वाले पर्यटकों को अब 300 रुपये का प्रवेश शुल्क (टोल टैक्स) देना होता है, वहीं पार्किंग शुल्क 500 रुपये प्रति दिन कर दिया गया है, यानी सिर्फ शहर में प्रवेश और वाहन खड़ा करने के लिए ही एक पर्यटक को 800 रुपये देने पड़ते हैं, इससे भी टूरिस्ट नाराज हैं।**

नजरिया

कॉमेडी में सनातन का मजाक?

कोर्ट यदि 'उदयपुर फाइल' जैसी सच पर आधारित फिल्म पर रोक लगाकर अपनी संवेदनशीलता दिखा सकती है तो उसे हिंदुओं की भावनाओं को आहत करने वाले टीवी शो 'कॉमेडी सर्कस' जिसमें सनातन धर्म का फूहड़ता से मजाक उड़ाया जा रहा है उस पर भी रोक लगानी चाहिए।

राकेश मैन्दोला
देहरादून

मनोरंजन यानी मनोरंजक गतिविधियां, मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह तनाव को कम करने, खुशी और रचनात्मकता को बढ़ावा देने तथा सामाजिक बंधनों को मजबूत करने में मदद करता है, लेकिन जब यही मनोरंजन फूहड़ता अथवा किसी धर्म का मजाक बनाने लगे तो यह इंसान की भावनाओं पर ऐसा प्रहार करता है जिसे बर्दाश्त से बाहर बताया जा सकता है। टीवी पर रियलिटी शो के नाम पर या कॉमेडी शो के नाम पर किसी भी समाज की भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाले कार्यक्रमों पर पहले सरकार को रोक लगानी चाहिए। यदि सरकार रोक नहीं लगाती तो कोर्ट को हस्तक्षेप करना चाहिए। यानी फिल्म 'उदयपुर फाइल' पर रोक लगाने वाली कोर्ट को ऐसे टीवी रियलिटी शो पर स्वतः संज्ञान लेना चाहिए। क्योंकि मुझे लगता है कि कोर्ट यदि 'उदयपुर फाइल' जैसी सच पर आधारित फिल्म पर रोक लगाकर अपनी संवेदनशीलता का प्रदर्शन कर सकती है तो उसे हिंदुओं की भावनाओं को आहत करने वाले टीवी प्रोग्राम कॉमेडी शो या 'कॉमेडी सर्कस' जैसे शो, जिसमें सनातन धर्म का फूहड़ता से मजाक उड़ाया जा रहा है उस पर भी रोक लगानी चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य से न तो कोर्ट न ही कोई सामाजिक संगठन इस फूहड़ता के खिलाफ आवाज उठाने के लिए तैयार है। कॉमेडी सर्कस के नाम पर जानबूझ कर सनातन धर्म का मजाक उड़ाने वालों पर कैसे लगाम लगेगी या फिर सनातन धर्म की ऐसे ही मजाक उड़ता रहेगा यह एक संवेदनशील सवाल है? संत समाज भी इस संवेदनशील मुद्दे पर शांत क्यों है? यह मेरी समझ से परे है।

भारती, शरद व परेश का भद्दा अभिनय

भगवान श्रीराम भारतीय संस्कृति का प्रतीक हैं। सनातन धर्म के पवित्र ग्रंथ रामायण में ही श्रवण कुमार का प्रसंग भी आता है। रामायण में प्रसंग है कि श्रवण कुमार अपने प्यासे माता-पिता के लिए पानी लेने नदी के किनारे जाते हैं और श्रीराम के पिता महाराजा दशरथ आखेट करते समय नदी किनारे पानी भर रहे श्रवण कुमार को शिकार समझ कर वाण चला देते हैं। श्रवण कुमार की मृत्यु हो जाती है और महाराजा दशरथ पानी लेकर श्रवण कुमार के प्यासे माता पिता के पास जाकर पानी पिलाने की कोशिश करते हैं, लेकिन श्रवण कुमार बेटे की मत्यु की जानकारी मिलने पर महाराज दशरथ को श्राप देते हैं कि वो भी पुत्र के वियोग में हमारी तरह मृत्यु प्राप्त करेंगे। अब माता-पिता की भक्ति के चैनल इसका पोलिए पहचाने जाने वाले श्रवण कुमार का कॉमेडी सर्कस जैसे शो में भद्दा मजाक बनाया गया है। यदि यह मजाक किसी और धर्म के साथ किया जाता तो न जाने कितने न्यूज टमार्टम कर देते, लेकिन सनातन धर्म में श्रवण कुमार का अर्थ क्या है यह किसी को नहीं पता। जबकि कॉमेडी सर्कस शो में श्रवण कुमार का एवं उनके माता-पिता का जिस बेशर्मी से मजाक उड़ाया गया उसका परिणाम है कि भारतीय शिक्षा लॉर्ड मैकाले की शिक्षा के वीभत्स चरित्र को समाज में पूर्णता से परोस रही है। कॉमेडी सर्कस जैसे शो में 'मार्डन जमाने के श्रवण कुमार के माता' शीर्षक है पिता के रेल में कॉमेडियन शरद है तो मां पखुड़ी के रेल में कॉमेडियन भारती तथा श्रवण कुमार के रेल में कॉमेडियन परेश है। इस कॉमेडी शो में जिस भद्दे तरीके से अभिनय किया गया है उससे सनातन धर्म का अपमान हुआ है। धार्मिक ग्रंथ रामायण जिसकी सनातन में पूजा होती है उसके पात्रों का भद्दा मजाक उड़ाया गया है। भारती जिस तरह मां के रेल में अभिनय कर रही है वो बेशर्मी की हदे पार करती है। डार्लिंग, स्वीट हार्ट जैसे शब्दों का उपयोग, टोकरी नहीं छोकरी लाने की उम्र है। बैंकाक भ्रमण कराने और टू नाइट व थ्री डे का पैकेज लेने जैसे डॉयलाग बोलते हुए भद्दा अभिनय किया गया। पिता श्रवण को खतरों का खिलाड़ी बताता है तब भारती श्रवण की मां के रूप में अश्लीता के साथ फिल्म अभिनेता अक्षय का नाम लेते हुए आहें भरती दिखाई गई है। श्रवण को शराब और हनीमून व माता-पिता से अश्लीलता करते दर्शाया गया है, लेकिन किसी की आंखो से शर्म का पानी नहीं उतरा यदि यह भद्दा मजाक अन्य किसी धर्म के साथ किया गया होता तो कॉमेडी सर्कस कब का सर्कस बन चुका होता। आजादी के इतने वर्षों बाद भी सांस्कृतिक धरोहर को इतना फूहड़ता से प्रस्तुत करना कहां तक सही है? यह तो समाज के तथाकथित ठेकेदार बता पाएंगे। लेकिन मैकाले जो चाहता था वह अब प्रतिपल भारतीय समाज के हर क्षेत्र में देखने को मिल रहा है। जहां नैतिकता सरे आम नीलाम हो रही है। जूते शोरूम में बेचे जा रहे हैं और किताबें सड़कों पर। मतलब फिल्मों के बड़े पर्दे पर और टीवी चैनलों ने एवं अंग्रेजीयत के ठेकेदारों तथा वामपंथियों ने भारत की सांस्कृतिक पहचान बदलने की कसम ही खा रखी हो। केवल सनातन धर्म का मजाक उड़ाना इनकी फितरत बन गया है। इन्होंने अपराध की दुनिया एवं अपराध के नैतिक तरीकों के साथ सामाजिक कुविचार फैलाने का ठेका ले लिया है और समाज को ऐसी अंधेरी गलियों में लाकर खड़ा कर दिया है जहां रिश्ते तार-तार होकर टूटते चले जा रहे हैं।

इतिहास गवाह है जिस देश ने अपनी संस्कृति को भुला दिया उस देश का अस्तित्व खुद खत्म हो गया है, विश्व में अकेला इजराइल ऐसा देश है जो अपनी संस्कृति बचाने के लिए युद्ध में कूदा है, इसलिए आज नैतिक शिक्षा की आवश्यकता है, जिसकी शुरुआत देवभूमि उत्तराखंड में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने की है।

गीता और रामयण बनाती है चरित्रवान

भारतीय संस्कृति की बात यदि कोई करता है तो उसे ऐसा देखा जाता है जैसे कोई पागल है। शायद बागेशवर धाम के पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री सनातनियों के लिए पागल शब्द का प्रयोग इसलिए करते हैं क्योंकि राजनेताओं ने पूरे हिंदू समाज को जातियों में बांट दिया है। देश में हिंदू समाप्त हो गया है, जातियों के मतभेद का खुले आम मजाक उड़ाता है इसलिए घिनौना से घिनौनी कृत करने वाले नेता व अभिनेता पैदा हो गए हैं। हरामखोरी, कामचोरी, नशाखोरी कदम-कदम पर हाथ फैलाकर खड़ी है। इसलिए इतिहास गवाह है जिस देश ने अपनी संस्कृति को भुला दिया उस देश का अस्तित्व खुद-ब-खुद खत्म हो गया है। विश्व में अकेला इजराइल ऐसा देश है जो केवल अपनी संस्कृति को बचाने के लिए युद्ध में कूदा हुआ है। इसलिए आज नैतिक शिक्षा की आवश्यकता है। जिसकी शुरुआत देवभूमि उत्तराखंड में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने की है। देवभूमि की शिक्षा में श्रीमद् भागवत गीता एवं रामायण को आधार बनाकर देवभूमि की संस्कृति को आगे बढ़ाने का जो निर्णय लिया है वो भविष्य में मील का पत्थर साबित हो सकता है। सरकार के इस फैसले के पीछे समाज को नैतिक मूल्य, विवेकशीलता, भावनात्मक मजबूती, नेतृत्व गुण कर्तव्य बोध एवं समाज के प्रति जिम्मेदारियां के गुणों को विकसित करना है। भारत की प्राचीन शिक्षा का यह समृद्धशाली ज्ञान का भंडार शिक्षा के माध्यम से प्रत्येक परिवार में भारतीय संस्कृति का बीज रोपने के समान है। वेद, पुराण, उपनिषद, आध्यात्मिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक पहचान को आगे बढ़ाने में सर्वोत्तम शिक्षा ही एक मात्र आधार है। भारतीय ज्ञान और चरित्र का मुख्य आधार किसी न किसी रूप से गीता एवं रामायण से ही मिलता है। जो ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ले जाने का काम करता हैं। संतों की परंपरा में इनका महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन शिक्षा हमें शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, नैतिकता के साथ चरित्र के समग्र विकास पर जोर देती है इस शिक्षा से भगवान श्रीकृष्ण, श्रीराम निकले हैं इस शिक्षा की अमूल्य धरोहर को उत्तराखंड शिक्षा के मंदिरों में सभी जगह लागू कर दिया गया है। इसे समृद्धशाली शिक्षा के लिए एक नया कदम माना जा रहा है। ताकि भविष्य में कोई श्रवण कुमार और उनके आदर्श माता-पिता का भद्दा मजाक बनाए तो उसके खिलाफ आवाज बुलंद की जा सके।

- **सनातनी कुछ तो जागे हैं, लेकिन यह जागना पर्याप्त नहीं है, अब कोई भी फिल्म मेकर सनतान का मजाक उड़ाने वाली फिल्म बनाने से बचता है, लेकिन अब छोट पर्दे यानी टीवी चैनल्स के खिलाफ आवाज बुलंद करने की जरुरत है, ताकि टीवी चैनल को भी सनातन की शक्ति का एहसास हो सके।**
- **माता-पिता की भक्ति के लिए पहचाने जाने वाले श्रवण कुमार का कॉमेडी सर्कस जैसे शो में भद्दा मजाक बनाया गया है, यदि यह मजाक किसी और धर्म के साथ किया जाता तो न जाने कितने न्यूज चैनल इसका पोस्टमार्टम कर देते, लेकिन सनातन धर्म में श्रवण कुमार का अर्थ क्या है यह किसी को नहीं पता।**

कॉमेडी सर्कस के खिलाफ आवाज बुलंद करें

सवाल उठता है कि आखिर कैसे कॉमेडी सर्कस पर फूहड़ता व सनातन को अपमानित करने वाले शो को सिस्टम से स्वीकृति मिल जाती है। क्योंकि जिस तरह श्रवण कुमार और उनके माता पिता का अपमान शो में किया गया है वो शिक्षा कम से कम भारतीय भाषा में तो नहीं दी जाती। इसलिए आज नई शिक्षा नीति में भारतीय मातृभाषा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इस मातृभाषा का आज भी मजाक उड़ाने के लिए न जाने कितने टीवी सीरियल्स रोज आपके ड्राइंग रूम तक पहुंच रहे हैं। जिससे परिवारों के रिश्ते तार-तार होकर सनातन संस्कृति को खत्म कर रहे हैं। टीवी शो के माध्यम से समाज में जो फूहड़ता परोसी जा रही है उस पर पूरी तरह रोक नहीं लगाई गई तो आने वाले समय में जैसा भद्दा मजाक श्रवण कुमार जैसे सांस्कृतिक पहचान के पर्याय के साथ किया जा रहा है वो कल भगवान श्रीकृष्णा, प्रभु श्रीराम और न जाने कितने सनातनी देवा देवताओं के प्रति किया जा सकता है और सनातन प्रेमी सिर्फ राजनेताओं के जातिवाद के जाल में फंस कर जाट, ठाकुर, बनिया, चौधरी, ब्राह्मण, दलित, आदिवासी, यादव, कुर्मी, रावत, भट्ट, जोशी को ढूंडते रहेंगे। इससे भारतीय सनातनी सांस्कृतिक पहचान कुंभ, कावड़ यात्रा सावन की महिमा, वट सावित्री पूजा, हरेला जैसे तीज त्योहार कहीं गुम न हो जाए। क्योंकि सभी सीरियल्स का असर 10 से 16 साल के बाल मन के साथ महिलाओं पर सबसे तेजी से पड़ता है। जिसने टीवी शो में श्रवण कुमार को शराब एवं हनीमून के चरित्र में देखा होगा वो बालमन बड़ा होकर क्या रामायण के इस पात्र को सही मायने में समझ पाएगा? क्या वो भी रामायण के इस पात्र को जिस तरह टीवी शो में दिखाया गया है वैसे ही शराब या अश्लीलता के मार्ग पर नहीं चलेगा? आखिर सरकार ने इतनी खतरनाक मजाक को रोका क्यों नहीं और अभी तक इस पर कोई कार्रवाई क्यों नहीं हुई? इसकी जिम्मेदारी संत समाज पर भी है कि वो इस तरह के भद्दे मजाक के खिलाफ आवाज बुलंद करे। क्योंकि श्रवण कुमार का इतना भद्दा मजाक सनातनियों की आस्था को गहरी ठेस पहुंचाने वाला है। वैसे ये सच है कि सनातनी कुछ तो जागे हैं, लेकिन यह जागना पर्याप्त नहीं है। अब कोई भी फिल्म मेकर सनतान का मजाक उड़ाने वाली फिल्म बनाने से बच रहा है, लेकिन अब छोट पर्दे यानी टीवी चैनल्स के खिलाफ आवाज बुलंद करने की आवश्यकता है। ताकि टीवी चैनल को भी सनातन की शक्ति का एहसास हो सके।

छोटे शहर का बड़ा एक्टर

अपने हर किरदार में 'असरदार' अनुपम खेर के फिल्मी योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने उन्हें 2004 में पद्मश्री और 2006 में पद्मभूषण से सम्मानित किया है, मूल रूप से कश्मीरी पंडित अनुपम खेर हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला से पहले दिल्ली और फिर मुंबई पहुंचे।

अरुण सिंह
मुंबई ब्यूरो

बॉलीवुड से हॉलीवुड तक अपनी बेहतरीन एक्टिंग का डंका बजाने वाले सदाबहार अभिनेता अनुपम खेर ने फिल्म इंडस्ट्री में अपने 40 साल पूरे कर लिए हैं। 1984 में आई महेश भट्ट की फिल्म 'सारांश' से बॉलीवुड में डेब्यू करने के बाद अब तक वो 510 से भी ज्यादा हिंदी फिल्मों में काम कर चुके हैं। उनके एक्टिंग करियर के चार दशक में एक दौर ऐसा भी था, जब फिल्में उनके बिना कम्पलीट नहीं मानी जाती थीं। एक्टर-एक्ट्रेस कोई भी हो, लेकिन उनके लिए हर फिल्म में एक अहम रोल जरूर होता था। अपने हर किरदार में 'असरदार' अनुपम खेर के फिल्मी योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने उन्हें 2004 में पद्मश्री और 2006 में पद्मभूषण से सम्मानित किया है। मूल रूप से कश्मीरी पंडित अनुपम खेर हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला से पहले दिल्ली और फिर मुंबई पहुंचे। लेकिन अनुपम खेर के लिए अभिनय की दुनिया में अपने पैर जमाना आसान नहीं था। किंतु मां के दिए संस्कार और पिता की दी हुई सीख उनको हमेशा याद रहती थी। उनके पिताजी ने कहा था, 'विफलता एक घटना होती है व्यक्ति नहीं।' यानी इंसान कभी विफल नहीं होता, परिस्थितियां फेल होती हैं। जो एक हादसा हो सकता है, जो किसी की भी जिंदगी में घट जाता है। इसलिए अपने संघर्ष के दिनों में सड़क पर जूते घिसे, प्लेटफॉर्म पर रातें गुजारी, लेकिन अपने सपने को मरने नहीं दिया। अपनी मेहनत और लगन के दम पर उसे साकार किया। इसलिए अनुपम खेर आज फिल्म इंडस्ट्री के सफल कलाकारों में शुमार होते हैं। क्योंकि अनुपम खेर हर किरदार में ऐसे ढल जाते हैं, जैसे किरदार सिर्फ उनके लिए ही बना है।

छोटे शहर का बड़ा सितारा

अनुपम खेर 7 मार्च 1955 को शिमला में पैदा हुए थे। उनका परिवार मूलतः कश्मीरी पंडित है, जो घाटी से विस्थापित होकर शिमला बस गया था। परिवार की आमदनी बहुत कम थी, उनके पिता वन विभाग में क्लर्क थे और केवल 90 रुपये महीना कमाते थे। इसलिए बचपन बहुत तंगी में बीता। यहां तक कि बेटे की पढ़ाई के लिए उनकी मां को अपने गहने तक बेचने पड़े। किंतु अनुपम खेर ने अभाव में रहते हुए हमेशा बड़े सपने देखे। शिमला में प्रारंभिक शिक्षा हासिल करने के बाद एक्टिंग का जुनून उन्हें चंडीगढ़ ले गया जहां उन्होंने पंजाब यूनिवर्सिटी में थिएटर जॉइन कर लिया। 1974 में वो दिल्ली पहुंचे, जहां राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी) में अभिनय के गुर सीखे। इसके बाद मुंबई की ओर रुख किया। काम की तलाश में मायानगरी की सड़कों पर संघर्ष किया, रेलवे प्लेटफॉर्म पर रातें गुजारीं, निराश भी हुए, एक बार लगा कि शिमला लौटना पड़ेगा, तब एक लंबे संघर्ष के बाद महेश भट्ट की फिल्म 'सारांश' में 60 साल के बूढ़े का किरदार मिला। उस किरदार में अनुपम खेर ने ऐसे जान डाली कि इतिहास बन गया। देखते ही देखते अनुपम खेर एक चमकते सितारे बन गए। अमूमन लोग अपनी कमजोरियों को किस्मत मान लेते हैं, जिससे वो सफल नहीं हो पाते। अनुपम खेर भले ही गरीब परिवार में पैदा हुए, लेकिन कभी पैसे को अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया। बचपन में जीभ पर जख्म लगने के बाद तुतलाने लगे थे, लेकिन प्रैक्टिस करके अपनी इस कमजोरी को दूर किया। 40 साल पहले जब मुंबई फिल्मों में अपनी किस्मत आजमाने पहुंचे, तो हर वक्त अस्त-व्यस्त रहने की वजह से बाल सिर से झड़ने लगे थे। उस दौर में फिल्मों में हेयरस्टाइल का बहुत क्रेज होता था। एक्टर के बाल को उसके बाहरी व्यक्तित्व का अहम हिस्सा माना जाता था। ऐसे में लोग इसे अनुपम की खराब किस्मत कहने लगे थे, लेकिन उन्होंने उसे अपनी खासियत बना लिया। फिल्मों में बिना बिग लगाए ही काम किया। आज उनका गंजा सिर उनके व्यक्तित्व की एक खासियत बन चुका है। यानी उन्होंने अपनी कमजोरी को अपनी ताकत बनाकर जीत हासिल की।

भ्रष्टाचार के विरोध में अन्ना के आंदोलन में अनुपम खेर शामिल हुए थे, महिला सशक्तिकरण की बात हो या फिर कश्मीरी पंडितों की, वो हर मुद्दे पर मुखर दिखते हैं, ऐसे तमाम मुद्दों पर सोशल मीडिया पर अक्सर अपनी बात रखते हैं, कश्मीरी पंडितों के लिए तो उन्होंने आंदोलन भी किया था।

कोई काम छोटा नहीं

सदाबहार अभिनेता अनुपम खेर फिल्म इंडस्ट्री में आए तो हीरो बनने थे, लेकिन पहली ही फिल्म में एक बुजुर्ग का रोल मिला। दूसरा कोई एक्टर होता तो मना कर देता, क्योंकि ऐसे रोल के साथ कोई भी डेब्यू नहीं करना चाहेगा। लेकिन अनुपम खेर ने इसे स्वीकार कर लिया। कुछ दिन बाद पता चला कि उनकी जगह वृद्ध की भूमिका में संजीव कुमार को लिया जा रहा है, तो अनुपम खेर, महेश भट्ट से भिड़ गए। लड़-झगड़ कर अपना रोल वापस लिया। फिल्म की रिलीज के बाद अनुपम खेर हर तरफ छा गए। इसके बाद तो उनको जो भी किरदार मिला, अपनी अदाकारी से उसे असरदार बना दिया। कभी फिल्म 'कर्मा' का डॉ. डैंग, कभी 'राम लखन' का कंजूस बनिया, कभी 'तेजाब' का लालची बाप, कभी 'डर' का चुलबुला भाई, तो कभी 'हम आपके हैं कौन' का दुखी पिता, हर किरदार में ऐसे ढले, जैसे किरदार उनके लिए ही बना हो। उन्होंने जो किया इतिहास बना और बॉलीवुड में दस्तूर बन गया।

परिवार के लिए भरपूर समय

हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में 500 से ज्यादा फिल्में और हजारों थियेटर शो करने वाले अनुपम खेर व्यस्ततम कलाकार हैं। उन्हें अक्सर शूटिंग के लिए कभी मुंबई, तो कभी देश से बाहर रहना पड़ता है, लेकिन इन सबके बावजूद वो अपने परिवार को पूरा समय देते हैं। उनकी मां दुलारी को तो सोशल मीडिया पर हर कोई पहचानता है। वो अक्सर उनके साथ समय बिताते नजर आते हैं। उनके वीडियो लोगों के बीच शेयर करते हैं। 1985 में उन्होंने एक्ट्रेस किरण खेर से शादी की थी। दोनों पहले से शादीशुदा थे, लेकिन साथ काम करते हुए एक-दूसरे को अपना दिल दे बैठे। तलाक लेकर दोनों ने शादी रचा ली। किरण खेर के पहले पति से एक बेटा था, जिसे अनुपम ने अपना नाम दिया, सिकंदर खेर। किरण के लिए चुनाव प्रचार हो या फिर कैंसर की बीमारी से ग्रसित होने के बाद उनकी देखभाल, अनुपम हर फर्ज बखूबी निभा रहे हैं। चार दशक का फिल्मी सफर, असीमित अभिनय क्षमता और शानदार फिल्में अनुपम खेर की सफलता की दास्तान खुद बयान करती हैं। इसके साथ ही वो अमिताभ बच्चन की तरह उन चुनिंदा कलाकारों में से एक हैं, जो समय के साथ खुद को अपडेट करते रहे हैं। सामाजिक सरोकारों के प्रति हमेशा जागरूक रहते हैं। उनकी पत्नी किरन खेर भाजपा से सांसद हैं और अनुपम खेर बड़े एक्टिविस्ट हैं। भ्रष्टाचार के विरोध में अन्ना के आंदोलन में अनुपम खेर शामिल हुए थे। महिला सशक्तिकरण की बात हो या फिर कश्मीरी पंडितों की, वो हर मुद्दे पर मुखर दिखते हैं। ऐसे तमाम मुद्दों पर सोशल मीडिया पर अक्सर अपनी बात रखते हैं। कश्मीरी पंडितों के लिए तो उन्होंने बहुत बड़ा आंदोलन भी किया था। अनुपम खेर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का करीबी और दक्षिणपंथी माना जाता है, लेकिन कोरोना काल में उन्होंने सरकार की आलोचना भी की थी।

1984 लक्की रहा

फिल्मी करियर की शुरुआत में गुजारे कठिन समय को याद करते हुए अनुपम खेर ने लिखा '1984 मेरे लिए एक बनाओ या बिगाड़ो साल था। हर दिन मायूस करने वाला था और समय मेरे धैर्य की परीक्षा ले रहा था।' अनुपम खेर ने आगे लिखा 'मैं अपनी शर्तों पर काम पाकर पहचान बनाने को बेताब था। इंडस्ट्री में कोई संबंध नहीं था। मेरे पास बस मेरी इच्छा शक्ति और जुनून था, अपने सपनों को न छोड़ने की जिद वाला आत्मविश्वास था।' सिर पर बाल न होने की वजह से उन्हें कई बार रिजेक्ट किया गया और वे डिप्रेशन तक में चले गए।' अनुपम खेर लिखते हैं कि वो आम हीरो जैसे लुक वाले नहीं थे, लेकिन चाहते थे कि लोग स्क्रीन पर उनके जुनूनी किरदार को देखें।' सिनेमा की दुनिया में कदम रखने से पहले अनुपम ने एक्टिंग का चार साल का कोर्स किया और ड्रामा स्कूल से गोल्ड मेडलिस्ट थे। अनुपम खेर ने एक इंटरव्यू में कहा था कि 'मैं एक ऐसा मौका पाने के लिए बेताब था, जिससे मैं दुनिया को बता सकूं कि मैं कौन हूं और स्क्रीन पर क्या कर सकता हूं। लोगों को लगता था कि मैं घमंडी हूं, लेकिन मैं जानता था कि मेरे अंदर जो गुस्सा था, वह चुपचाप सभी को यह बताने का इंतजार कर रहा था कि वे गलत थे। मैं इसके लिए महेश भट्ट का शुक्रिया अदा करता हूं।' भट्ट ने मुझे 'सारांश' दी और मुझ पर तब विश्वास किया, जब किसी और ने नहीं किया। उन्होंने मुझे 60 साल के बुजुर्ग का किरदार सौंपा जो अपने युवा बेटे की मौत से गमजदा था। इंटरव्यू में अनुपम खेर कहा था कि 'मैं इस बात को नकार नहीं सकता कि मैं एक छोटे शहर का लड़का हूं। एक निम्न-मध्यम वर्गीय परिवार से चुनौतीपूर्ण अनुभवों से गुजरा हूं, जिन्हें मैं बहुत संजोकर रखता हूं।' मैं आज भी उन भावनाओं को याद करता हूं, जो मैंने एक बच्चे के रूप में महसूस की थी। अनुपम खेर ने कहा कि उनके क्लर्क पिता उनके लिए प्रेरणा हैं। वो एक आम आदमी थे जिनकी आंखों में सपने थे। मैं उनकी आंखों को कभी नहीं भूल सकता। वे तब भी बहुत कुछ बोलती थीं, जब वे एक शब्द भी नहीं बोलते थे। इसलिए जब भी मैं किसी आम आदमी का किरदार निभाता हूं तो मैं स्क्रीन पर उन्हीं का किरदार निभाता हूं। मैं हमेशा उन्हें और आम आदमी को ही स्क्रीन पर पेश करता हूं। मैंने कभी भी अभिनय छोड़ने के बारे में नहीं सोचा, यहां तक कि जब हालात खराब थे, तब भी नहीं सोचा, कभी नहीं सोचूंगा। मैं हार मानने वाला नहीं हूं। कभी नहीं। मैंने अपनी विफलताओं से सीखा है। विफलता आपको सफलता से कहीं ज्यादा सिखाती है। जब हम आप के हैं कौन की शूटिंग के दौरान मेरे चेहरे पर लकवा मार गया था तो लोगों को लगा कि मेरा करियर खत्म हो गया है। मैं इससे उबरा और आगे निकला। मैं हिंदी मीडियम का लड़का था। लेकिन मैंने रॉबर्ट डी नीरो, जेनिफर लॉरेंस, ब्रैडली कूपर, कीरा नाइटली जैसे सफल हॉलीवुड कलाकारों के साथ फिल्में कीं हैं।

- **अनुपम खेर 7 मार्च 1955 को शिमला में पैदा हुए, उनका परिवार मूलतः कश्मीरी पंडित है, जो घाटी से विस्थापित होकर शिमला बस गया था, परिवार की आमदनी बहुत कम थी, उनके पिता वन विभाग में क्लर्क थे और 90 रुपये महीना कमाते थे, इसलिए बचपन बहुत तंगी में बीता।**
- **कभी फिल्म 'कर्मा' का डॉ. डैंग, कभी 'राम लखन' का कंजूस बनिया, कभी 'तेजाब' का लालची बाप, कभी 'डर' का चुलबुला भाई, तो कभी 'हम आपके हैं कौन' का दुखी पिता, हर किरदार में अनुपम खेर ऐसे ढले, जैसे किरदार उनके लिए ही बना हो।**

मासिक राशिफल

पंडित उपेन्द्र कुमार उपाध्याय
9897450817, 9897791284
ज्योतिषाचार्य, आयुर्वेदरत्न, कथावाचस्पति, यज्ञानुष्ठान विशेषज्ञ
अध्यक्ष-श्री शिवशक्ति ज्योतिष पीठ, बदायूं
निवास प्रभातनगर, निकट इंद्राचौक, सिविल लाइंस, बदायूं (यूपी)

मेष-

इस माह सरकारी कामकाज में लाभ होगा, लोक संबंधों में वृद्धि होगी, अतिआक्रामकता से बचिए, वाणी संयम अति आवश्यक है। साहस पराक्रम को बनाए रखिए, यात्राओं से लाभ मिलेगा मित्रों से समागम के अवसर मिलेंगे। शत्रु निराश ही रहेंगे, भागीदारी के कार्यों में सफलता हाथ लगेगी। अविवाहितों को विवाह के प्रस्ताव प्राप्त होने का योग बन रहा है। नौकरीपेशा वर्ग के लिए स्थानांतरण के योग हैं। यदि कोई पुरानी बीमारी है तो आराम मिलेगा।

वृषभः-

इस माह कारोबारी यात्रा लाभकारी रहेगी, मीडिया क्षेत्र में सफलता के योग हैं, क्रोध से काम बिगड़ सकते हैं, पैरों में कष्ट हो सकता है, मध्य माह में सभी परिणाम अनुकूल होने के संकेत मिल रहे हैं। ऋण लेने का मार्ग सुगम होगा। बुद्धि कौशल दिखाने का अवसर प्राप्त हो सकता है। आपके अनुयायियों की संख्या में वृद्धि होगी, पुराने रोग के उभरने की संभावना है। लेन-देन में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। अनिर्णय की स्थिति अभी बनी रहेगी।

मिथुनः-

इस माह आप हंसमुख स्वभाव के कारण समाज में आर्कषण के केंद्र रहेंगे। वाणी संयम रखने की जरूरत है, संपत्ति में वृद्धि के प्रयास सफल रहेंगे, जीवनसाथी से तालमेल बनाने का प्रयास करें। मित्रों के साथ घूमने जा सकते हैं। परिवार में कोई सदस्य बढ़ सकता है। माता की चिंता कम होगी। ननिहाल के किसी व्यक्ति से मुलाकात संभव है। विरोधियों के षडयंत्र बढ़ सकते हैं, सचेत रहें। बरसात में जलीय रोगों के होने की संभावना प्रबल है।

कर्कः-

इस माह आपके भीतर प्रशासनिक क्षमता का विकास होगा, क्रोध से बचने का प्रयास करना होगा, सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि के योग हैं, कार्यक्षेत्र में प्रमोशन की प्रबल संभावना बन रही है। लाभ के प्रचुर अवसर उपलब्ध होंगे। सामाजिक सम्मान बढ़ेगा। मेहनत का फल आपको जरूर मिलेगा धैर्य से काम लें। संचार माध्यम से कोई आनंददायक सूचना मिल सकती है। अनावश्यक क्रोध काम बिगाड़ सकता है। असत्य भाषण से बचने का प्रयास करें।

सिंहः-

इस माह आप अनिर्णय की स्थिति से गुजरेंगे। रक्तदान करने का अवसर मिलता है तो चूक न करें। अचानक कोई धार्मिक यात्रा हो सकती है। भाग्य प्रबल रहेगा, सम्मान में वृद्धि होने के योग हैं। नई नौकरी की तलाश पूरी हो सकती है। सहयोगियों की संख्या में वृद्धि होगी। परिवार के लोगों से मेल मिलाप के अवसर मिलेंगे। अकारण क्रोध को टालें, क्रोध आपका काम बिगाड़ सकता है। वाणी संयम रखना आपके लिए हितकारी होगा।

कन्याः-

इस माह कार्य क्षेत्र में सफलता की प्रबल संभावनाएं हैं, भूमि अथवा भवन से लाभ के योग हैं, लंबी दूरी की यात्रा करनी पड़ सकती है। लाभ के अवसर आपको मिलेंगे। सीने का रोग उभरने की संभावना बन रही है। पड़ोसियों से संबंधों में सुधार होगा। मान सम्मान में भी वद्धि के अवसर मिलेंगे। आलस्य से काम बिगड़ सकते हैं, किसी कारणवश अस्पताल जाने की संभावना बन रही है। यदि रोजगार की तलाश में हैं तो नौकरी मिलेगी।

तुलाः-

इस माह तुला राशि के जातकों को लाभ के प्रचुर अवसर मिलेंगे, कार्य क्षेत्र में सफलता के योग हैं, ललित कलाओं में अचानक रुझान बढ़ेगा, जीवनसाथी से तालमेल बैठाना कठिन होगा। मनपसंद उपहार की प्राप्ति संभव है। मेडिटेशन कर सकते हैं। मनोनुकूल परिणाम मिलने में संदेह रहेगा। घर से दूर यात्रा पर जाना पड़ सकता है। ज्यादा ठंडा न पीएं गले की तकलीफ बढ़ सकती है, अपनी मेहनत के बल पर सब कुछ पा सकेंगे।

वृश्चिकः-

इस माह किसी को पैसा उधार न दें। भाग्य साथ देगा धार्मिक यात्रा होगी, अपने क्रोध पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। ज्यादा व्यसन हानिकारक हो सकता है, वाणी पर नियंत्रण रखना होगा, वरना बनते काम बिगड़ सकते हैं। खरीददारी के लिए बाहर जा सकते हैं। आय के स्रोत बढ़ेंगे आपकी कोई मनोकामना इस माह पूरी हो सकती है। किसी कारणवश अस्पताल जाने की जरूरत पड़ सकती है। झगड़ों से दूर रहने का प्रयास करें।

धनुः-

इस माह अनिर्णय की स्थिति बनी रहेगी। पैर में चोट लगने का भय रहेगा, आप जिस मानसिक बिखराव के दौर से गुजर रहे हैं उससे निकलने में अभी कुछ और समय लग सकता है। स्वाभाविक परिवर्तन आपके लिए आगे चलकर सुखद साबित होगा। बड़े भाइयों से सहयोग मिलेगा। लाभ के अवसर मिलेंगे। पिता से किसी प्रकार की मदद मिल सकती है। व्यापार में सफलता मिलेगी। आलस्य बढ़ सकता है, जो हानिकारक हो सकता है।

मकरः-

इस माह जीवन साथी से तर्क-कुतर्क ठीक नहीं रहेगा, अनिर्णय की स्थिति बनी रहेगी, संभल कर चलिए मुंह के बल गिर सकते हैं। खर्चों से पार पाना मुश्किल होगा। सामाजिक सम्मान बढ़ेगा। किसी धर्म गुरु से मुलाकात होने की सांभावना है। ससुराल के लोगों से मुलाकात हो सकती है। गलत स्रोतों से धन मिलने की संभावना है, सावधानी बरतें। अदालती प्रकरणों में जीत मिलने के योग हैं। नौकरीपेशा लोग इस माह ज्यादा व्यस्त रहेंगे।

कुंभः-

इस माह आपको अपने जीवनसाथी की मदद करनी होगी। विवादित मामलों में जीत मिल सकती है, लाभ के अत्यधिक अवसर उपलब्ध होंगे। बड़े भाई का सहयोग आपके लिए आशीर्वाद साबित होगा। हिम्मत से काम लेने की आवश्यकता है। संचार माध्यम से धन अर्जित करेंगे। धार्मिक यात्रा होगी। ससुराल के लोगों से मुलाकात हो सकती है। अकस्मात धन मिलने से मन प्रफुल्लित होगा। अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरत है।

मीनः-

इस माह ललितकला से जुड़े लोगों को तकनीकी शिक्षा में सफलता मिलने का योग बन रहा है, रुका हुआ धन प्राप्त होने से परिवार में खुशी का माहौल रहेगा। बैंक बैलेंस बढ़ेगा, लेकिन वाणी पर संयम रखना होगा। कारोबारी यात्रा की प्रबल संभावना है। यात्रा में अपने सामान का ख्याल रखें। रोमांटिक मूड बना रहेगा। परिवार के साथ घूमने जा सकते हैं। भाग्य की वजह से कई रुके काम बन सकते हैं। कोई शत्रु अनायास ही सामने आ सकता है।